सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 63, नई दिल्ली, मंगलवार 13 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है... पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है...!!!

03 भीषण गर्मी के लिए रहें तैयार, अगले 3 दिन में तापमान होगा 42 डिग्री पार
06 प्रसिद्ध महिला गणितज्ञ जिन्होंने दुनिया को बदल दिया है
08 संस्कारशाला – परिवार संग एक घंटा, सुबह और शाम का संकल्प

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :- कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :- प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,

मुख्य अतिथि ₹श्री शंभू सिंह₹, आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय

आमंत्रित विशेष अतिथि

1. श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2. श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3. श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4. साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5. श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6. श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7. श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8. श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9. पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10. श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11. श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
12. डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13. श्री हेतराम
14. श्री अशोक
15. श्री राहुल गुप्ता
16. श्री ए ई कौशिक
17. श्री अशोक सक्सेना
18. श्री अशोक नारंग
19. श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20. श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

'परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1. सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2. दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
4. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5. "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1. वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

- संजय कुमार बाटला
संपादक

राजधानी दिल्ली में ई-रिक्शा चालकों पर फिर से होगा एक्शन, ट्रैफिक पुलिस और परिवहन विभाग हुए सख्त

संजय बाटला

दिल्ली में ई-रिक्शा चालकों द्वारा यातायात नियमों के उल्लंघन और जाम की समस्या को देखते हुए यातायात पुलिस और परिवहन विभाग ने संयुक्त कार्रवाई करने का फैसला किया है। बिना पंजीकरण वाले 15000 ई-रिक्शा जब्त किए गए थे और अब फिर से उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्ती बरती जाएगी क्योंकि ई-रिक्शा की वजह से कई जगहों पर जाम लगता है।

नई दिल्ली। राजधानी में बेतरतीब तरीके से ई-रिक्शा चलाकर यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों के खिलाफ यातायात पुलिस ने परिवहन विभाग के साथ मिलकर फिर से कार्रवाई तेज करने का निर्णय किया है। राजधानी में जाम लगने का एक बड़ा कारण ई-रिक्शा चालकों की लापरवाही को माना जाता है। राजधानी के लोगों को जाम की समस्या से काफी हद तक निजात दिलाने के लिए दिल्ली पुलिस, परिवहन विभाग व अन्य एजेंसियों द्वारा किए जा रहे सर्वे में ई रिक्शा चालकों द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन किए जाने की बात भी सामने आई है।

ई रिक्शा खड़ी करने से कई जगहों पर लगता है जाम

राजधानी के सभी प्रमुख व छोटे बाजारों, मेट्रो स्टेशनों, रेलवे स्टेशनों, बस अड्डे, पर्यटन स्थलों, शिक्षण संस्थानों, धार्मिक स्थलों आदि के पास बेतरतीब तरीके से ई रिक्शा खड़ी करने से उन जगहों पर जाम लग जाता है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए पुलिस कार्रवाई की पर विचार कर रही है।

एक पुलिस अधिकारी का कहना है कि पिछले साल दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले उपराज्यपाल वीके सक्सेना के निर्देश पर यातायात पुलिस ने परिवहन विभाग के साथ मिलकर यातायात नियम तोड़ने वाले ई रिक्शा चालकों के खिलाफ जमकर कार्रवाई की थी। हर माह करीब पांच हजार ई रिक्शा को पकड़ कर उन्हें तोड़ने का टारगेट दिया गया था।

बिना पंजीकरण वाले करीब 15 हजार ई रिक्शा को जब्त किया

तीन माह तक चले अभियान के तहत दोनों विभागों ने मिलकर बिना पंजीकरण वाले करीब 15 हजार ई रिक्शा को जब्त किया था। बाद में उक्त ई रिक्शा को परिवहन विभाग ने अपने पिट में लाकर बुलडोजर चलवाकर नष्ट कर दिया था। चुनाव खत्म होने के बाद अभियान धीमा पड़ गया। लेकिन, अब दोबारा से दोनों विभागों को मिलकर कार्रवाई तेज करने के निर्देश दिए गए हैं।

ई रिक्शा को भी परिवहन विभाग में पंजीकरण कराना आवश्यक

पुलिस अधिकारी का कहना है कि राजधानी में ई रिक्शा को भी परिवहन विभाग में पंजीकरण कराना आवश्यक होता है। बिना पंजीकरण कराए ई रिक्शा चलाने पर यातायात पुलिस उक्त ई रिक्शा को जब्त कर लेती है। इस तरह के मामले में ई रिक्शा को कोर्ट आदि से छोड़ने का कोई प्रविधान नहीं है।

निर्धारित रूट के आधार पर मिलता है परमिट

राजधानी में ई रिक्शा का रूट निर्धारित है। उसी के अनुसार परमिट मिलता है। लेकिन, बड़ी संख्या में ई रिक्शा चालक नियम तोड़कर दूसरे इलाके में चले जाते हैं। साथ ही चालक कहीं भी ई रिक्शा को पार्क कर देता है जिससे इन दोनों मामलों के उल्लंघन के सबसे अधिक चालान किए जाते हैं। पुलिस अधिकारी का कहना है कि तेज रफ्तार में चलाने पर ई रिक्शा की टक्कर से हर माह राजधानी में चार से पांच राहगीरों की मौत हो जाती है।

यातायात नियमों के उल्लंघन

(एक जनवरी से 20 मार्च तक के आंकड़ें:-)

सीट पर अतिरिक्त यात्री- 1456
प्रवेश निषेध- 11756
बिना लाइसेंस के चलाने- 5124
अनधिकृत व्यक्ति को ई रिक्शा चलाने की अनुमति देने- 2696
वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग- 89
समय प्रतिबंध का उल्लंघन- 640
बिना बीमा के चलाने- 1536
यातायात के प्रवाह के विपरीत ई रिक्शा चलाने- 1084
फैंसी नंबर प्लेट- 216
प्रेशर हार्न बजाने- 3
लाल बत्ती जंप- 520
बिना फिटनेस- 375

यात्रियों की सुविधा के लिए शुरू हुईं इलेक्ट्रिक मिनी बसें, डीटीसी से क्या हुई गलती ? लोग हुए परेशान

दिल्ली में यात्रियों की सुविधा के लिए शुरू की गई इलेक्ट्रिक मिनी बसें जानकारी के अभाव में खाली दौड़ रही हैं। रूट और समय सारिणी की जानकारी बस स्टॉप और क्यू शेल्टर पर उपलब्ध नहीं है। डीटीसी और परिवहन विभाग ने रूट की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध कराई है लेकिन प्रचार की कमी के कारण यात्रियों को बसों के बारे में पता नहीं चल पा रहा है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर शुरू की गई नई एसी इलेक्ट्रिक मिनी बसें अब अव्यवस्था का शिकार हो रही हैं।

इसी महीने बसों को सड़क पर उतारा

सरकार ने 'देवी योजना' के तहत 2 मई को इन बसों को दिल्ली की सड़कों पर उतारा था, लेकिन अभी तक न तो बस स्टैंड पर और न ही बस क्यू शेल्टर पर इनकी समय सारिणी और रूट से जुड़ी कोई जानकारी दी गई है। नतीजतन, ये बसें दिनभर दिल्ली की सड़कों पर खाली दौड़ रही हैं। जिससे योजना की सफलता पर सवाल उठ रहे हैं।

इन बसों को सड़क पर उतारने से पहले सरकार ने दावा किया था कि ये मिनी बसें रिहायशी इलाकों, कॉलेजों, अस्पतालों और मेट्रो स्टेशनों को जोड़ेंगी और यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाएंगी।

लेकिन हकीकत यह है कि आम नागरिक, खासकर स्कूल और कॉलेज के छात्र, कामकाजी महिलाएं और वरिष्ठ नागरिक अभी भी यह नहीं जान पाते हैं कि कौन सी बस किस दिशा में जाती है।

परिवहन विभाग के सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, आम जनता को मिनी इलेक्ट्रिक बसों के रूटों की जानकारी देने और उन्हें इस नई बस सेवा से अवगत कराने के लिए डीटीसी और परिवहन विभाग ने अपने स्तर पर पहल शुरू कर दी है।

यात्री इस एप पर ले सकते हैं जानकारी

डीटीसी ने अपनी वेबसाइट के सर्विसेज सेक्शन में मिनी बसों के पूरे रूट और टाइमिंग की विस्तृत जानकारी अपलोड कर दी है। इसके अलावा यात्री परिवहन विभाग के वन दिल्ली एप से भी इन बसों के बारे में जानकारी ले सकते हैं।

बस क्यू शेल्टर पर इन बसों के नंबर भी अंकित किए जाएंगे। फिलहाल डीटीसी 27 रूटों पर 145 बसें और दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी मॉडल ट्रांजिट सिस्टम (डीआईएमटीएस) 20 रूटों पर 150 बसें चला रहा है।

छात्रों की प्रतिक्रिया

मुझे नई मिनी बस के बारे में कोई जानकारी नहीं है। क्योंकि अगर शहर में ऐसी बस चल रही होती तो बस क्यू शेल्टर पर इन बसों के नंबर लिखे होते। ऑनलाइन एप पर इनके रूट की जानकारी होती। लेकिन, हैरानी की बात है कि यात्रियों की सुविधा के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही बसों के बारे में यात्रियों को जानकारी नहीं दी जा रही है।

- अभिषेक मिश्रा, छात्र।

सरकार ने अच्छी योजना शुरू की है, लेकिन बिना प्रचार और जानकारी के इसका कोई फायदा नहीं है। मैं दिल्ली में काम करता हूं। लेकिन यात्रियों को इसकी जानकारी नहीं है।

- आंचल माथुर, छात्रा।

पश्चिम बंगाल के इन बीचेज पर पार्टनर संग बिताएं रोमांटिक पल, यादगार होगा हर लम्हा

पश्चिम बंगाल देश का एक ऐसा राज्य है, जो शानदार और रोमांटिक बीचेज के लिए भी जाना जाता है। ऐसे में आज हम आपको उन रोमांटिक बीचेज के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अपने पार्टनर के साथ हसीन और सुकून के पल बिता सकते हैं।

घूमने के शौकीन लोग अक्सर घूमने का प्लान बनाते हैं। वहीं कपल्स घूमने के लिए किसी ऐसी जगह की तलाश करते हैं, जहां पर वह अपने पार्टनर के साथ रोमांटिक पल बिता सकें। जब कपल्स रोमांटिक और सुकून भरा पल बिताने के लिए किसी जगह की तलाश करते हैं, तो उनकी लिस्ट में मनमोहक और खूबसूरत बीचेज भी शामिल रहता है। पश्चिम बंगाल देश का एक ऐसा राज्य है, जो शानदार और रोमांटिक बीचेज के लिए भी जाना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उन रोमांटिक बीचेज के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आप अपने पार्टनर के साथ हसीन और सुकून के पल बिता सकते हैं।

दीघा बीच

पश्चिम बंगाल में स्थित सबसे रोमांटिक और खूबसूरत बीच घूमने के लिए कई कपल्स सबसे पहले दीघा बीच पहुंचते हैं। यह बीच पूरे पश्चिम बंगाल का भी मुख्य आकर्षण का केंद्र माना जाता है। यहां पर देश के हर कोने से पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में स्थित दीघा बीच अपनी कई चीजों के कारण रोमांटिक बन जाता है। यहां के बीचेज से सूर्योदय और सूर्यास्त के लुभावने दृश्यों के अलावा सुनहरी रेत के लिए भी फेमस है। दीघा बीच कैसुरीना के बागानों से भी घिरा है। इसलिए इस बीच को एक परफेक्ट रोमांटिक प्लेस माना जाता है।

ताजपुर बीच

पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले में स्थित ताजपुर बीच भी काफी फेमस है। यहां पर सिर्फ स्थानीय पर्यटक नहीं बल्कि अन्य कई राज्यों से भी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। यह अपने शांत और शुद्ध वातावरण के लिए भी जाना जाता है।

ताजपुर बीच अपनी खूबसूरती से कपल्स को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर कई कपल्स सूर्योदय और सूर्योस्त के दृश्यों को देखते हुए हसीन पल बिताने के लिए पहुंचते हैं। यहां पर एक तरफ बंगाल की खाड़ी है, तो दूसरी ओर हरियाली है। यहां पर कपल्स वाटर स्पोर्ट्स का लुत्फ उठा सकते हैं।

शंकरपुर बीच

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से करीब 176 किमी और दीघा से करीब 14 किमी दूर शंकरपुर बीच स्थित है। यह राज्य का सबसे लोकप्रिय और खूबसूरत बीचेज में से एक है। यह बीच भी राज्य के प्रमुख आकर्षण का केंद्र है।

शंकरपुर बीच में हर दिन दर्जन से ज्यादा पर्टयक को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर कपल्स भी घूमने के लिए पहुंचते हैं। वैलेंटाइन डे के मौके पर कई कपल्स हसीन शामें बिताने के लिए पहुंचते हैं। आप इस बीच से बंगाल की खाड़ी की हसीन लहरों को अपने कैमरे में कैद कर सकते हैं। आप यहां पर अपने पार्टनर के साथ वाटर स्पोर्ट्स का लुत्फ उठा सकते हैं।

उदयपुर बीच

पश्चिम बंगाल में उदयपुर बीच पर सबसे अधिक संख्या में पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। इस बीच को पश्चिम बंगाल के सबसे पुराने और खूबसूरत समुद्री तटों में से एक माना जाता है।

यह बीच सिर्फ पश्चिम बंगाल में ही नहीं बल्कि ओडिशा के लिए भी आकर्षण का केंद्र माना जाता है। क्योंकि यह ओडिशा की सीमा से कुछ दूरी पर है। यहां पर दर्जनों की संख्या में कपल्स रोमांटिक पल बिताने के लिए पहुंचते हैं। उदयपुर बीच से सनसेट और सनराइज का दृश्य देखने लायक होता है।

इन जगहों पर घूमें

इसके अलावा पश्चिम बंगाल में कई अन्य बीचेज घूम सकते हैं। यहां पर कई कपल्स पार्टनर के साथ रोमांटिक पल बिताने के लिए पहुंचते हैं। जैसे- पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले में स्थित मंदारमणि बीच, बक्खाली बीच और डायमंड हार्बर बीच एक्सप्लोर कर सकते हैं।

सैमसंग का ये फोन कल होगा लॉन्च, जानें कीमत और सभी फीचर्स

सैमसंग कल यानी 13 मई को अपना सबसे पतला फोन लॉन्च करने जा रहा है। कंपनी इसे गैलेक्सी S25 एज के नाम से पेश करने के लिए पूरी तरह तैयार है। स्मार्टफोन ऑफिशियल तौर पर एक वर्चअल अनकैप्ड इवेंट में पेश किया जाएगा, जो भारतीय समयानुसार सुबह 5.30 बजे से शुरू होगा। सैमसंग भी अपने इस S-सीरीज के डिवाइस को पेश करने के लिए काफी एक्साइटेड दिख रहा है।

गैलेक्सी एस 25 एज ने अपने पतले डिजाइन से पहले ही सभी का ध्यान अपनी तरफ खींच रहा है। लीक्स में कहा जा रहा है कि, डिवाइस की मोटाई सिर्फ 5.85 मिमी होने वाले है और इसका वजन लगभग 163 ग्राम हो सकता है, जो इस मार्केट में मौजूद सबसेपतले और हल्के प्रीमियम स्मार्टफोन में से एक बना देगा।

सैमसंग गैलेक्सी एस25 एज सबसे पहले दक्षिण कोरिया और चीन जैसे मार्केट में उपलब्ध होगा। इसके बाद आने वाले हफ्तों में कंपनी इसे बाकी देशों में भी ला सकती है। भारत में इस डिवाइस की कीमत 99,999 रुपये से 1 लाख 30 हजार रुपये के बीच होने की उम्मीद है जो इसे प्राइस के मामले में गैलेक्सी ए25 प्लस और गैलेक्सी एस25 अल्ट्रा के बीच लाकर रख देता है।

वहीं इस फोन की खूबियों की बात करें तो, गैलेक्सी एस25 एज की सबसे बड़ी खासियत इसका अल्ट्रा-थिन डिजाइन होने वाला है। फोन में 120Hz रिफ्रेश रेट के साथ 6.7 इंच का AMOLED डिस्प्ले देखने को मिल सकता है। डिस्प्ले की प्रोटेक्शन के लिए सैमसंग कॉर्निंग के नए गोरिल्ला ग्लास सिरेमिक 2 का इस्तेमाल कर सकता है।

इस बीच फोन के पिछले हिस्से को गोरिल्ला ग्लास विक्टस 2 से प्रोटेक्स किया जाएगा। जबकि फ्रेम को ज्यादा ड्यूरेबल और प्रीमियम बनाने के लिए इसमें टाइटेनियम फ्रेम दिया जा सकता है। डिवाइस तीन कलर ऑप्शन टाइटेनियम ब्लू, टाइटेनियम सिल्वर और टाइटेनियम ब्लैक में आ सकता है।

वहीं इसका कैमरा गैलेक्सी एस25 एज में भी दमदार 200-मेगापिक्सल केप्राइमरी रियर कैमरा देखने को मिलने वाला है। ये वही सेंसर है जो गैलेक्सी एस25 अल्ट्रा में इस्तेमाल किया गया है। डिवाइस में 12-मेगापिक्सल का अल्ट्रा वाइड एंगल कैमरा भी होने की भी उम्मीद है। सेल्फी लवर्स के लिए डिवाइस में 12-मेगापिक्सल का कैमरा होने की उम्मीद है।

तीन समय संध्या उपासना करने का विधान क्यों?

हिन्दू सनातन धर्म कर्मकांड और नित्यकर्म में संध्या उपासना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, इसलिए हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि त्रिकाल संध्या उपासना करते थे। भगवान श्रीराम और वसिष्ठ भी त्रिकाल संध्या करते थे। जीवन को तेजस्वी, सफल और उन्नत बनाने के लिए और वांछित फल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को त्रिकाल संध्या अवश्य करनी चाहिए। भगवान्मनु ने कहा है।

ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः। प्रज्ञा यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च ॥

- मनुस्मृति 4/94

अर्थात् बहुत काल तक संध्योपासना करने के कारण ही ऋषियों ने दीर्घायु, बुद्धि, यश, कीर्ति (ख्याति) और ब्रह्मतेज की प्राप्ति की थी।

कूर्मपुराण अध्याय 18 श्लोक 26 से 31 में संध्या उपासना का महत्त्व इस प्रकार से बताया गया है-जो संध्या है वही जगत को उत्पन्न करने वाली है, मायातीत है, निष्कल है और तीन तत्त्वों से उत्पन्न होने बाली ईश्वर की पराशक्ति है। विद्वान ब्राह्मण को पूर्वाभिमुख होकर सूर्यमंडल में प्रतिष्ठित सावित्री (गायत्री मंत्र) का ध्यान-पूर्वक जप करते हुए संध्योपासना करनी चाहिए। संध्या से हीन द्विज व्यक्ति नित्य अपवित्र और सभी कर्मों को करने के अयोग्य होता है। वह जो भी कार्य करता है, उसका कोई फल उसे प्राप्त नहीं होता। पूर्वकाल में वेद के पारंगत शांत ब्राह्मणों ने अनन्य मन से संध्योपासना करके परमगति को प्राप्त किया था। उस उपासना से योगविग्रह परमदेव की उपासना हो जाती है।

त्रिकाल संध्या यानी प्रातःकाल (सूर्योदय से पूर्व), मध्याह्न तथा सायंकाल तीनों कालों में की जाती है और प्रत्येक संध्या उत्तम, मध्यम और अधम प्रकार की मानी जाती है।

देवीभागवत 11/16/4-5 में कहा गया है-'प्रातः संध्या तारे दीखते हों उस समय करने पर उत्तम, तारे दीखने बंद होने पर मध्यम और सूर्य निकलने पर अधम होती है और सायं संध्या सूर्य रहते तक उत्तम. सूर्यास्त के समय मध्यम और तारे दीखने के बाद कनिष्ठा होती है।'

तीनों काल की संध्या करते समय मुनि विश्वामित्र के मतानुसार पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिए। सांयकाल में पश्चिम की ओर मुख करके बैठना चाहिए।

प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व समय, दोपहर बारह बजे और सूर्यास्त के समय के पहले और बाद के 10 मिनट का समय संधिकाल कहलाता है। इस समय किया हुआ जप, प्राणायाम, ध्यान, भजन बहुत लाभदायक पुण्यदायी होता है। अधिक हितकारी और उन्नति करने वाला होता है, क्योंकि इस समय हमारी सब नाड़ियों का मूल आधार सुषुम्ना नाड़ी के द्वार खुले होते हैं। ऐसे में छुपी हुई शक्तियां जागृत होने लगती हैं, जीवनी शक्ति और कुंडलिनी शक्ति के जागरण में सहयोग मिलता है। इसलिए अपनी नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए नियमित रूप से त्रिकाल संध्या करनी चाहिए।

चेचक रोग और उपचार

चेचक के रोग को घरेलू भाषा में 'माता' या 'शीतला' भी कहते हैं। यह रोग अक्सर उन बच्चों को होता है, जिनके शरीर में शुरू से ही गर्मी अधिक होती है तथा उनकी उम्र दो से चार वर्ष तक की होती है। कभी-कभी यह रोग औरतों और बड़ों में भी हो जाता है। इस रोग के फैलने का कारण वायरस (जीवाणु) हैं। इस रोग के जीवाणु थूक, मलमूत्र और नाखूनों आदि में पाये जाते हैं। सूक्ष्म छोटे-छोटे जीवाणु हवा में घुल जाते हैं और श्वसन के समय ये जीवाणु शरीर के अन्दर प्रवेश कर जाते हैं।

इस रोग के हो जाने पर शरीर का तापमान बढ़ जाता है। दो-तीन दिन के बाद बुखार तेज होने लगता है। शरीर पर लाल रंग के दाने निकलने लगते हैं। दानों में पानी जैसा मवाद पैदा हो जाता है। सात दिनों में दाने पकने लगते हैं जो कि धीरे-धीरे सूख जाते हैं। दानों पर खुरण्ड (पपड़ी) सी जम जाती है। कुछ दिनों के बाद खुरण्ड तो निकल जाती है, लेकिन उसके दाग़ रह जाते हैं।

सावधानियाँ

चेचक के रोग से ग्रस्त रोगी के घर वालों को खाना बनाते समय सब्जी आदि में छोंका नहीं लगाना चाहिए।

दरवाज़े पर और रोगी के बिस्तर के चारो और नीम के पत्तों की टहनी लटका देनी चाहिए।

ध्यान रखें कि बच्चा शरीर पर आए छालों या फोड़े को खरोंचे नहीं, वरना ये व फैल सकते है व दर्द भी हो सकता है। बच्चे के नाखून छोटे रखें व फोड़ों को ढंके नहीं।

रोगी के चारो तरफ साफ़ सफाई का विशेष ध्यान रखे।

रोगी को जब भी नहलाये, उस पानी में नीम की पत्तियों को उबाले।

बच्चे को अन्य लोगों से दूर रखें।

घरेलु उपाय

1.पीपल की 3 या 5 पत्तिया ले, पत्तियों की डंडी तोड़ दे, इन पत्तो को १ गिलास पानी में उबाले और एक चौथाई रहने पर इस को गुनगुना ही रोगी को पिलाये। ये प्रयोग 3 से 5 दिन तक हर रोज़ सुबह और शाम को करे। इस से चेचक, टाईफ़ाएड, और खसरा और आम बुखार में बेहद लाभ मिलता हैं।

2.तुलसी की 12-15 पत्तियों को 3 या 4 काली मिर्च के साथ पीसकर गुनगुने पानी के साथ दिन में 2 बार पिलाये।

3, जलन होने पर फोड़ों पर चन्दन लाल/पीला कोई भी लगा सकते है।

घर पर सुपर सॉफ्ट और फ्लफी भटूरे बनाने के लिए फॉलो करें ये टिप्स

जब भी आप भटूरे का आटा लगाएं, तो उसके लिए गर्म पानी का इस्तेमाल करें। गर्म पानी यीस्ट या बेकिंग सोडा और बेकिंग पाउडर को सक्रिय करता है। जिससे भटूरे बहुत नरम व फूले हुए बनते हैं। ध्यान रखें कि पानी को गुनगुना रखें, न ज्यादा गर्म और न ज्यादा ठंडा।

छुट्टी का दिन हो तो कुछ अच्छा खाने का मन कर ही आता है। अमूमन यह देखने में आता है कि लोग छुट्टी के दिन अपनी पसंदीदा डिश जैसे छोटे भटूरे आदि खाना काफी पसंद करते हैं। यूं तो लोग इसे बाजार से मंगवाकर खाते हैं, लेकिन इन्हें घर पर बनाना भी काफी आसान है। हालांकि, कई लोगों की यह शिकायत होती है कि जब वे घर पर भटूरे बनाते हैं, तो वे उतने सॉफ्ट और फ्लफी नहीं बन पाते हैं। ऐसे में उन्हें समझ ही नहीं आता है कि आखिरकार गड़बड़ कहां हो रही है। हो सकता है कि आपके साथ भी अक्सर यह समस्या होती हो। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसे ही कुछ छोटे-छोटे टिप्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें फॉलो करके आप घर पर सॉफ्ट और फ्लफी भटूरे बेहद ही आसानी से बना सकते हैं-

आटा को जरूर करने दें रेस्ट

एक बार जब आप भटूरे का आटा लगा लेते हैं तो उसे रेस्ट जरूर करने दें। आटे को आराम देने से ग्लूटेन को आराम मिलता है, जिससे आटा मुलायम बनता है। जब आटा आराम करता है, तो यीस्ट या बेकिंग सोडा को काम करने का समय मिलता है, जिससे भटूरे में फूलापन आता है। इसके लिए आप आटा गूंधने के बाद, इसे गीले कपड़े या प्लास्टिक रैप से ढक लें ताकि यह सूखा न हो। इसे कमरे के तापमान पर कम से कम 1 से 2 घंटे के लिए आराम करने दें।

गूंधने के लिए गर्म पानी का उपयोग करें

जब भी आप भटूरे का आटा लगाएं, तो उसके लिए गर्म पानी का इस्तेमाल करें। गर्म पानी यीस्ट या बेकिंग सोडा और बेकिंग पाउडर को सक्रिय करता है। जिससे भटूरे बहुत नरम व फूले हुए बनते हैं। ध्यान रखें कि पानी को गुनगुना रखें, न ज्यादा गर्म और न ज्यादा ठंडा। बहुत गर्म पानी यीस्ट को मार सकता है और ठंडा पानी आटे को अच्छे से फुलाने में कठिनाई पैदा करता है। गूंधते समय धीरे-धीरे गुनगुना पानी आटे में डालें।

दही का उपयोग करें

भटूरे का आटा लगाते समय दही का इस्तेमाल करना भी काफी अच्छा माना जाता है। दही आटे को मुलायम बनाने और नमी देने का काम करता है। इससे आटा मुलायम होता है और भटूरे में अच्छा फूलापन आता है। इसलिए आटा लगाते समय उसमें एक टेबलस्पून दही और घी डालें। दही न केवल नमी देता है, बल्कि आटे को हल्का और मुलायम भी बनाती है।

राजस्थानी लहरिया साड़ियों में मिलेगा ट्रेडिशनल लुक, वार्डरोब में जरूर करें शामिल

वेडिंग फंक्शन में पहनने के लिए आप राजस्थानी लहरिया प्रिंट वाली साड़ी को खरीद सकती हैं। यह आपको पारंपरिक लुक देने का काम करती है। इस साड़ी को पहनने के बाद आपका लुक काफी अलग नजर आएगा।

भारतीय महिलाओं का सबसे पसंदीदा और खास पहनावा साड़ी होता है। इसको आप हर मौके पर कैरी कर सकती हैं। वहीं आजकल वेस्टर्न कल्चर में भी साड़ी को काफी ज्यादा पसंद किया जा रहा है। साड़ी में कई तरह के डिजाइन और पैटर्न देखने को मिल जाते हैं। जिसको आप अपनी पसंद के हिसाब से सेलेक्ट कर सकती हैं। साड़ी में महिला का लुक परफेक्ट आता है। अगर आपको भी साड़ी पहनना पसंद है, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपके लिए कुछ न्यू डिजाइन वाली साड़ी लेकर आए है। जिनको आप हर मौके पर पहन सकती हैं।

वेडिंग फंक्शन में पहनने के लिए आप राजस्थानी लहरिया प्रिंट वाली साड़ी को खरीद सकती हैं। यह आपको पारंपरिक लुक देने का काम करती है। इस साड़ी को पहनने के बाद आपका लुक काफी अलग नजर आएगा। राजस्थानी लहरिया साड़ी रंग-बिरंगे पैटर्न और पारंपरिक आकर्षण के लिए जानी जाती हैं।

जॉर्जेट राजस्थानी लहरिया साड़ी

अगर आप सिंपल और एलिगेंट लुक पाना चाहती हैं, तो आपको जॉर्जेट राजस्थानी लहरिया साड़ी पहननी चाहिए। छोटे फंक्शन के लिए यह साड़ी परफेक्ट है। पर्पल कलर की लहरिया साड़ी का बॉर्डर गोल्डन रखा गया है। वहीं इस तरह की साड़ी के साथ हैवी ब्लाउज काफी अच्छा लगेगा। इसके साथ आप गोल्डन ज्वेलरी और बन हेयर स्टाइल से अपना लुक कंप्लीट कर सकती हैं।

गोटा वर्क राजस्थानी लहरिया साड़ी

ज्यादातर राजस्थानी लहरिया साड़ी में आपको गोटा वर्क जरूर देखने को मिलता है। यह साड़ी में रॉयल टच देने का काम करता है। वेडिंग फंक्शन के अलावा त्योहारों पर भी ऐसी साड़ियां खूब पहनी जाती हैं। पिंक कलर की इस साड़ी का बॉर्जर गोटा वर्क से कवर है। इस तरह की साड़ी के साथ प्लेन स्लीवलेस ब्लाउज कैरी कर आप क्लासी लुक पा सकती हैं। लहरिया साड़ी के साथ आप सिल्वर पेंडेंट नेकलेस और मैचिंग की झुमकी जरूर पहनें।

जरी वर्क लहरिया साड़ी

वेडिंग फंक्शन में अगर आप ट्रेडिशनल अंदाज में नजर आना चाहती हैं, तो आपको अपनी वार्डरोब में जरी वर्क राजस्थानी लहरिया प्रिंट साड़ी को जरूर शामिल करना चाहिए। यह साड़ी आपके लुक में चार चांद लगाने का काम करेगी। इस येलो और रेड कॉम्बिनेशन वाली साड़ी के बॉर्डर पर और बीच-बीच में जरी वर्क किया गया है। इस साड़ी के साथ आप वन फोर्थ स्लीव्स का प्लेन ब्लाउज पहन सकती हैं। वहीं स्लीक का नेकलेस और लूज बन आपका लुक कंप्लीट करेगा।

'निद्रा' दो तरह की होती है

(१) आवश्यक निद्रा—जो निद्रा शरीर के स्वास्थ्य के लिये नियमित रूप से ली जाती है और जिससे शरीर में हलकापन आता है, वृत्तियाँ स्वच्छ होती हैं, बुद्धि को विश्राम मिलता है, ऐसी आवश्यक निद्रा त्याज्य और दोषी नहीं है। भगवान्ने भी ऐसी नियमित निद्रा को दोषी नहीं माना है, प्रत्युत योग-साधन में सहायक माना है।

(२) अनावश्यक निद्रा—जो निद्रा निद्रा के लिये ली जाती है, जिससे बेहोशी ज्यादा आती है, नींद से उठने पर भी शरीर भारी रहता है, वृत्तियाँ भारी रहती हैं, पुरानी स्मृति नहीं होती, ऐसी अनावश्यक निद्रा त्याज्य और दोषी है। इस अनावश्यक निद्रा को भगवान्ने भी त्याज्य बताया है।

इस तरह तमोगुण प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा मनुष्य को बाँध देता है अर्थात उसकी सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति नहीं होने देता।

बुराई से बचो

बुराई को किसी प्रकार किसी अंश में भी कहीं भी स्थान मत दो। कभी मन में यह अभिमान मत करो कि मैं साधना में बहुत आगे बढ़ा हूँ, जरा-सी बुराई मेरी क्या कर सकेगी। बुराई पर—पाप पर कभी दया मत करो। अंकुर दिखते ही काट डालो—जड़ से उखाड़ डालो। बुराई आती है पहले बीज रूप में, फिर बड़ा वृक्ष बनकर चारों ओर फैल जाती है, सब तरफ छा जाती है बेल की तरह। बुराई पर कभी विश्वास न करो।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का निर्देश, दिल्ली में सफाई अभियान दिखावटी नहीं बल्कि असरदार हो

दिल्ली नगर निगम (MCD) सभी जोन में रात्रिकालीन सफाई अभियान चला रही है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने नालों से गाद निकालने और जलभराव रोकने के लिए पंप लगाने के निर्देश दिए हैं। इसके अतिरिक्त फ्लाईओवर और अंडरपास परियोजनाओं को समय सीमा के भीतर पूरा करने का निर्देश दिया गया है।

नई दिल्ली: एमसीडी के सभी जोन में रात्रिकालीन सफाई अभियान जारी है। सभी 12 क्षेत्रों के 312 बाजार क्षेत्रों में रात्रिकालीन सफाई अभियान चलाया जा रहा है।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग को निर्देश दिया कि नालों से गाद निकालने का कार्य जल्द पूरा किया जाए। कहा, रेगुलेटरों की मरम्मत, डार्क स्पाट्स पर लाइट लगाने और जलभराव रोकने के लिए पंपों लगाने का काम समय रहते पूरा किया जाए।

इसके साथ ही नगर निगम से मेगा सफाई अभियान की प्रगति की प्रतिदिन रिपोर्ट प्रस्तुत करने का भी निदेश दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि सफाई अभियान सिर्फ प्रतीकात्मक न रह जाए, बल्कि जमीन पर ठोस और प्रभावी कार्य भी हो।

लोनी चौक अंडरपास के काम को तेजी से पूरा करने के दिए निर्देश

मुख्यमंत्री ने PWD के तहत फ्लाईओवर से जुड़ीं दो प्रमुख परियोजनाओं की प्रगति रिपोर्ट देखी और कोंडली ब्रिज पर गाजीपुर ड्रेन और हिंडन नहर के ऊपर स्लिप रोड ब्रिज के निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया।

इसके अतिरिक्त नंद नगरी और गगन सिनेमा जंक्शन पर फ्लाईओवर, लोनी चौक पर अंडरपास, तथा मंगल पांडे मार्ग पर संबंधित विकास कार्यों को भी निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

प्रधानमंत्री का संबोधन राष्ट्र के आत्मबल की गूंज: रेखा गुप्ता

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री ने आतंकवाद के प्रति भारत की अडिग और स्पष्ट नीति को समूचे विश्व के सामने दृढ़ता के साथ रखा है। यह संबोधन केवल एक वक्तव्य नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतवासियों की सामूहिक भावना, आत्मविश्वास और राष्ट्र के आत्मबल की गूंज है।

प्रधानमंत्री मोदी का यह स्पष्ट संदेश कि अब पाकिस्तान से कोई बातचीत तभी होगी, जब विषय आतंकवाद और पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) होगा।

कहा कि भारतीय सेना ने आपरेशन सिंदूर के माध्यम से न केवल एक निर्णायक कदम उठाया, बल्कि इस संघर्ष की रेखा को फिर से परिभाषित कर दिया है कि अब भारत पर यदि कोई आतंकी हमला होगा, तो हम उसका जवाब अपने तरीके से अपनी शर्तों में देंगे।

एनडीएमसी क्षेत्र में 24 घंटे पानी की आपूर्ति की तैयारी, विनय मार्ग से पायलट प्रोजेक्ट की शुरुआत

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (NDMC) विनय मार्ग से 24 घंटे जलापूर्ति शुरू करने जा रही है। इस परियोजना के तहत नई पाइपलाइनें डाली जाएंगी और पंप लगाए जाएंगे। पांच महीने में यह परियोजना पूरी होने की उम्मीद है जिसके सफल होने पर इसे पूरी लुटियंस दिल्ली में लागू किया जाएगा।

नई दिल्ली: सातों दिन 24 घंटे पानी की आपूर्ति देने के लिए नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (NDMC) बड़ा कदम उठाने जा रही है। सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो अगले पांच माह में विनय मार्ग पर 24 घंटे पानी की आपूर्ति चालू हो जाएगी। इतना ही नहीं यह परियोजना सफल रही तो इसे पूरे लुटियंस दिल्ली में लागू किया जाएगा। NDMC ने इस व्यवस्था को बनाने के लिए निविदा आमंत्रित की है। जहां 1.44 करोड़ की लागत से इस परियोजना के तहत जलापूर्ति प्रणाली को ठीक किया जाना है।

परियोजना के लिए बोलियां आमंत्रित की गईं : एनडीएमसी के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में MCD इलाके में सुविधाओं का विस्तार कर रहे हैं। इसके तहत हम पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर विनय मार्ग से 24 घंटे पानी की करेंगे। इसके लिए हमने पहले चरण के तहत विनय मार्ग वाटर बूस्टिंग स्टेशन (WBS) के कमांड एरिया में परियोजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। हमने परियोजना के लिए बोलियां आमंत्रित की हैं।

इन बोलियों को सप्ताह के अंत तक खोला जाएगा। उन्होंने बताया कि इस परियोजना में विनय मार्ग, सेवा भारती, सरकारी आवास, झुग्गी-झोपड़ियां और बंगले के साथ कई आवासीय क्षेत्रों को शामिल किए जाने की संभावना है।

एनडीएमसी इलाके में रोज 148 मिलियन लीटर पानी की होती है आपूर्ति : इसके तहत मौजूदा जल रिसाव को कम करने के साथ ही पुरानी पाइपलाइन को बदलने, अतिरिक्त पाइपलाइन डालने, सहायक उपकरणों के साथ ही बूस्टर पंप लगाने का कार्य किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि एनडीएमसी इलाके में इस वक्त पानी की 148 मिलियन लीटर प्रतिदिन आपूर्ति होती है, जबकि कच्चे पानी 125 एमएलडी ही उपलब्ध है। एनडीएमसी इलाके में 1.30 लाख रहते हैं।

जबकि 10 लाख के करीब लोग प्रतिदिन विभिन्न सेवाओं और कार्यों के लिए आते हैं। एनडीएमसी इलाके में जलापूर्ति एनडीएमसी स्वयं करती है जबकि शेष दिल्ली जलापूर्ति जल बोर्ड के पास है।

अपने ही इलाज को तरसे दिल्ली के कई अस्पताल, डॉक्टर, स्टाफ और संसाधनों की कमी

दिल्ली नगर निगम के अस्पताल और डिस्पेंसरी खुद इलाज के लिए तरस रहे हैं। अस्पतालों की इमारतें क्षतिग्रस्त हैं कूड़े के ढेर लगे हैं और आवारा पशुओं का जमावड़ा है। मरम्मत के लिए मंजूर 117 करोड़ रुपये भी नाकाफी साबित हुए। बाड़ा हिंदू राव अस्पताल में टूटी खिड़कियां और कुत्तों का जमावड़ा है। डॉक्टर स्टाफ और संसाधनों की कमी है।

नईदिल्ली। राजधानी दिल्ली के करीब तीन करोड़ लोगों के प्राथमिक स्वास्थ्य की जिम्मेदारी संभालने वाले दिल्ली नगर निगम के अस्पताल और डिस्पेंसरी खुद अपने इलाज के लिए तरस रहे हैं। हालात यह हैं कि निगम के अस्पतालों और डिस्पेंसरियों की बिल्डिंग, दरवाजे और खिड़कियां क्षतिग्रस्त हैं।

यही वजह है कि आए दिन बिल्डिंग के हिस्से और उपकरण गिरने की घटनाएं होती रहती हैं, वहीं अस्पतालों और डिस्पेंसरियों में बदइंतजामी का आलम है। जगह-जगह कूड़े और मलबे के ढेर लगे हैं और आवारा पशुओं की भरमार है।

दो साल पहले अस्पतालों की मरम्मत और संसाधन बढ़ाने के लिए 117 करोड़ रुपये मंजूर किए गए थे, लेकिन वह भी नाकाफी रहे, क्योंकि इससे सिर्फ शौचालय ब्लॉक और अस्पतालों के कुछ हिस्सों में ही सुधार हो सका। जबकि अभी भी कई ऐसे काम हैं, जिन पर काम होना बाकी है, क्योंकि अस्पतालों में कमरों के दरवाजे और खिड़कियां तक टूटी हुई हैं। हालांकि इस पर एमसीडी के प्रेस एवं सूचना विभाग से उसका पक्ष मांगा गया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

अगर एमसीडी के सबसे बड़े अस्पताल बाड़ा हिंदू राव की बात करें तो यहां सर्जरी वार्ड की पहचान टूटी खिड़कियां और कुत्तों का जमावड़ा बन गया है। अस्पताल परिसर में बेखौफ घूम रहे बंदरों के हमले का खतरा मरीजों के तीमारदारों को हमेशा बना रहता है।

कमोबेश यही स्थिति एमसीडी के श्रीमति गिरधरलाल समेत ज्यादातर स्वास्थ्य केंद्रों की है। ज्यादातर डॉक्टर, दवा, स्टाफ और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। जगह-जगह गंदगी और मलबा पड़ा है। कई जगह इमारतों का भी बुरा हाल है। एमसीडी के दूसरे अस्पताल और डिस्पेंसरी भी इनसे कम बुरे हाल में नहीं हैं।

स्वामी दयानंद अस्पताल का भी यही हाल है। यह ओपीडी बिल्डिंग न सिर्फ गंदी है बल्कि जगह-जगह मकड़ी के जाले लगे हुए हैं। यहां पंखे भी काम नहीं कर रहे हैं।

20 लाख खर्च लेकिन हालत जस की तस

एमसीडी के अस्पताल फंड की कमी के कारण नहीं सुधर पा रहे हैं, लेकिन जहां फंड उपलब्ध है, वहां सिर्फ सतही मरम्मत का काम हो रहा है। एमसीडी के कस्तूरबा अस्पताल में एक पुराना बच्चों का वार्ड है। इसमें 2022 में करीब 20 लाख की राशि से मरम्मत का काम होना था, लेकिन वह भी ठीक से नहीं हुआ।

सीढ़ियों पर नए संगमरमर के पत्थर लगाए गए, लेकिन वे भी कई जगह से टूट गए हैं। खिड़कियों की मरम्मत के नाम पर टूटी और दीमक लगी खिड़कियों को पेंट से ढक दिया गया। इतना ही नहीं, बिजली के स्विच बोर्ड भी ठीक नहीं किए गए। इतना ही नहीं, अस्पताल में कई जगह हालत खराब है। गंदगी के साथ-साथ बिल्डिंग में जगह-जगह प्लास्टर गिरने की घटनाएं भी हो रही हैं।

फंड की कमी से नहीं बन पा रही इमारत

एमसीडी में फंड की कमी के कारण नए अस्पताल और उनकी बिल्डिंग बनाने में दिक्कत आ रही है। निगम की ऐसी ही योजना पूर्वी दिल्ली में एमसीडी स्वामी दयानंद अस्पताल के नए ब्लॉक में सात मंजिला बिल्डिंग बनाने की थी।

इसमें 30 बेड की व्यवस्था के अलावा एक्स-रे, ब्लॉक बैंक, आईसीयू, ऑपरेशन थियेटर जैसी सुविधाएं बढ़ाई जानी थीं, लेकिन 60 करोड़ रुपये के फंड की कमी के कारण यह बिल्डिंग नहीं बन पा रही है। जबकि अस्पताल में अभी भी कई सुविधाओं का अभाव है। रेडियोलॉजी की ज्यादातर मशीनें खराब हैं।

एक नजर

प्रमुख अस्पताल : हिंदू राव, कस्तूरबा गांधी, स्वामी दयानंद, माता गुजरी, बालकराम, राजन बाबू, जीएलएम और महर्षि वाल्मीकि

कालोनी अस्पताल: दो पूर्णिमा सेठी और लाजपत नगर

डिस्पेंसरी

आयुर्वेदिक औषधालय- 31

होम्योपैथिक औषधालय: 23

अन्य स्वास्थ्य केंद्र

चेस्ट क्लिनिक- नौ

मातृ-शिशु देखभाल केंद्र- 104

प्रसूति केंद्र- 16

पॉलीक्लिनिक- 11

भीषण गर्मी के लिए रहें तैयार, अगले 3 दिन में तापमान होगा 42 डिग्री पार

दिल्ली में गर्मी ने फिर से दस्तक दे दी है। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिनों में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जाने की संभावना है। सोमवार को अधिकतम तापमान 38.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मंगलवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे और तेज हवाएं चलेंगी। वायु गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में बनी हुई है।

नईदिल्ली। करीब 10 से 12 दिन की राहत के बाद गर्मी ने फिर से तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। तापमान भी तेजी से बढ़ने लगा है। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले दिन भीषण गर्मी वाले हो सकते हैं। तीन दिन के अंदर तापमान भी 42 डिग्री के पार चला जाएगा। सोमवार को सुबह ही तेज धूप निकल गई थी, जो दिन चढ़ने के साथ और तीखी होती गई। आसमान भी दिन भर साफ रहा। अधिकतम तापमान सामान्य से 1.2 डिग्री कम 38.3 डिग्री सेल्सियस जबकि न्यूनतम तापमान 1.1 डिग्री कम 24.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 64 से 30 प्रतिशत तक रहा। सर्वाधिक अधिकतम तापमान 39.7 डिग्री के लिहाज से रिज क्षेत्र और सर्वाधिक न्यूनतम 27.1 डिग्री के लिहाज से पीतमपुरा राजधानी के सबसे गर्म इलाके रहे।

मंगलवार को आंशिक रूप से छाए रहेंगे बादल

मौसम विभाग का कहना है कि मंगलवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। 15 से 25 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलेगी। बीच बीच में हवा की रफ्तार 35 किमी तक भी जा सकती है। अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 40 और 26 डिग्री सेल्सियस तक रह सकता है।

वायु गुणवत्ता में लगातार सातवें दिन सुधार बरकरार

मौसमी परिस्थितियों के चलते वायु गुणवत्ता में लगातार सातवें भी सुधार बना रहा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक सोमवार को दिल्ली का एक्यूआइ 162 दर्ज किया गया। इसे मध्यम श्रेणी में रखा जाता है। एक दिन पूर्व रविवार को यह 158 रहा था। यानी 24 घंटे के दौरान इसमें चार अंकों की वृद्धि दर्ज की गई है। एनसीआर के शहरों में भी यही स्थिति है। हाल फिलहाल इसके मध्यम श्रेणी में ही बने रहने के आसार हैं।

साकेत बार एसोसिएशन के चुनाव में सचिव पद पर विजयी अनिल कुमार बसोया बने लोकप्रियता की मिसाल

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। साकेत बार एसोसिएशन का चुनाव कई बार स्थगित होने के बाद अंततः 9 मई को पूरी पारदर्शिता एवं ईमानदारी के साथ संपन्न हुआ। इस चुनाव में लोकप्रिय अधिवक्ता अनिल कुमार बसोया ने सचिव पद पर रिकॉर्ड मतों से विजयी होकर न सिर्फ एक इतिहास रचा है, बल्कि अपनी लोकप्रियता का भी मिसाल पेश किया है। वह अभी तक के सबसे युवा सचिव निर्वाचित हुए हैं। इस चुनाव में सचिव पद के पांच दावेदारों में से अधिवक्ताओं की पहली पसंद अनिल कुमार बसोया बने। उन्हें 1591 मत मिले तथा उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को लगभग साढ़े चार सौ वोटो से पराजित किया, जो विभिन्न पदों पर चुनाव लड़ रहे अन्य उम्मीदवारों में सर्वाधिक है। यह अधिवक्ताओं के बीच उनकी लोकप्रियता, सादगी एवं ईमानदारी को दर्शाता है। सचिव पद पर नव निर्वाचित अधिवक्ता अनिल कुमार बसोया ने अपनी जीत का श्रेय सभी अधिवक्ताओं को देते हुए कहा कि मेरी जीत साकेत कोर्ट में सेवारत सभी अधिवक्ताओं की जीत है। उन्होंने कहा कि मैंने इसके पूर्व भी एडिशनल सेक्रेटरी के पद पर रहते हुए अधिवक्ताओं की समस्याओ के समाधान के लिए लगातार संघर्ष किया है। जिस उम्मीद और प्यार के साथ साकेत कोर्ट के साथी अधिवक्ताओं ने मुझे विजयी बनाया है, उस पर मैं हमेशा खरा उतरने की कोशिश करूंगा। अधिवक्ताओं की विभिन्न समस्याओं एवं साकेत कोर्ट की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मैं वचनबद्ध हूं तथा मेरा वादा है कि मैं अपने चुनावी वायदे को हर हाल में पूरा करने की कोशिश करूंगा। बसोया को उनकी ऐतिहासिक जीत पर बधाई एवं शुभकामना देने वालों का तांता लगा है।

दिल्ली में आर्थिक तंगी के चलते परिवार के चार सदस्यों ने पीया जहर, बेटा-बेटी और पिता की मौत; 2 लोग अस्पताल में

दिल्ली के बाहरी इलाके में एक परिवार के चार सदस्यों ने आर्थिक तंगी के चलते जहरीला पदार्थ पी लिया। माता-पिता और उनके दो बच्चों को अस्पताल ले जाया गया जहां बच्चों की मौत हो गई। हरदीप सिंह की भी मौत हो गई। पुलिस जांच कर रही है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि परिवार ने आपसी सहमति से यह कदम उठाया।

बाहरी दिल्ली। उत्तर-पश्चिम दिल्ली के संगम पार्क डीएसआइडीसी स्थित वाहन हार्न बनाने की फैक्ट्री में एक परिवार के चार सदस्यों ने जहरीला पदार्थ पी लिया। दंपती और उनके किशोर बेटा-बेटी को अस्पताल ले जाया गया, जहां कुछ घंटों के अंदर दोनों बच्चों ने दम तोड़ दिया। परिवार के मुखिया हरदीप सिंह की भी मौत हो गई। जबकि उनकी पत्नी की हालत स्थिर है। पुलिस को प्रारंभिक जांच में पता चला है कि सभी सदस्यों ने आपसी सहमति से जहरीले पदार्थ का सेवन किया था। धंधा न चल पाने से आर्थिक तंगी के कारण सभी ने यह कदम उठाया। चारों कल रात नांगलोई स्थित अपने घर से निकले थे। रात उन्होंने गुरुद्वारे में बताया फिर सुबह फैक्ट्री में आकर सभी ने जहरीले पदार्थ का सेवन किया। पुलिस को मौके से हल्के आरेंज क्लर का कुछ पाउडर मिला है। उसे प्लास्टिक के गिलास में डालकर पानी या जूस में मिलाकर सेवन किया गया। पुलिस ने गिलास व पाउडर के नमूने लेकर जांच के लिए फोरेंसिक लैब में भिजवा दिया है। पुलिस को शक है कि जहरीला पदार्थ सल्फास हो सकता है। डीसीपी उत्तर-पश्चिम जिला भीष्म सिंह का कहना है कि पुलिस को मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस का कहना है कि व्यापारी ने सालभर पहले काठमांडू (नेपाल) में बिजनेस छोड़कर दिल्ली आकर हार्न बनाने का काम शुरू किया था। लेकिन इस धंधे में भी उन्हें सफलता नहीं मिली। सोमवार सुबह आठ बजे भारत नगर थाना पुलिस को पीसीआर काल मिली कि संगम पार्क डीएसआइडीसी के शेड नंबर 63 में चार लोगों के जहरीले पदार्थ के सेवन किया है।

मैरिको एक्सपर्ट डॉ. शिल्पा वोरा से जानिए गर्मियों में यूवी डैमेज से बालों की सुरक्षा कैसे करें

मुख्य संवाददाता

गर्मियों में जैसे हमारी त्वचा को खास देखभाल की जरूरत होती है, वैसे ही बालों का भी ध्यान रखना जरूरी है। तेज धूप और बढ़ती गर्मी से बालों की नमी खत्म हो सकती है, जिससे वे कमजोर होकर टूटने लगते हैं और अपनी चमक खो बैठते हैं। ऐसे में एक ऐसा हेयरकेयर रूटीन जरूरी है, जो बालों को भीतर से पोषण दे और बाहर से सूरज की तेज किरणों से उनकी रक्षा करे।

बालों को यूवी किरणों से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए नारियल तेल एक बेहतरीन उपाय है, जो बालों की गहराई तक जाकर उन्हें पोषण देता है। मैरिको लिमिटेड की चीफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑफिसर डॉ. शिल्पा वोरा कहती हैं, ₹बालों को ड्राइनेस, प्रदूषण और यूवी किरणों से बचाने के लिए नियमित तेल मालिश बेहद जरूरी है। सही तरह से तेल लगाने की आदत बालों को अंदर से मजबूत बनाती है, जिससे वे तेज धूप और प्रदूषण जैसी मुश्किल परिस्थितियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं।

डॉ. वोरा आगे कहती हैं, ₹अगर आप बालों में

गहराई से पोषण और हेल्दी चमक चाहते हैं, तो नारियल तेल एक शानदार विकल्प है। यह बालों की जड़ों तक जाकर उन्हें भीतर से मजबूत बनाता है। इसके लिए पैराशूट एडवांस्ड गोल्ड हेयर ऑयल एक भरोसेमंद विकल्प है, जो स्कैल्प की 10 परतों तक जाकर बालों को पोषण देता है।

डॉ. वोरा के अनुसार, नियमित तेल मालिश से बालों को कई फायदे मिलते हैं। अच्छा हेयर ऑयल न केवल बालों की जड़ों को पोषण देता है, बल्कि टूटने से भी बचाता है। साथ ही, यह बालों के उलझने को कम करता है और उन्हें संभालना आसान बनाता है।

गर्मी में बालों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए एक आसान लेकिन असरदार रूटीन बहुत मदद कर सकता है। बाहर निकलते समय सिर को स्कार्फ या दुपट्टे से ढकना चाहिए, ताकि सीधे यूवी किरणों से बचाव हो सके। खूब पानी पीना चाहिए, ताकि शरीर के साथ बालों को भी अंदर से पर्याप्त पोषण मिलता रहे और वे मजबूत बने रहें।

इसके साथ ही, नियमित रूप से पैराशूट एडवांस्ड गोल्ड हेयर ऑयल से मालिश करें, जो बालों को गहराई से रिपेयर करता है और जरूरी सुरक्षा प्रदान करता है। कोशिश करें कि हीट स्टाइलिंग से बचें और बालों को नैचुरली सूखने दें, ताकि अतिरिक्त नुकसान से बचा जा सके।

इन आसान उपायों को अपनाकर आप अपने बालों को पूरे गर्मी के मौसम में स्वस्थ, सुरक्षित और चमकदार बनाए रख सकती हैं।

मध्य क्षेत्र के उपायुक्त जी.पी. सिंह की देखरेख में बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष सफाई अभियान

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली नगर निगम के मध्य क्षेत्र में सफाई और सार्वजनिक स्वच्छता का प्रचार-प्रसार करने के लिए जी.पी. सिंह, उपायुक्त, मध्य क्षेत्र की देख रेख में बुद्ध पूर्णिमा, 12 मई के शुभ अवसर पर विशेष सफाई अभियान चलाया गया। यह पहल मध्य क्षेत्र के सभी वार्डों को शामिल करते हुए सभी वार्ड, नगर निगम पार्षदों और क्षेत्रीय विधायकों के नेतृत्व में संचालित की गई। इस अभियान का उद्देश्य न केवल सफाई अभियान को तेज करना हैं, बल्कि नागरिकों के बीच अपने घरों और कार्यस्थलों के आसपास सफाई बनाए रखने और कचरे को अलग-अलग करने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना भी हैं। इसका बड़ा लक्ष्य स्वच्छ और स्वस्थ दिल्ली के दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाना था, जिससे नागरिकों की दैनिक आदतों और अंततः उनके व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

इस अभियान में मध्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी विभागों, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन, मार्केट ट्रेड एसोसिएशन, स्थानीय धार्मिक नेताओं की सक्रिय भागीदारी रही। प्रत्येक वार्ड के सेनेटरी इंस्पेक्टर/सहायक सेनेटरी इंस्पेक्टर को जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन की निगरानी के लिए नोडल अधिकारी के रूप में नामित किया गया था, जबकि अंतर-विभागीय समन्वय और सहायता सुनिश्चित करने के लिए विभागाध्यक्षों को समन्वयक के रूप में नियुक्त किया गया था। उपायुक्त ने भी इस अभियान में भाग लिया और प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि "बुद्ध पूर्णिमा ज्ञान और नवीनीकरण का दिन है। हमने इस महत्वपूर्ण दिन को समुदाय और अपने विभागों को एक ऐसे अभियान में शामिल करने के लिए चुना जो शुद्धता, अनुशासन और सामूहिक कल्याण को दर्शाता है। उन्होंने प्रतिभागियों से कचरे को अलग करने, रीसाइकिल करने और पुनः उपयोग करने का अनुरोध किया। उन्होंने सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने और कॉटन बैग के उपयोग पर सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि स्वच्छता अभियान प्रदूषण को कम करने, प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करके महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लाभ प्रदान करते हैं। डिप्टी कमिश्नर मध्य क्षेत्र ने इस पहल की सफलता में योगदान देने वाले इस प्रोग्राम के कॉर्डिनेटर डॉ नवीन राय तुली (उप स्वास्थ्य अधिकारी) मध्य क्षेत्र सभी अधिकारियों, सफाई विभाग, मलेरिया विभाग के कर्मचारियों और निवासियों को हार्दिक धन्यवाद दिया। और श्री अनवर जी ने कॉर्डिनेटर और नोडल अधिकारियों के साथ मॉनिटरिंग की और नागरिकों से आग्रह है कि वे अपने आस-पास की सफाई रखकर और अपने समुदायों में जागरूकता फैलाकर इस अभियान का समर्थन करना जारी रखें।

कोहली का टेस्ट संन्यास: क्रिकेट के सबसे महान अध्यायों में से एक

भारतीय क्रिकेट के महान इतिहास में विराट कोहली का नाम ऐसे चमकता है जैसे कोई सितारा। पिछले चौदह वर्षों में कोहली ने एक ऐसी धरोहर बनाई है, जो न केवल उनके अभूतपूर्व आंकड़ों के लिए बल्कि खेल के प्रति उनकी जुनून, तीव्रता और नेतृत्व क्षमता के लिए भी याद रखी जाएगी। जैसे ही वे टेस्ट क्रिकेट से विदा लेते हैं, यह केवल एक खिलाड़ी का नहीं, बल्कि क्रिकेट के इतिहास का एक ऐसा अध्याय है जो आने वाली पीढ़ियों तक चर्चा का विषय रहेगा।

डॉ सत्यवान सौरभ

विराट कोहली, जिन्हें आधुनिक क्रिकेट के महानतम खिलाड़ियों में से एक माना जाता है, ने 21वीं सदी में क्रिकेट खेलने का तरीका ही बदल दिया। उनके आक्रामक बल्लेबाजी, प्रेरणादायक नेतृत्व और खेल के प्रति निष्ठा ने क्रिकेट को एक नई दिशा दी। उनकी यात्रा केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों की नहीं बल्कि भारतीय क्रिकेट की वह प्रक्रिया है, जहां टीम की मानसिकता, दृष्टिकोण और दृष्टि उनके नेतृत्व में विकसित हुई।

संक्रमण के दौर में एक पथप्रदर्शक

जब विराट कोहली ने 2011 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया था, तब किसी ने नहीं सोचा था कि वे क्रिकेट की दुनिया में इतनी बड़ी छाप छोड़ेंगे। उस समय भारत क्रिकेट के एक संक्रमण काल से गुजर रहा था। दिग्गज खिलाड़ी जैसे सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और वीवीएस लक्ष्मण के संन्यास के बाद भारत को एक नए नेता की आवश्यकता थी, और कोहली ने इस जिम्मेदारी को पूरी तरह से निभाया।

कोहली का क्रिकेट में प्रवेश आक्रामकता और सफलता की इच्छा से भरा था। पहले के खिलाड़ियों की तुलना में जो अधिक संयमित और नियंत्रित थे, कोहली का खेल तरीका एकदम अलग था। उन्होंने क्रिकेट के नियमों को तोड़ा और अपने आक्रामक खेल, फिटनेस के प्रति समर्पण और उत्कृष्टता की आकांक्षा से भारतीय क्रिकेट को नई दिशा दी। जल्दी ही भारतीय टीम फिटनेस और आक्रामकता के एक नए युग का प्रतीक बन गई और कोहली इस बदलाव के सिरमौर थे।

टेस्ट क्रिकेट में महारत

विराट कोहली का टेस्ट क्रिकेट में रिकॉर्ड स्वयं में एक मिसाल है। 27 टेस्ट शतक के साथ, वे वर्तमान में टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक शतक बनाने वाले खिलाड़ियों में से एक हैं। भारत के लिए, वे सचिन तेंदुलकर के बाद दूसरे स्थान पर हैं। 8,000 से अधिक टेस्ट रन और अद्वितीय औसत के साथ, उन्होंने क्रिकेट के इस सबसे कठिन प्रारूप में खुद को साबित किया है।

लेकिन कोहली की महानता केवल उनके आंकड़ों में नहीं, बल्कि इस बात में भी है कि उन्होंने टेस्ट क्रिकेट को कैसे पुनः परिभाषित किया। उस दौर में जब तेज गेंदबाज और चुनौतीपूर्ण पिचें अक्सर प्रमुख रहती थीं, कोहली ने बिना किसी डर के अपने कौशल का परिचय दिया। चाहे इंग्लैंड की स्विंग करती पिचें हो या भारत की स्पिनिंग पिचें, कोहली ने हर चुनौती का सामना किया।

उनकी यात्रा 2014 में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंची, जब उन्होंने इंग्लैंड के खिलाफ खराब प्रदर्शन के बाद खुद को और बेहतर बनाने का फैसला किया। उन्होंने अपने खेल में लगातार सुधार किया और अब वे टेस्ट क्रिकेट के सबसे सशक्त बल्लेबाजों में से एक माने जाते हैं। कोहली ने न केवल रन बनाए, बल्कि उन्होंने टेस्ट क्रिकेट के लिए एक नया मानक स्थापित किया।

नेतृत्व: मैदान पर और मैदान के बाहर एक क्रांति

कोहली का व्यक्तिगत प्रदर्शन भले ही अद्वितीय हो, लेकिन उनका नेतृत्व ही उनकी असली धरोहर है। 2017 में, कोहली ने भारतीय टेस्ट टीम की कप्तानी संभाली और महेन्द्र सिंह धोनी से यह जिम्मेदारी ली। कोहली के नेतृत्व में भारत ने टेस्ट क्रिकेट में एक मजबूत और सफल टीम के रूप में पहचान बनाई। उनकी कप्तानी में भारत ने ICC टेस्ट रैंकिंग में नंबर 1 का स्थान लंबे समय तक बरकरार रखा।

कोहली की कप्तानी में भारत ने 2018 में ऑस्ट्रेलिया में अपनी पहली टेस्ट सीरीज जीत हासिल की, जो भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुई। उनकी कप्तानी में भारत ने लगातार शानदार प्रदर्शन किया, चाहे वह ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड या वेस्ट इंडीज की धरती हो। उनका नेतृत्व न केवल रणनीतिक था, बल्कि उन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम में व्यक्तिगत जिम्मेदारी और जवाबदेही का भी माहौल बनाया। कोहली का नेतृत्व भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक लेकर गया।

टेस्ट क्रिकेट: कोहली की कठोरता की पहचान

टेस्ट क्रिकेट का असली उद्देश्य धैर्य, तकनीक और मानसिकता की परीक्षा लेना है। यह एक खिलाड़ी की चरित्र की वास्तविक परीक्षा होती है। कोहली ने बार-बार यह साबित किया कि उनके

पास टेस्ट क्रिकेट में सफल होने की सारी क्षमताएं हैं। उनका समर्पण इस प्रारूप के प्रति हमेशा स्पष्ट था। कुछ क्रिकेटर जहां टी20 लीग और वनडे क्रिकेट की ओर आकर्षित होते हैं, वहीं कोहली ने हमेशा टेस्ट क्रिकेट को प्राथमिकता दी। इस खेल में उनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करती थी कि भारत हमेशा एक मजबूत बल्लेबाज के साथ मैदान में उतरे।

कोहली के सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक उनकी कठिन परिस्थितियों में बनाए गए शतक हैं। 2014 में एडिलेड में उनका शतक एक बेहतरीन उदाहरण है, जहां उन्होंने भारतीय टीम की गिरावट के बीच अपनी अद्वितीय बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया। इसी तरह दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के खिलाफ उनके शतक उनके टेस्ट क्रिकेट में अपार योगदान को दर्शाते हैं।

लेकिन यह सिर्फ रन बनाने की बात नहीं थी। कोहली ने टेस्ट क्रिकेट को खेलने के तरीके में भी बदलाव किया। उनका मानना था कि टेस्ट क्रिकेट को उत्साह और उद्देश्य के साथ खेलना चाहिए। उनका मानसिकता हमेशा यह थी कि टेस्ट क्रिकेट खेल का सबसे शुद्ध रूप है, और उनका लक्ष्य था कि वे इसमें जितना हो सके योगदान दें। यही कारण है कि जब वे अपने टेस्ट करियर से विदाई ले रहे हैं, तो यह उनके खेल के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा और सम्मान को दर्शाता है।

कोहली का प्रभाव: आंकड़ों से कहीं बढ़कर

जब विराट कोहली टेस्ट क्रिकेट से विदा ले रहे हैं, तो इसे केवल उनके आंकड़ों में ही नहीं देखा जाना चाहिए। उनका वास्तविक प्रभाव भारतीय क्रिकेट की संस्कृति पर था। जब कोहली ने भारतीय टीम की कप्तानी संभाली, तो उन्होंने क्रिकेट के प्रति खिलाड़ियों के दृष्टिकोण में एक क्रांति ला दी। उनकी फिटनेस पर जोर, कड़ी मेहनत की प्रतिबद्धता और हर छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देने का तरीका यह दर्शाता है कि उन्होंने भारतीय क्रिकेट को एक नई दिशा दी। उनका प्रभाव भारतीय क्रिकेट की युवा पीढ़ी पर गहरा था, जो आज भी उनकी प्रतिबद्धता और आक्रामकता से प्रेरित होकर खेल में उत्कृष्टता प्राप्त करने की कोशिश कर रही है।

कोहली केवल एक क्रिकेटर नहीं हैं, बल्कि एक ब्रांड, एक आदर्श और खेल के प्रति एक मिशन के प्रतीक हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि केवल अच्छा क्रिकेट खेलने से ही सफलता नहीं मिलती, बल्कि आपको समर्पित, केंद्रित और महानता की ओर लगातार बढ़ते रहना पड़ता है। उनका मानसिक धैर्य और कार्य नैतिकता भविष्य की पीढ़ियों के लिए मानक बन गया है।

एक महानता को अलविदा

विराट कोहली का टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेना एक युग का अंत है। उनके योगदान, उनके नेतृत्व और उनके खेल के प्रति समर्पण को आने वाली पीढ़ियां हमेशा याद रखेंगी। कोहली के संन्यास के बाद, क्रिकेट की दुनिया उनकी आक्रामकता, उनकी तीव्रता और उनकी शानदार क्रिकेट बुद्धिमत्ता को याद करेगी। लेकिन जो कुछ भी बचा रहेगा, वह यह है कि एक खिलाड़ी ने केवल अपने रन ही नहीं बनाए, बल्कि भारतीय क्रिकेट को एक नई पहचान दी।

कोहली ने जो काम किया, वह न केवल आंकड़ों में है, बल्कि उस भावना में है जिसे उन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम में डाला। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारत का नाम टेस्ट क्रिकेट में हमेशा सबसे ऊपर रहे।

विराट कोहली को टेस्ट क्रिकेट में अलविदा, एक ऐसी धरोहर छोड़ते हैं जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

नींद: समय की बर्बादी नहीं, सबसे बुद्धिमान निवेश, [स्मार्टफोन की नीली कैद: नींद की हत्या का मौन दस्तावेज़]

रात का सन्नाटा, जब सितारे चुपके से झांकते हैं, एक मौन निमंत्रण देता है — "आओ, विश्राम करो।" पर हम, आधुनिकता की चमक में अंधे, इस निमंत्रण को ठुकरा देते हैं। हमारी उंगलियां स्मार्टफोन पर थिरकती हैं, आंखें नीली रोशनी में डूबती हैं, और नींद, वह कोमल सखी, दरवाजे पर ठिठककर लौट जाती है। सुबह की थकी आंखें और बेचैन मन हमें चेताते हैं, पर हम फिर वही गलती दोहराते हैं — रातों को जागकर, नींद को चुराकर। यह कोई व्यक्तिगत कमजोरी नहीं; यह एक सभ्यता का संकट है, एक अदृश्य महामारी, जो हमारी रातों से सुकून और दिनों से शांति छीन रही है।

आज का इंसान समय का दास बन चुका है। हर पल कुछ हासिल करने की दौड़ में, हमने नींद को एक अनावश्यक विलासिता मान लिया। युवा इसे "कूल" समझते हैं, जब वे आधी रात तक रील्स स्क्रॉल करते हैं। प्रौढ़ इसे "प्रतिबद्धता" का नाम देते हैं, जब वे सुबह के पहले प्रहर तक ईमेल का जवाब देते हैं। बच्चे स्क्रीन की चमक में खोए रहते हैं, और अभिभावक इसे "आधुनिकता" का हिस्सा मान लेते हैं। पर सच यह है कि हम एक ऐसी दुनिया रच रहे हैं, जहां नींद को कमजोरी माना जाता है, और जागना उपलब्धि। यह सोच हमें कितनी महंगी पड़ रही है, इसका हिसाब तब लगता है, जब शरीर कराहने लगता है और मन बिखरने लगता है।

तकनीक, जो हमारी सहूलियत के लिए बनी, अब हमारी नींद की सबसे बड़ी डाकू बन चुकी है। स्मार्टफोन, लैपटॉप, और टेलीविजन — ये तीनों मिलकर हमारी रातों पर डाका डालते हैं। खासकर फोन की नीली रोशनी मेलाटोनिन को दबा देती है, वह हार्मोन जो हमें नींद की गोद में ले जाता है। नतीजा? घंटों बिस्तर पर करवटें बदलना, और अगर नींद आई भी, तो वह उथली, अधूरी। हम सोचते हैं कि छह घंटे काफी हैं, चार घंटे भी चल जाएंगे। पर विज्ञान चीखकर कहता है — यह आत्मघात है। नींद की कमी सिर्फ थकान नहीं लाती; यह दिल की बीमारियों, डायबिटीज, मोटापे, और मानसिक रोगों का रास्ता खोलती है। यह हमारी रचनात्मकता को कुंद करती है, निर्णय लेने की शक्ति छीनती है, और हमें एक चलता-फिरता खोल बना देती है — बाहर से जीवंत, भीतर से खाली।

इस संकट का सबसे भयावह चेहरा सामाजिक है। हमने नींद की कमी को मेहनत का पर्याय बना दिया। "मैं तो बस चार घंटे सोता हूँ" — यह वाक्य गर्व का बयान बन चुका है, मानो नींद लेना आलस्य हो। कॉरपोरेट जगत में देर रात तक जागना "कमिटमेंट" का सबूत माना जाता है। सोशल मीडिया पर आधी रात की स्टोरीज "हसल" का प्रतीक बनती हैं। पर यह हसल हमें कहां ले जा रहा है? एक ऐसी जिंदगी की ओर, जहां सुकून गायब है, जहां हर सुबह एक नई जंग है। हम खुद को बधाई दे रहे हैं, पर असल में अपनी सेहत को गहरी चोट पहुंचा रहे हैं। यह गर्व नहीं, आत्मविनाश का उत्सव है।

बच्चों और किशोरों पर यह संकट और भी गहरा है। ऑनलाइन क्लासेस, गेमिंग, और सोशल मीडिया ने उनकी रातों को चुरा लिया है। एक विकासशील दिमाग, जिसे आठ-नौ घंटे की गहरी नींद चाहिए, वह पांच घंटे में सिमट रहा है। नतीजा? एकाग्रता की कमी, चिड़चिड़ापन, और सीखने में कठिनाई। अगर हमारी नई पीढ़ी नींद से वंचित रहेगी, तो वह कैसे सपने देखेगी? कैसे उन सपनों को हकीकत में बदलेगी? हम उन्हें स्क्रीन थमा रहे हैं, पर उनकी नींद छीन रहे हैं — और इसके साथ, उनका भविष्य भी।

नींद सिर्फ शरीर को आराम नहीं देती; यह हमारी आत्मा को संवारती है। रात के अंधेरे में, जब हम सोते हैं, हमारा दिमाग दिन भर की उलझनों को सुलझाता है। यह यादों को सहेजता है, अनावश्यक को छांटता है, और हमें अगले दिन के लिए तैयार करता है। नींद हमारी भावनाओं को संतुलित करती है, हमें धैर्य देती है, और हमारी रचनात्मकता को पंख। पर जब नींद छिनती है, तो यह सब बिखर जाता

है। हम चिड़चिड़े हो जाते हैं, गलत निर्णय लेते हैं, और धीरे-धीरे अपने ही मन से दूर होने लगते हैं। नींद की कमी सिर्फ शारीरिक नहीं, भावनात्मक और बौद्धिक तबाही भी है।

इस संकट की जड़ हमारी जीवनशैली है — अनियमित रूटीन, कैफीन की लत, और स्क्रीन का अतिरेक। पर समाधान उतना ही सरल है, जितना कठिन उसे अपनाना। हमें नींद को बोझ नहीं, वरदान मानना होगा। सोने का एक निश्चित समय तय करें। सोने से एक घंटा पहले स्क्रीन को अलविदा कहें। कैफीन और भारी भोजन से परहेज करें। किताब पढ़ें, हल्का संगीत सुनें, या ध्यान करें — ये छोटे कदम आपकी रातों को फिर से सुकून दे सकते हैं। कार्यस्थलों को भी बदलाव लाना होगा। देर रात तक काम को "उत्साह" नहीं, "असंतुलन" मानना होगा। स्कूलों को बच्चों को नींद का महत्व सिखाना होगा, ताकि वे इसे आदत बनाएं, न कि बोझ।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि नींद को नजरअंदाज कर हम खुद को धोखा दे रहे हैं। दिन की भागदौड़ का असली मूल्य तभी चुकता होता है, जब रात को हम गहरी नींद में डूबते हैं। जब आंखें बंद होती हैं, तभी दिमाग खुलता है। जब शरीर शांत होता है, तभी आत्मा सुकून पाती है। पर अगर हमने नींद से उसकी यह मौन शक्ति छीन ली, तो न केवल हमारी कार्यक्षमता घटेगी, बल्कि हम अपनी मानवता से भी दूर होंगे।

अब वक्त है कि हम नींद को "समय की बर्बादी" नहीं, "समय का सबसे बुद्धिमान निवेश" मानें। एक ऐसा समाज, जो नींद को सम्मान देता हो, वही सच्चे अर्थों में स्वस्थ, संवेदनशील, और सशक्त होगा। नींद को फिर से अपने जीवन का हिस्सा बनाएं — न केवल बेहतर सेहत के लिए, बल्कि एक बेहतर दुनिया के लिए। क्योंकि जब पूरी दुनिया चैन से सोती है, तभी एक नई सुबह मुस्कुराकर दरवाजा खटखटाती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कानपुर में एक और महिला की ईंट से कुचल कर हत्या, हिरासत में शराबी पति

सुनील बाजपेई

कानपुर। अवैध संबंध बनाम प्रेम प्रसंग समेत और भी कई कारणों से इस महानगर में जारी हत्याओं के क्रम में एक और महिला को मौत के घाट उतार दिया गया। ईट से कुचलकर की गई उसकी हत्या के मामले में पुलिस उसके शराबी पति को विरासत में लेकर पूछताछ कर रही है ।

यह घटना चौबेपुर कस्बे में हुई जहां आज सोमवार सुबह 36 वर्षीय बीनू शर्मा का रक्तरंजित शव घर के बाहर मिला। महिला के चेहरे पर चोट के निशान हैं। गले पर भी धारदार हथियार से वार के निशान मिले हैं। छत पर खून के धब्बे पाए गए हैं। पुलिस के मुताबिक प्रारंभिक जांच में पता चला कि पहले ईंट से कुचलकर हत्या की गई। फिर शव को छत से नीचे फेंक दिया गया।

घटना केबारे में जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि मृतका के पति संजय शर्मा एक ढाबे में काम करते हैं। उसके तीन बच्चे10 वर्षीय बेटा शुभ और दो बेटियां 8 वर्षीय सारथी व 5 वर्षीय सिया हैं।

मौके पर पहुंची पुलिस को जो जानकारी दी गई है उसके मुताबिक संजय शराब का आदी है और अक्सर पत्नी के साथ मारपीट करता था। पुलिस ने बताया कि वीते रविवार की देर रात संजय घर लौटा था। फिलहाल मृतका की मां की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही पुलिस पति को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

विश्व को भारत ने सैन्य नीति का लोहा मनवाया- अमेरिका को परमाणु युद्ध का डर सताया- आईएमएफ ने पाक लोन सेंशन पर ठप्पा लगाया-तत्काल सीज़फायर आया

अमेरिका नूरखान एयरबेस पर मिसाइल अटैक से तुरंत हरकत में आया-भारत ने रणनीतिक बौद्धिक क्षमता दिखाया-सीज़फायर मानकर परमाणु तबाही से बचाया-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की नजरें भारत-पाक ड्रोन-मिसाइल के हमले पर लगी हुई थी,जिससे सबको लग रहा था भारत की सेना पाक के सभी महत्वपूर्ण ठिकानों को नेस्तानाबूद कर देगी, हालांकि पाक तो भारत के 26 से अधिक शहरों पर करीब 300 से 400 ड्रोन से अटैक कर रहा था तथा भारत रणनीति के तहत एंटी ड्रोन सिस्टम से ड्रोन हमलों को नाकाम कर रहा था,फिर शुक्रवार 10 मई 2025 को भारत ने ऐसा ब्रह्मास्त्र चलाया जिसे पाक के अनेक एयरबस ध्वस्त हो गए खासकर पाक नूरखान एयरबेस पर मिसाइल से हमला कर पूरे विश्व को, खासकर अमेरिका को अपनी सैन्य नीति का लोहा मनवाया, क्योंकि इस एयरबेस के पास पाक परमाणु कार्यक्रमों से संबंधित स्थान है जिससे अमेरिका भी सख़्तें में आ गया, क्योंकि पाक पीएम ने परमाणु का उपयोग करने संबंधी नेशनल कमान अथॉरिटी की मीटिंग भी बुला ली थी, जो उसके उपयोग पर रणनीति तैयार करती है, इसकी भनक अमेरिका को लगतें ही दोनों देशों के तनाव मेंतत्काल समझौता करने की ठानी, अमेरिका जो आज दुनियाँ का ताकतवर देश माना जाता है,उसने पहले ही घोषित रख कर रखा था कि उसकी दोनों देशों के तनाव में कोई रोल व रूचि नहीं है, ऐसा सटीक विचार रखने वाला ताकतवर देश भी ताबड़तोड़ सक्रिय हो उठा, क्योंकि इधर भारत की नूरखान एयरबेस तक मिसाइल पहुंचने व परमाणु कार्यक्रम को ध्वस्त करने उड़ाने की, संभावना तथा पाक द्वारा इसके पहले ही इसका उपयोग कर देने की संभावना को ध्यान में रखते हुए, अमेरिका ने आनंन -फानन में अमेरिकी उपराष्ट्रपति के थ्रू दोनों देशों से बात कर झट से सीज़फायर की घोषणा एक ट्विटर हैंडल पर कर दी,फिर पाकिस्तान व अंत में भारत की इसपर सहमतिआई। मेरा मानना है कि इसी रणनीति के तहत ही आईएमएफ ने शनिवार दिनांक 10 मई 2025 को 2.3 अरब डॉलर (20 हज़ार करोड़)के लोन की मंजूरी दी गई और एक अरब डॉलर तुरंत जारी करने की बात कही ।एकअमेरिकी अखबार के अनुसार परमाणु युद्ध की संभावनाओं को देखते हुए ट्रंप नें सीज़ फायर करवाया है चूँकि भारत द्वारा नूरखान एयरबस पर मिसाइल अटैक से अमेरिका तुरंत हरकत में आया भारत ने रणनीतिक बौद्धिक क्षमता दिखाया,सीज़ फायर माँनकर परमाणु तबाही से बचाया व पाक पर नूरखान एयरबेस पर विस्फोट ने मामला पलटाया, परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का डर छाया,ट्रंप प्रशासन बीच में आया। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे विश्व को भारत में सैन्य नीति का लोहा बनवाया, अमेरिका को परमाणु युद्ध का डर सताया,आईएमएफ ने पाक लोन सैंक्शन कर ठप्पा लगाया, तत्काल सीज़फायर आया।

साथियों बात अगर हम अमेरिका के एक प्रिंट मीडिया हाउस के पेपर में,आई जानकारी में युद्ध विराम के कारणों में संभाव्य परमाणु युद्ध को रोकने की करें तो,पाकिस्तानी और भारतीय वायु सेना के बीच गंभीर हवाई लड़ाई शुरू हो गई थी,पाकिस्तान ने भारत की शक्ति परखने के लिए भारत के हवाई क्षेत्र में 300 से 400 ड्रोन भेजे थे. लेकिन चिंता का सबसे बड़ा कारण शुक्रवार देर रात आया, जब पाकिस्तान के रावलपिंडी में नूर खान एयर बेस पर विस्फोट हुए, जो इस्लामाबाद से सटा हुआ सैन्य अड्डे वाला शहर है। नूर खान एयर बेस से इस्लामाबाद की दूरी मात्र 10 से 15 किलोमीटर है, एक सुपरसोनिक मिसाइल इस दूरी को 3 से 4 या 4 से 5 सेकेंड में तय कर सकता है नूर खान एयर बेस पाकिस्तान का एक महत्वपूर्ण सैन्य प्रतिष्ठान है, यह पाकिस्तान की सेना का सेंट्रल ट्रांसपोर्ट हब है, यहां से ही पाकिस्तानी विमान हवा में ईंधन भरते हैं, यह केंद्र पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों को उड़ान भरने में मदद करता है। इसके अलावा जो बेहद अहम बात है वो यह है कि यह केंद्र पाकिस्तान के स्ट्रैटेजिक प्लान डिवीजन के मुख्यालय से भी कुछ ही दूरी पर है,स्ट्रैटेजिक प्लान डिवीजन पाकिस्तान की वो ईकाई है जो देश के परमाणु शस्त्रागार की देखरेख और सुरक्षा करता है, माना जाता है कि पाकिस्तान के परमाणु शस्त्रागार में लगभग 170 या उससे अधिक परमाणु बम शामिल हैं, यह भी माना जाता है कि ये हथियार पूरे देश में फैले हुए हैं, पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम से लंबे समय से परिचित एक पूर्व अमेरिकी अधिकारी ने शनिवार को मीडिया से कहा कि पाकिस्तान का सबसे बड़ा डर यह है कि उसके न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी को नष्ट कर दिया जाएगा, इस पूर्व अमेरिकी अधिकारी ने एनवायटी को बताया कि नूर खान एयरबेस पर पर भारत के मिसाइल हमले को इस चेतावनी के रूप में समझा गया हो सकता है कि भारत ऐसा कर सकता है, यानी कि नूर खान एयर बेस पर भारत के हमले का यह अर्थ निकाला गया है कि भारत के पास पाकिस्तान के न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी को तबाह करने की क्षमता है। बता दें कि शनिवार को भारत ने पाकिस्तान पर जवाबी हमला करते हुए उसके कई एयरबेस को निशाना बनाया और तहस नहस कर दिया। पाकिस्तान की ओर से कम से कम सार्वजनिक रूप से न्यूक्लियर शब्द का स्पष्ट संकेत तब आया था जब पाकिस्तान की स्थानीय मीडिया के अनुसार प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने नेशनल कमांड अथॉरिटी की बैठक बुलाई थी, नेशनल कमांड अथॉरिटी एक छोटा समूह है जो यह निर्णय लेता है कि परमाणु हथियारों का उपयोग कैसे और कब किया जाए।

साथियों बात अगर भारत पाक युद्ध से बाहर रहने की घोषणा करने के बावजूद अमेरिका

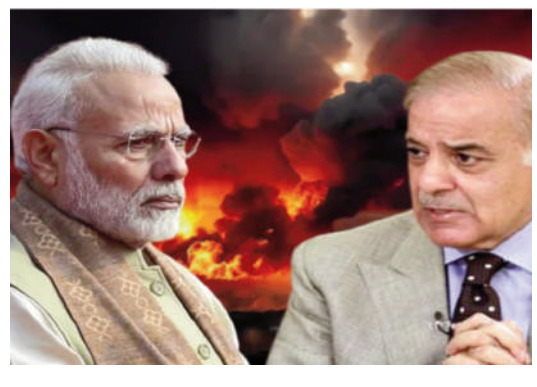

तत्काल युद्ध विराम कराने को समझने की करें तो, बता दें कि 7 मई को भारत की ओर से पाकिस्तान पर जवाबी हमले के बाद 10 मई को शाम 5 बजे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कीघोषणा के बाद भारत-पाक ने सीजफायर का ऐलान किया है,वहीं सीएनएन के अनुसार ट्रंप प्रशासन के अधिकारियों ने बताया कि शुक्रवार की सुबह अमेरिका को ख़तरनाक खुफिया जानकारी मिली, हालांकि उन्होंने इसकी संवेदनशीलता के कारण खुफिया जानकारी की प्रकृति का खुलासा नहीं किया, लेकिन रिपोर्ट में कहा गया कि यह शीर्ष अमेरिकी नेतृत्व को तत्काल कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया, इस काम में वेंस, अंतरिम राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश मंत्री मार्को रुबियो और व्हाइट हाउस की चीफ ऑफ स्टाफ सूजी विल्स शामिल थीं। शनिवार को भारत और पाकिस्तान ने पूर्ण और तत्काल युद्धविराम की घोषणा की, डोनाल्ड ट्रंप ने खुद को क्रेडिट देने लगे कि उनकी मध्यस्थता की वजह से ही ये संभव हो पाया। हालांकि, भारत ने सीधे तौर पर तो नहीं मगर, इस दावे को खारिज कर दिया है। भारत के अनुसार, यह दोनों देशों के बीच "सीधा समझौता" था। वहीं, पाकिस्तान के पीएम युद्ध विराम के बाद अमेरिका को धन्यवाद देते नहीं थक रहे थे, मगर, सीजफायर होने के बाद भी पाकिस्तान ने दोबारा अपनी नापाक हरकत दिखा दी. युद्धविराम के 3 घंटे के बाद ही कश्मीर में खास कर वैष्णों देवी पर ड्रोन हमला कर दिया। हालांकि, भारत ने इसका मुंहतोड़ जवाब दिया,अमेरिकी रुख में बदलाव वांस ने गुरुवार को फॉक्स न्यूज़ से कहा था कि यह संघर्ष 'मूल रूप से हमारा मसला नहीं है,अमेरिका दोनों देशों को हथियार डालने के लिए मजबूर नहीं कर सकता, लेकिन खुफिया जानकारी और परमाणु युद्ध की आशंका ने ट्रंप प्रशासन को सक्रिय भूमिका निभाने के लिए मजबूर किया, वांस ने पिछले महीने भारत की यात्रा के दौरान मोदी से मुलाकात की थी। ट्रंप प्रशासन का मानना था कि यह रिश्ता इस संकट में मददगार साबित होगा, ऐसे में ट्रंप प्रशासन ने फैसला लिया कि उपराष्ट्रपति जेंडी वेंस (उनकी पत्नी उषा के माता-पिता भारतीय अप्रवासी हैं, जो अपनी पत्नी के साथ भारत की यात्रा से कुछ हफ़्ते पहले लौटे थे) को सीधे भारतीय पीएम को फोन करना चाहिए, इस पर वेंस ने फोन कर पीएम से फोन पर बातचीत पर हमलों के विकल्पों पर विचार करने का अनुरोध किया था, साथ ही उन्होंने कहा कि इसका विकल्प एक संभावित ऑफ रैम्प भी शामिल है, जो पाकिस्तान को स्वीकार्य होगा, न्यूज नेटवर्क लिखता है कि पीएम मोदी ने उनकी बात सुनी, लेकिन किसी भी विचार पर अपनी प्रतिबद्धता नहीं जताई।

साथियों बात अगर हम अमेरिका द्वारा सीज़ फायर की प्रक्रिया को समझने की करें तो,vड्रोन अटैक, मिसाइल हमलों और फाइटर जेट्स द्वारा 4 दिनों तक दागे गए बमों के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर की घोषणा हो गई. लेकिन चौथे दिन ऐसा क्या हुआ कि मरते दम तक युद्ध लड़ने की गीदड़भभकी देने वाले पाकिस्तान ने पीछे हटने का फैसला ले लिया, मीडिया की मानें तो भारत के सब्र का बांध टूटता देख पाकिस्तान खौफ में आ गया था, पाकिस्तान को डर था कि भारत अब कुछ ऐसा करने जा रहे है, जिससे वहां तबाही आ सकती है, ऐसे में पाकिस्तान ने झुकने में अपनी भलाई समझी और सीधा संयुक्त राष्ट्र की शरण में पहुंच गया, इसके बाद पाक के सैन्य अभियान महानिदेशकों (डीजीएमओ) ने भारत से सीधे हॉटलाइन पर बात की और फिर सीजफायर पर सहमति बनी।10 मई की दोपहर तक, जब भारत द्वारा पाकिस्तान के कई बड़े हमलों को नाकाम कर दिया गया, तब पाकिस्तान के डीजीएमओ मेजर जनरल ने अपने भारतीय समकक्ष लेफ्टिनेंट जनरल को सीधे फोन किया,कॉल का समय, 15:35 बजे आईएसटी था, जिसकी बाद में विदेश सचिव ने एक प्रेस ब्रीफिंग में पुष्टि की हमलों के तुरंत बाद, भारतीय खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तानी डिफेंस नेटवर्क पर हाई अलर्ट मैसेज फ्लैश होते हुए देखा. ये मैसेज था कि भारत अगला निशाना पाकिस्तान के परमाणु कमांड और नियंत्रण ढांचे को बना सकता है, रावलपिंडी में रणनीतिक प्रतिष्ठानों, जिनमें पाकिस्तान के रणनीतिक योजना प्रभाग से जुड़े कार्यालय भी शामिल हैं, ऐसे में उन्होंने कथित तौर पर सुरक्षा प्रोटोकॉल बढ़ा दिए भारत और पाकिस्तान के सैन्य अभियान महानिदेशकों (डीजीएमओ) की 12 मई को दोपहर 12 बजे मुलाकात होना तय हुआ है, इस बीच भारत ने साफ कर दिया है कि अगली बार कोई भी आतंकी हमला युद्ध की कार्रवाई (एक्ट ऑफ़ वार) माना जाएगा और सजा इस बार से कई ज्यादा होगी।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व को भारत ने सैन्य नीति का लोहा मनवाया-अमेरिका को परमाणु युद्ध का डर सताया- आईएमएफ ने पाक लोन सेंशन पर ठप्पा लगाया- तत्काल सीज़फायर आयापाकिस्तान के नूरखान एयर बेस पर विस्फोट ने मामला पलटाया-परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का डर सताया-ट्रंप प्रशासन बीच में आया।अमेरिका नूरखान एयरबेस पर मिसाइल अटैक से तुरंत हरकत में आया-भारत ने रणनीतिक बौद्धिक क्षमता दिखाया- सीज़फायर मानकर परमाणु तबाही से बचाया।

वोक्सवैगन की नई एसयूवी टेस्टिंग के दौरान देखी गई, जानें कब तक हो सकती है भारत में लॉन्च, किसे मिलेगी चुनौती

परिवहन विशेष न्यूज

वोक्सवैगन नई एसयूवी भारत वाहन निर्माता वोक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में सेडान से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की नई एसयूवी हाल में ही टेस्टिंग के दौरान भारत में देखी गई है। किस सेगमेंट की एसयूवी की निर्माता की ओर से टेस्टिंग की जा रही है। कब तक इसे लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली निर्माता Volkswagen की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को लॉन्च किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फॉक्सवैगन की नई एसयूवी को भारत में टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। किस एसयूवी को भारत में लाने की तैयारी की जा रही है। कब तक नई एसयूवी को लॉन्च (Volkswagen new SUV India) किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

टेस्टिंग के दौरान दिखी नई एसयूवी

फॉक्सवैगन की ओर से जल्द ही नई एसयूवी को भारतीय बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से नई एसयूवी के लॉन्च से पहले इसे भारत में टेस्ट किया जा रहा है। टेस्टिंग के दौरान ही इस एसयूवी को देखा गया है।

क्या मिली जानकारी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फॉक्सवैगन की नई एसयूवी की टेस्टिंग की जा रही है। इस दौरान इसे कवर नहीं किया गया है। जिससे इसके एक्सटीरियर से लेकर इंटीरियर तक की जानकारी मिल रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक नई एसयूवी Volkswagen Tayron डी सेगमेंट में आ सकती है और इसमें कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। इसमें निर्माता की टिगुआन आर लाइन जैसा ही रियर दिया जा सकता है। साथ ही कनेक्टिड एलईडी हेडलाइट्स और टेल लाइट्स दी जाएंगी। रियर में लोगो के नीचे Tyron नाम की बैजिंग भी दी गई है। वहीं इसके इंटीरियर में भी प्रीमियम फीचर्स के साथ ही तीन रो सीट दी जाएंगी। जिससे यह जानकारी मिली है कि यह सात सीटों के विकल्प के साथ आएगी।

कहां होगी पोजिशन

फॉक्सवैगन की ओर से नई एसयूवी को टिगुआन आर लाइन के साथ ही पोजिशन किया जाएगा। टिगुआन आर लाइन को जहां पांच सीटों के साथ ऑफर किया जा रहा है वहीं टाइरॉन को सात सीटों के साथ ऑफर किया जाएगा।

कब तक हो सकती है लॉन्च

भारत के महाराष्ट्र के चंद्रपुर में इस एसयूवी को भारतीय टेंपरेरी नंबर प्लेट के साथ टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। जिससे यह उम्मीद की जा रही है कि इसे आने वाले कुछ महीनों में लॉन्च किया जा सकता है। लेकिन निर्माता की ओर से देने पर ही समयसीमा की जानकारी मिल पाएगी।

किनसे होगा मुकाबला

Volkswagen Tayron को डी सेगमेंट की एसयूवी के तौर पर लाया जाएगा, जिसमें सात सीटें दी जाएंगी। ऐसे में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, MG Gloster जैसी एसयूवी के साथ होगा।

टोयोटा फॉर्च्यूनर जैसी एसयूवी को चुनौती देने वाली स्कोडा कोडियाक की डिलीवरी हुई शुरु, जानें कितनी है कीमत और कैसे हैं फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कुछ समय पहले लॉन्च की गई Skoda Kodiaq एसयूवी की डिलीवरी को 12 मई 2025 से शुरू कर दिया गया है। इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स दिए जाते हैं। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। इससे किन एसयूवी को चुनौती मिलती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। यूरोप की प्रमुख वाहन निर्माता Skoda की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से कुछ समय पहले लॉन्च की गई Skoda Kodiaq एसयूवी की डिलीवरी को भी भारत में शुरू कर दिया है। इस एसयूवी में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन मिलता है। किस कीमत पर इसे खरीदा (Skoda Kodiaq SUV Launch) जा सकता है। बाजार में इससे किन एसयूवी को चुनौती मिलती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

शुरू हुई डिलीवरी

स्कोडा की ओर से कुछ समय पहले लॉन्च की गई Skoda Kodiaq की डिलीवरी को आज से देशभर में शुरू कर दिया गया है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक सेकेंड जेनरेशन एसयूवी को आज से घर ले जाया जा सकेगा।

कैसे हैं फीचर्स

Skoda Kodiaq एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, एलईडी टेल लाइट्स, एंबिएंट लाइट्स, ब्लैक इंटीरियर, 32.77 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, 13 स्पीकर कैंटन ऑडियो सिस्टम, पैनोरमिक सनरूफ, मल्टी जोन क्लाइमेट कंट्रोल, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, की-लैस एंट्री, पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, वायरलेस चार्जर, क्रूज कंट्रोल, मल्टी फंक्शन स्टेयरिंग व्हील, 360 डिग्री कैमरा, ड्राइविंग मोड्स, एबीएस, ईबीडी, नौ एयरबैग जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसमें 1976 लीटर का स्टोरेज स्पेस भी दिया गया है।

कितना दमदार इंजन

स्कोडा की इस नई एसयूवी में दो लीटर की क्षमता के इंजन को दिया गया है। जिसे टर्बो के साथ लाया गया है। इस इंजन से एसयूवी को 201 बीएचपी की पावर और 320 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसमें 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया गया है। इसके साथ ही इसमें 4X4 को भी दिया गया है। स्कोडा के मुताबिक एसयूवी को एक लीटर में 14.86 किलोमीटर चलाया जा सकता है।

कितनी है कीमत

स्कोडा कोडियाक की नई जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 46.89 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके साथ ही पांच साल या 1.25 लाख किलोमीटर की स्टैंडर्ड वारंटी को भी दिया जाता है। साथ ही 10 साल की रोड साइड असिस्टेंस को भी एसयूवी के साथ दिया जा रहा है।

किनसे है मुकाबला

स्कोडा की कोडियाक एसयूवी को डी सेगमेंट एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जा रहा है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner, MG Gloster, Volkswagen Tiguan R Line के साथ होता है। इसके अलावा इसे कई लग्जरी MPVs से भी चुनौती मिल सकती है।

मारुति एरिना की कारें अब हुईं ज्यादा सुरक्षित, इन कारों में स्टैंडर्ड तौर पर मिलेगी छह एयरबैग की सेफ्टी

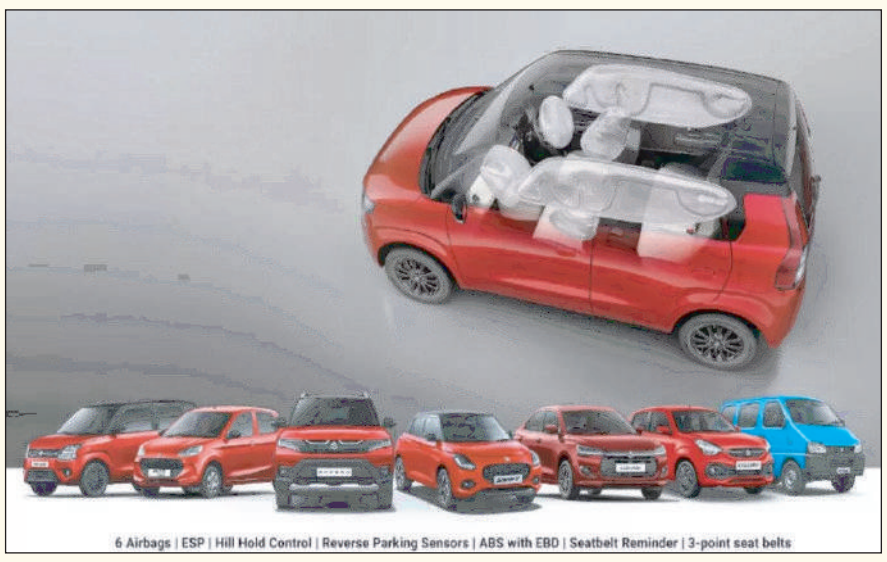

भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से अपनी कारों में सुरक्षा को बेहतर करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। इसी क्रम में Arena की कारों में किस तरह के अपडेट को दिया जा रहा है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से अपनी कारों को लगातार सुरक्षित बनाने पर काम किया जा रहा है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक किस तरह के सेफ्टी फीचर को एरिना डीलरशिप (Maruti Suzuki Arena Cars) की कारों में दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

ज्यादा सुरक्षित हुई एरिना डीलरशिप की कारें

मारुति सुजुकी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक अब एरिना डीलरशिप के जरिए ऑफर की जाने वाली कई कारें पहले से ज्यादा सुरक्षित हो गई हैं। निर्माता ने करीब सात कारों में स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग दिए हैं।

किन कारों को किया अपडेट

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक Maruti Alto K10, Maruti Celerio, Maruti Eeco, Maruti Swift, Maruti Wagon R, Maruti Dzire, Maruti Brezza को छह एयरबैग के साथ ऑफर किया जा रहा है।

किन कारों को बाद में किया अपडेट

मारुति की ओर से Alto K10, Celerio, Wagon R और Eeco को भी इस सेफ्टी फीचर के साथ हाल में ही अपडेट किया गया है। इसके पहले यह सेफ्टी फीचर स्टैंडर्ड तौर पर Maruti Swift, Dzire और Brezza में दिया जा रहा था।

मिल रहे ये सेफ्टी फीचर्स

छह एयरबैग की सेफ्टी के साथ ही कई और सेफ्टी फीचर्स को भी इन कारों में स्टैंडर्ड तौर पर ऑफर किया जा रहा है। जिनमें ईएसपी, हिल होल्ड असिस्ट, ईबीडी, एबीएस, थ्री पाइंट सीटबेल्ट और सीट बेल्ट रिमाइंडर जैसे फीचर्स शामिल हैं।

अधिकारियों ने कही यह बात

मारुति सुजुकी के सीनियर एग्जीक्यूटिव ऑफिसर पार्थो बैनर्जी ने कहा कि भारत का तेजी से विस्तारित आधुनिक सड़क बुनियादी ढांचा, हाई-स्पीड एक्सप्रेसवे और विकसित गतिशीलता पैटर्न यह संकेत देते हैं कि मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पहले कभी इतनी अधिक नहीं थी। मारुति सुजुकी में हम ग्राहकों की बदलती अपेक्षाओं से आगे रहने और उच्च-स्तरीय सुरक्षा को सुलभ बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। वैगनआर, ऑल्टो के10, सेलेरियो और ईको में 6 एयरबैग को मानक बनाने के निर्णय के साथ, हम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि सभी के लिए बढ़ी हुई सुरक्षा उपलब्ध हो। इन मॉडलों की अपार लोकप्रियता को देखते हुए, यह कदम बड़ी संख्या में मोटर चालकों के लिए सुरक्षा मानकों को काफी हद तक बढ़ाता है और देश भर में यात्रियों की सुरक्षा में समग्र रूप से योगदान देता है।

बैटरी, रेंज, फीचर्स और कीमत में किस एसयूवी को खरीदें

परिवहन विशेष न्यूज

एमजी विंडसर प्रो vs महिंद्रा एक्सयूवी 400 ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से हाल में ही MG Windsor Pro EV को लॉन्च किया गया है। जिसका सीधा मुकाबला Mahindra XUV 40 EV के साथ होता है। बैटरी मोटर फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में से किसे खरीदना आपके लिए सबसे बेहतर हो सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से छह मई 2025 को औपचारिक तौर पर MG Windsor Pro EV को लॉन्च किया गया है। इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला जनवरी 2025 में लॉन्च की गई Mahindra XUV 400 के साथ होगा। बैटरी, रेंज, मोटर, फीचर्स और कीमत के मामले में दोनों में से किस इलेक्ट्रिक गाड़ी को खरीदना आपके लिए ज्यादा बेहतर विकल्प साबित हो सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor Pro EV Vs Mahindra XUV 400 Battery and Range

JSW MG Windsor Pro EV में निर्माता की ओर से 52.9 KWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। जिसे सिंगल चार्ज में 449 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसे मिनट 60 किलोवाट के डीसी फास्ट चार्जर से 20 से 80 फीसदी सिर्फ 50 मिनट में चार्ज किया जा सकता है। इसमें लगी मोटर से इसे 136 पीएस की पावर और 200 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

वहीं Mahindra XUV 400 EV में 34.5 और 39.4 kWh बैटरी के विकल्प मिलते हैं। इनसे एसयूवी को सिंग चार्ज में 359 और 456 किलोमीटर तक की रेंज मिलती है। Mahindra XUV 400 EV में भी लगी मोटर से 310 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में इसे सिर्फ 8.3 सेकेंड का समय लगता है।

MG Windsor Pro EV Vs Hyundai Creta Electric Features

MG Windsor Pro EV में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें ड्यूल टोन इंटीरियर, V2L और V2V को भी दिया गया है। इसके अलावा इसमें एंबिएंट लाइट, इनफिनिटी ग्लास रूफ, फ्रंट सीट वेंटिलेशन, 15.6 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, चार स्पीकर, चार ट्विटर, सब वूफर, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस स्मार्टफोन चार्जर, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, वुडन फिनिश, 604 लीटर बूट स्पेस, एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, कनेक्टिड डीआरएल, पावर्ड टेलगेट, 18 इंच अलॉय व्हील्स, ग्लास एंटीना, फ्लश डोर हैंडल जैसे फीचर्स मिलते हैं।

वहीं Mahindra XUV 400 EV में 10.25 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ एलेक्सा, 10.25 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलैस एंड्राइड ऑटो, एपल कार प्ले, वायरलैस चार्जर, शॉर्क फिन एंटीना, क्रूज कंट्रोल, ऑटो डिमिंग आईआरवीएम, फ्रंट फॉग लैंप, चार स्पीकर और दो ट्विटर, 16 इंच डायमंड कट अलॉय व्हील, प्रोजेटर हैडलैंप, एलईडी डीआरएल, 55 से ज्यादा कनेक्टिड एप फीचर्स, रियर डिफॉगर और वॉशर, इलेक्ट्रिक सनरूफ, रियर व्यू कैमरा, रेन सेंसिंग वाइपर्स, ऑटो हैडलैंप जैसे फीचर्स मिलते हैं।

MG Windsor Pro EV Vs Mahindra XUV 400 Safety Features

JSW MG Windsor Pro EV में सुरक्षा का भी काफी ध्यान रखा गया है। इसमें छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल होल्ड असिस्ट, 360 डिग्री कैमरा, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर, ईएसपी, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, रेन सेंसिंग वाइपर, ऑटो डिमिंग इनसाइड रियर व्यू मिरर, फॉलो मी हेडलैंप, एलईडी कॉर्नरिंग लाइट, ईएसएस, सीट बेल्ट रिमाइंडर और आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज जैसे कई फीचर्स के साथ ही Level 2 ADAS को भी दिया गया है। ADAS के साथ ही इसमें 12 एडवांस सेफ्टी फीचर्स भी दिए गए हैं जिसमें ट्रैफिक जाम असिस्ट, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, लेन फंक्शंस, एफसीडब्ल्यू, आईएचबीए, आईएससी शामिल हैं।

वहीं Mahindra XUV 400 EV एबीएस, ईबीडी, छह एयरबैग, डीएटीसी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकर, टीपीएमएस जैसे सेफ्टी फीचर मिलते हैं।

MG Windsor Pro EV Vs Mahindra XUV 400 Price

JSW MG Windsor Pro को BaaS के साथ भी ऑफर किया जा रहा है। इसके साथ इसकी एक्स शोरूम कीमत 12.50 लाख रुपये रखी गई है। बैटरी के साथ इसकी इंट्रोडक्ट्री एक्स शोरूम कीमत 17.49 लाख रुपये रखी गई है। इस कीमत पर पहली आठ हजार बुकिंग्स की जाएंगी। इसके बाद गाड़ी की कीमतों में बदलाव किया जा सकता है।

वहीं Mahindra XUV 400 EV की एक्स शोरूम कीमत 17.49 लाख रुपये है।

विराट कोहली के पास हैं एक से बढ़कर एक गाड़ियां, लग्जरी के साथ ही स्पोर्ट्स कार भी गैराज में शामिल, जानें लिस्ट

परिवहन विशेष न्यूज

विराट कोहली कार कलेक्शन भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान Virat Kohli ने टेस्ट क्रिकेट से सन्यास की घोषणा कर दी है। टीम इंडिया के इस क्रिकेटर के पास दुनिया की कुछ सबसे महंगी और बेहतरीन कारें हैं। विराट की Car Collection में Bentley Audi जैसी कुछ खास कारें शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक विराट कोहली की कलेक्शन में कौन कौन सी कारें हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान Virat Kohli ने 12 मई 2025 को टेस्ट क्रिकेट से भी सन्यास लेने की घोषणा कर दी है। टीम इंडिया के इस बेहतरीन क्रिकेटर को सिर्फ अपना खेल ही पसंद नहीं है बल्कि कारों का भी काफी ज्यादा शौक है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक विराट की गैराज में कौन कौन सी बेहतरीन कारें शामिल (Virat Kohli luxury cars) हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

विराट के पास है ऑडी आर8

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक विराट की कलेक्शन में ऑडी की आर8 जैसी दमदार कार भी शामिल है। इसके लिमिटेड एडिशन वाली LMX कोहली के पास है। जिसकी दुनियाभर में सिर्फ 99 यूनिट्स ही ऑफर की गई थीं। यह दुनिया की पहली ऐसी कार थी, जिसमें लेजर हाई बीम लाइट्स को दिया गया। इसमें 5.2 लीटर की क्षमता का वी10 इंजन दिया गया है, जिससे 562 हॉर्स पावर के साथ 540 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

R8 के अलावा Audi A8 भी है कलेक्शन में शामिल

विराट कोहली के पास ऑडी की R8 के अलावा A8 भी कलेक्शन में शामिल है। ऑडी की ओर से बेहतरीन फीचर्स और लग्जरी के साथ इस कार को ऑफर किया जाता है। Audi A8 में तीन लीटर का वी6 माइल्ड हाइब्रिड इंजन दिया जाता है। जिससे 335 बीएचपी और 500 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। यह कार ऑल व्हील ड्राइव के साथ आती है और इसमें 8स्पीड टिपट्रॉनिक ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन मिलता है।

Bentley Continental GT

बेंटले की कॉन्टिनेंटल जीटी भी विराट की पसंदीदा कारों में से एक है। दमदार इंजन, बेहतरीन फीचर्स के साथ लग्जरी के लिए पहचानी जाने वाली यह कार चार लीटर वी8 और छह लीटर वी12 इंजन के विकल्प के साथ आती है। जिससे इसे 318 किलोमीटर प्रति घंटे और 336 किलोमीटर प्रति घंटे की टॉप स्पीड के साथ चलाया जा सकता है।

Range Rover Vouge

विराट कोहली की Car Collection में रेंज रोवर की एसयूवी भी शामिल है। रिपोर्ट्स के मुताबिक भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान के पास रेंज रोवर की Vouge एसयूवी है। ऑफ रोडिंग के साथ ही इस एसयूवी को बेहतरीन लग्जरी के लिए भी पहचाना जाता है। इसमें स्टैंडर्ड व्हीलबेस के अलावा लॉन्ग और सात सीटों वाले विकल्प मिलते हैं। इसके अलावा इस एसयूवी में तीन लीटर की क्षमता का इंजन मिलता है, जिससे 347 बीएचपी और 700 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसे पेट्रोल और डीजल दोनों तरह के इंजन के विकल्प के साथ लाया जाता है।

प्रसिद्ध महिला गणितज्ञ जिन्होंने दुनिया को बदल दिया है

विजय गर्ग

संभावना है कि आप शायद न्यूटन, आइंस्टीन और ट्यूरिंग के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन जब प्रसिद्ध महिला गणितज्ञों की बात आती है, तो उनकी उपलब्धियां कम जानी जाती हैं।

दुर्भाग्य से, एक स्टीरियोटाइप है जो आज भी प्रबल है कि गणित एक पुरुष विषय है और लड़कियां इसमें अच्छी नहीं हैं।

सौभाग्य से, हालांकि, यह सच्चाई से आगे नहीं हो सकता है, और इसलिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के जश्न में हमने दुनिया की कुछ महान प्रसिद्ध महिला गणितज्ञों की एक शानदार सूची को एक साथ रखा है जिन्हें आप पूरे वर्ष उपयोग कर सकते हैं।

गणित और इंजीनियरिंग में लैंगिक असमानता अपने 2013 के गार्जियन पोस्ट में 'ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में इतनी कम महिला मैथ्स प्रोफेसर क्यों हैं?', लुसी वार्ड ने कहा 'यहाँ कोई आसान राशि हैः अगर ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में मैथ्स के 94% प्रोफेसर पुरुष हैं, तो महिलाएं कितने प्रतिशत हैं?'।

सभी इंजीनियरों का 16.5% महिलाएं बनाती हैं। हालांकि 2010 के बाद से यह 6% की वृद्धि है, फिर भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

गणित में अधिक महिलाएं यह कक्षा में शुरू होता है यह विचार कि हमारे युवा शिक्षार्थियों को लग सकता है कि उन्हें संपर्क नहीं करना चाहिए या काम के किसी विशेष क्षेत्र के अनुकूल नहीं हैं, दिल दहला देने वाला है। शिक्षक के रूप में, हम चाहते हैं कि हमारे शिष्य महसूस करें कि वे कुछ भी कर सकते हैं। जो हम निश्चित रूप से नहीं चाहते हैं वह उनके लिए यह महसूस करना है कि वे अपने लिंग के कारण कुछ नहीं कर सकते हैं।

हमारी महिला शिक्षार्थियों को कभी भी ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए कि वे नहीं कर सकते हैं - या नहीं - गणित करें क्योंकि यह एक 'लड़के का विषय' है। ये धारणाएं हमेशा कम उम्र में शुरू होती हैं जिसका मतलब है कि उन्हें बदलना कक्षा में शुरू होना चाहिए।

1.। मरयम मिर्जाखानी, 1977-2017 मरियम ने क्या कियाः ईरानी मूल की मरियम मिर्जाखानी अपनी पीढ़ी के सबसे महान गणितज्ञों में से एक थीं, जो रीमन सतहों नामक गणितीय वस्तुओं की गतिशीलता और ज्यामिति के अध्ययन में असाधारण योगदान देती हैं।

वह स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर थीं और उन्होंने पीएच। हार्वर्ड विश्वविद्यालय से डी। 2014 में, वह पहली महिला थीं, और पहली ईरानी, जिन्हें एक फील्ड्स मेडल (जिसे गणित में उत्कृष्ट खोजों के लिए अंतर्राष्ट्रीय पदक के रूप में भी जाना जाता है) से सम्मानित किया गया था, उन्होंने कहा, ₹रीमन सतहों की गतिशीलता और ज्यामिति में उनके उत्कृष्ट योगदान और उनके मोडुली रिक्त स्थान₹।

मरियम का प्रभावः उनके काम का उनके क्षेत्र को आकार देने में बहुत प्रभाव पड़ा और उन्होंने अनुसंधान की नई सीमाओं को खोल दिया है जो अभी पता लगाना शुरू कर रहे हैं। वह हमें दिखाती है कि, यहां तक कि एक पुरुष-प्रधान क्षेत्र में, महिलाएं रोल मॉडल हो सकती हैं और अपनी खोजों के साथ आगे का रास्ता बना सकती हैं।

मरियम मिर्जाखानी एक प्रमुख महिला गणितज्ञ हैं

गणितज्ञ और शिक्षक मार्जोरी ली ब्राउन गणित में डॉक्टरेट हासिल करने वाली पहली अश्वेत महिला थीं। वह उत्तरी कैरोलिना केंद्रीय विश्वविद्यालय में संकाय में शामिल हो गए, कुछ ही समय बाद उसे पीएच प्राप्त करने के बाद । डी, जहां उसने तीस साल से अधिक समय तक पढ़ाया। उन्हें 1951 में वहां गणित विभाग की कुर्सी का नाम दिया गया था, जिसने उन्हें अपने क्षेत्र में कुछ शुरुआती कंप्यूटर उपयोग के लिए मार्गदर्शन करने की अनुमति दी थी।

मार्जोरी का प्रभावः उसने नोट किया कि एसटीईएम विषयों में काली महिलाओं के शामिल होने की कमी एक बहुत बड़ा सामाजिक मुद्दा था जिसे संबोधित करने की आवश्यकता थी और माना जाता था कि शिक्षा एक व्यवहार्य समाधान था। उन्होंने उन्नत गणित में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए अनुदान प्राप्त करने के लिए NCCU में विभाग की कुर्सी के रूप में अपनी स्थिति का लाभ उठाया और स्थानीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ अपना अधिकांश समय रैखिक बीजगणित के बारे में पढ़ाने, उन्हें उन्नत डिग्री प्राप्त करने और सुधार करने के लिए प्रोत्साहित किया। उत्तरी कैरोलिना में गणित शिक्षा का स्तर। महिला गणितज्ञों में प्रेरणादायक विश्वास और अधिक अच्छे के लिए दूसरों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रति उनके समर्पण ने उन्हें हर जगह स्टेम में महिलाओं के लिए एक आदर्श बनने में मदद की है।

"अगर मुझे फिर से अपनी ज़िंदगी जीनी होती तो मैं और कुछ नहीं करता. मुझे गणित बहुत पसंद है

7.। राहेल रिले राहेल ने क्या कियाः टेलीविजन प्रस्तुतकर्ता राहेल रिले ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में गणित का अध्ययन किया। 22 साल की उम्र में वह काउंटडाउन में शामिल हो गई, जहां वह अपने गणित कौशल को नियमित आधार पर लागू करती है, जटिल समस्याओं के समाधान खोजने के लिए अक्षरों और संख्याओं के दौर को संभालती है। वह 10 बिल्लियों में से 8 उलटी गिनती और गैजेट शो सहित अन्य शो पेश करने के लिए चली गई है, और यहां तक कि कड़ाई से आओ नृत्य पर एक प्रतियोगी के रूप में अभिनय किया!

राहेल का प्रभावः रिले ने वर्षों से कई स्कूलों का दौरा किया है ताकि बच्चों को ₹लागू गणित, क्वांटम यांत्रिकी और समय यात्रा की खुशियों₹ पर प्रेरित किया जा सके और एसटीईएम विषयों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ाई जा सके। उसने हमें दिखाया है कि अपने जुनून का पीछा करने और विश्वविद्यालय में गणित का अध्ययन करने से हमें विभिन्न रास्ते मिल सकते हैं, जिसमें टेलीविजन में कैरियर जैसे कम पारंपरिक लोग शामिल हैं!

"पुरुषों के गणित में महिलाओं की तुलना में बेहतर होने का कोई कारण नहीं है - यह सिर्फ हमारी धारणा के बारे में है

8। मलाला यूसुफजई मलाला ने क्या कियाः मलाला यूसुफजई महिला शैक्षिक अधिकारों के लिए एक पाकिस्तानी कार्यकर्ता हैं, और 17 साल की उम्र में नोबेल शांति पुरस्कार जीतने वाली सबसे कम उम्र की हैं! वह सक्रियता में भाग लेने लगी जब वह केवल 11 वर्ष की थी और बीबीसी के लिए ब्लॉग लिखना शुरू कर दिया था जिसमें बताया गया था कि तालिबान शासन के तहत जीवन कैसा था और दुनिया भर की लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा नाटकों पर उनकी मान्यताएं - और विशेष रूप से पाकिस्तान में।

अपने गृह प्रांत स्वात घाटी में तालिबान ने लड़कियों के स्कूल जाने पर रोक लगा दी थी. न्यूयॉर्क टाइम्स की डॉक्यूमेंट्री में प्रदर्शित होने के बाद, उन्होंने लड़कियों की शिक्षा पर एक वक्ता के रूप में वैश्विक मान्यता प्राप्त की, और तब से इस क्षेत्र में भारी बदलाव लाया है।

उन्होंने ए-लेवल गणित लिया और वर्तमान में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र (पीपीई) का अध्ययन कर रही हैं। उन्होंने कई पुरस्कार जीते हैं और उन्हें टाइम मैगज़ीन के 'दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों' में से एक का नाम दिया गया है!

मलाला का असरः मलाला के काम की प्रकृति के कारण उनके जीवन पर एक सुबह स्कूल जाने की कोशिश की गई। यह असफल रहा, और उसने अपने कारण के लिए अपनी लड़ाई को रोकने से इनकार कर दिया, महिलाओं के शैक्षिक अधिकारों के लिए भाषण और साक्षात्कार देना जारी रखा। उनकी कहानी ने संयुक्त राष्ट्र को दुनिया भर में सभी बच्चों की शिक्षा के लिए एक अभियान शुरू करने के लिए प्रेरित किया, जिसके कारण अंततः पाकिस्तान का पहला शिक्षा अधिकार विधेयक बन गया।

मलाला के बहादुर और निर्धारित कार्यों से पता चलता है कि महिलाओं के पास समकालीन सामाजिक मान्यताओं की परवाह किए बिना दुनिया को बदलने की शक्ति है और शिक्षा उस परिवर्तन के लिए एक बल हो सकती है! वह हमें यह भी दिखाती है कि शिक्षा एक विशेषाधिकार है, इसलिए, यदि हम गणित पर जाना चाहते हैं और अध्ययन करना चाहते हैं, तो हमें चाहिए!

"शिक्षा न तो पूर्वी है और न ही पश्चिमी। शिक्षा शिक्षा है और यह हर इंसान का अधिकार है

9। मयिम बियालिक मायिम ने क्या कियाः अमेरिकी अभिनेत्री मायिम बियालिक ने यूसीएलए में न्यूरोसाइंस का अध्ययन किया, जहां वह पीएच प्राप्त करने के लिए गई थी। 2007 में डी। वह डॉ के रूप में अपनी भूमिका के लिए जानी जाती हैं। कॉमेडी द बिग बैंग थ्योरी में एमी फाउलर, लेकिन अनगिनत अन्य टेलीविजन शो और फिल्मों में अभिनय किया है।

मायिम का प्रभावः अपने शुरुआती अभिनय करियर में सफलता के बावजूद, मायिम ने अभी भी विश्वविद्यालय में न्यूरोसाइंस का अध्ययन करने का फैसला किया क्योंकि उन्हें इस विषय के लिए जुनून था। वह एसटीईएम विषयों में महिलाओं की भागीदारी में दृढ़ता से विश्वास करती है और इन विषयों को आगे बढ़ाने के लिए लड़कियों को प्रोत्साहित करने वाले विषय पर घटनाओं पर बात की है। वह बास और तुरही भी खेलती है

10। मैरी सोमरविले, 1780-1872 मैरी ने क्या कियाः मैरी ने उस समय खुद को गणित सिखाया जब लड़कियों के लिए शिक्षा को उतना महत्वपूर्ण नहीं समझा गया था। 1827 में, मैरी को फ्रांसीसी गणितज्ञ, पियरे लाप्लास द्वारा एक पुस्तक का अनुवाद करने के लिए कहा गया था। उसका काम तत्काल सफलता थी।

मैरी का प्रभावः मैरी ने जीवन भर बहुत सारे महत्वपूर्ण शोध किए और उन्हें अपने काम के लिए कई सम्मान दिए गए। उसका काम इतना महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध था कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में सोमरविले कॉलेज वास्तव में उसके नाम पर है!

11। ऑगस्टा एडीए बायरन, 1815-1852 ऑगस्टा ने क्या कियाः जब एडा एक किशोरी थी, तो उसे मैरी सोमरविले के अलावा किसी और ने सलाह नहीं दी थी! ऑगस्टा को मैथ्स में अविश्वसनीय रूप से उपहार में दिया गया था और एक वयस्क के रूप में चार्ल्स बैबेज के साथ एक इतालवी संस्मरण का अनुवाद करने के लिए काम किया था। संस्मरण एक 'विश्लेषणात्मक इंजन' (एक मशीन जो सरल गणित कर सकती थी - पहले कंप्यूटरों में से एक) के बारे में था।

ऑगस्टा का प्रभावः ऑगस्टा ने सिर्फ संस्मरण का अनुवाद करने से अधिक किया। उसने मशीन के लिए नोटों का अपना संस्करण बनाया और यहां तक कि अधिक कठिन समीकरणों की गणना करने का एक तरीका भी शामिल किया। यह अब दुनिया के पहले कंप्यूटर कार्यक्रमों में से एक माना जाता है।

12 एमी नोथर एमी ने क्या कियाः एमी ने विश्वविद्यालय में मैथ्स की पढ़ाई करने वाली महिलाओं के खिलाफ नियमों के कारण अपनी शिक्षा में देरी की थी। वह बहुत चालाक थी, हालांकि बहुत चालाक थी और अंततः बीजगणित में पीएचडी की। वह मैथ्स प्रोफेसर बनीं और कई गणितीय नियम विकसित किए।

एमी का प्रभावः उनके गणितीय नियमों के कारण अन्य गणितज्ञ - आइंस्टीन की तरह - गणित को आगे भी आगे बढ़ाने में सक्षम थे। हम आज एक समाज के रूप में स्मार्ट के रूप में अगर यह एमी Noether के काम के लिए नहीं थे!

13। फ्लोरेंस नाइटिंगेल, 1820-1910 फ्लोरेंस ने क्या कियाः वह एक नर्स होने के लिए प्रसिद्ध है जो करुणा और आधुनिक नर्सिंग के संस्थापक से भरा था। जो कम जाना जाता है वह यह है कि फ्लोरेंस एक सांख्यिकीविद् था जिसने युद्ध के दौरान मृत्यु दर में भारी कटौती करने के लिए अपने काम का इस्तेमाल किया था।

फ्लोरेंस का प्रभावः जब फ्लोरेंस क्राइमिया युद्ध में एक नर्स बनने के लिए गई थी, तो उसने यह दिखाने के लिए आंकड़ों का इस्तेमाल किया कि बहुत सारे सैनिक लड़ने के बजाय अस्पतालों की स्थितियों के कारण मर रहे थे। फ्लोरेंस के आंकड़ों के इस्तेमाल से सरकार को यह दिखाने में मदद मिली कि लोग क्यों मर रहे हैं। नतीजतन उसने सेना और घर दोनों में मृत्यु दर को कम करने में मदद की।

विशेष रूप से उसने बहुत सारे अभिनव रेखांकन और चार्ट विकसित किए जिन्होंने राजनेताओं के लिए आंकड़ों को समझना आसान बना दिया। इस समय से पहले इस तरह से आंकड़ों का प्रतिनिधित्व करना आम नहीं था।

14। डोरोथी जॉनसन वॉन, 1910-2008 डोरोथी ने क्या कियाः डोरोथी जॉनसन वॉन एक अफ्रीकी अमेरिकी गणितज्ञ और कंप्यूटर प्रोग्रामर थे जिन्होंने एयरोनॉटिक्स (एनएसीए) और नासा के लिए राष्ट्रीय सलाहकार समिति के लिए काम किया था। उन्होंने अमेरिकी अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुरुआती चरणों में बहुत योगदान दिया।

डोरोथी का प्रभावः उसे एक ₹मानव कंप्यूटर₹ माना जाता था क्योंकि उसने एयरोस्पेस इंजीनियरों के लिए जटिल कम्प्यूटेशन और विश्लेषण डेटा का प्रदर्शन किया था। वह एनएसीए में पहली अफ्रीकी अमेरिकी प्रबंधक थीं (जो बाद में नासा बन गईं)।

आईएएस/आईपीएस अधिकारी बनने के लिए सबसे पहले संबंधित बच्चे के माता-पिता को जागरूक होना होगा। यह आवश्यक है।

यदि आप अपने बच्चे को आईएएस अधिकारी बनाने की आकांक्षा रखते हैं, तो आपको यह याद रखना चाहिए कि आपका बच्चा कई वर्ष पहले से ही प्रासंगिक परीक्षा की तैयारी और योजना बनाना शुरू कर देगा, जिसमें सही विषयों का चयन, सही विषय-वस्तु, योग्य मार्गदर्शन या कोचिंग तथा एक विशिष्ट समय-सीमा को ध्यान में रखा जाएगा। फिर इसमें कोई संदेह नहीं कि सफलता अवश्य ही बच्चे के कदम चूमेगी। आइए जानते हैं देश की प्रशासनिक सेवा में अधिकारी बनने के लिए यानि आईएएस अधिकारी बनने के लिए कैसे तैयारी की जा सकती है।

माता-पिता की जागरूकता आवश्यक है

आईएएस अधिकारी बनने के लिए सबसे पहले संबंधित बच्चे के माता-पिता का जागरूक होना जरूरी है। केवल जागरूक माता-पिता ही अपने बच्चों की क्षमताओं और रुचियों का आकलन कर सकते हैं और उन्हें सही स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और सही विषयों का चयन करने में मदद कर सकते हैं, जिससे संबंधित उम्मीदवार के लिए उक्त परीक्षा की तैयारी के लिए एक मजबूत आधार तैयार हो सके। अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को आईएएस, आईपीएस या आईएफएस सेवाओं में प्रवेश दिलाने का सपना देखते हैं, लेकिन उनके पास इस क्षेत्र में सफल होने के लिए सही जानकारी नहीं होती है। आइए, अपने बच्चे को उचित मार्गदर्शन प्रदान करके उक्त परीक्षा की तैयारी कैसे शुरू करें, इस बारे में सही जानकारी प्राप्त करें।

विषयों का चयन

जो माता-पिता अपने बच्चे को सिविल सेवा परीक्षा के लिए तैयार करना चाहते हैं, उन्हें सबसे पहले यह समझना होगा कि उनके बच्चे को दसवीं कक्षा के बाद कौन से विषय चुनने चाहिए। उन्हें 10वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद कला संकाय को प्राथमिकता देनी चाहिए, जो सिविल सेवा में सफलता की सीढ़ी पर पहला पायदान है, क्योंकि कला संकाय सर्वश्रेष्ठ है। कला संकाय में इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, हिंदी तथा कुछ अन्य आसान लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पढ़ाए जाते हैं, जो सिविल सेवा के क्षेत्र में सफलता के लिए सहायक सिद्ध होते हैं। सिविल सेवा परीक्षा का 70 प्रतिशत पाठ्यक्रम इन्हीं विषयों से आता है। इसके साथ ही पर्यावरण विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान, समसामयिक मामले आदि का ज्ञान प्राप्त होता है, साथ ही नैतिकता, ईमानदारी, बुद्धिमत्ता आदि का भी ज्ञान होता है, जिससे भाषा और लेखन कौशल में भी वृद्धि होती है। दूसरी ओर, जो छात्र विज्ञान या वाणिज्य से संबंधित विषय चुनते हैं, वे भी सिविल सेवा परीक्षा में शामिल हो सकते हैं, लेकिन उन्हें कला से संबंधित कुछ विषयों के लिए अलग से तैयारी भी करनी होती है।

अध्ययन रणनीति

सबसे पहले संबंधित छात्र को अपनी दिनचर्या सही करनी होगी। पांच या छह घंटे की स्कूली पढ़ाई के बाद एक या दो घंटे स्व-अध्ययन के लिए, 30 मिनट समसामयिक विषयों की तैयारी, समाचार-पत्र, वीडियो पॉडकास्ट के लिए तथा 15 मिनट लेखन अभ्यास के लिए निर्धारित करें, अर्थात दैनिक समाचार या अपने विचार का उपयोग आत्म-अवलोकन के लिए करें। इसके साथ ही कक्षा 6 से 12 तक की एनसीईआरटी की पुस्तकों का गहन अध्ययन करें, विशेषकर भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि विषयों का। यह आपकी नींव को मजबूत करने का काम करेगा। यह तो सभी जानते हैं कि यदि नींव मजबूत होगी तो मकान की स्थिरता भी मजबूत होगी।

एक माइंड मैप और फ्लो चार्ट बनाएं

इसके साथ ही, एक माइंड मैप और फ्लो चार्ट बनाएं। अब विद्यार्थी सोच रहे होंगे कि यह माइंड

मैप क्या है? माइंड मैप एक चित्र या आरेख है जो किसी विचार, विषय या सूचना को केन्द्र में रखता है तथा संबंधित विचारों या अवधारणाओं को विभिन्न कोणों से, जैसे शाखाओं से, दिखाता है। यह मन के विचारों को व्यवस्थित करने का एक तरीका है। फ्लोचार्ट भी एक ग्राफिकल प्रस्तुति है जो किसी प्रक्रिया या कार्य के निष्पादन का चरण-दर-चरण अनुक्रम दिखाता है। सिविल सेवा की तैयारी के लिए माइंड मैप बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें विषय, उपविषय और दैनिक कार्य जोड़े जाते हैं।

समाचारपत्रों और पत्रिकाओं से सहायता लें।

सिविल सेवा की तैयारी के लिए अनेक यूट्यूब चैनल उपलब्ध हैं तथा इसके साथ ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं को पढ़ें तथा उनमें उल्लिखित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर लेखों को ध्यानपूर्वक समझें, उनकी शैली एवं शब्दावली सीखें तथा अपने लेखन कौशल को प्रभावी बनाएं। किसी दिए गए विषय पर प्रभावी निबंध लिखना सिविल सेवा परीक्षा में सफलता पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अपनी योग्यताओं और रुचियों को पहचानें।

अपने अधूरे सपनों और आकांक्षाओं को अपने बच्चों पर थोपना तथा उन्हें उनकी रुचियों और क्षमताओं के विपरीत कोई कोर्स करने या प्रतियोगी परीक्षा में बैठने के लिए मजबूर करना, उनके भीतर मौजूद प्राकृतिक प्रतिभा और बुद्धिमत्ता के साथ अन्याय होगा। यदि आपका बच्चा आईएएस बनने में रुचि रखता है और उसका बौद्धिक और शैक्षणिक स्तर औसत से ऊपर है, तो उसे यहां आने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित जरूर करें, लेकिन याद रखें कि बच्चे पर किसी भी तरह का दबाव न डालें। उसे उचित मार्गदर्शन दें, आवश्यकतानुसार उसकी कोचिंग की व्यवस्था करें, तथा उसकी सम्पूर्ण समय-सारिणी की योजना अच्छी तरह बनाएं, सभी गतिविधियों के लिए समय और स्थान आवंटित करें। दसवीं कक्षा के बाद ही बच्चे को समझाएं कि सिविल सेवा परीक्षा के तीन स्तर होते हैं, जिनमें पहला स्तर प्रारंभिक परीक्षा है, जिसमें विभिन्न विषयों से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाते हैं तथा कुछ विषयों पर निबंध भी पूछा जाता है। दूसरे स्तर की परीक्षा को मुख्य परीक्षा कहा जाता है और इसमें विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न शामिल होते हैं और अंत में साक्षात्कार यानी मौखिक परीक्षा आयोजित की जाती है। उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर आप अपने बच्चे को पूरी जानकारी के साथ सिविल सेवा के क्षेत्र में भेज सकते हैं।

ऑटोमोबाइल निर्माण

भारत का ऑटोमोबाइल उद्योग जिस तेजी से तरक्की कर रहा है वह उल्लेखनीय है। हर साल वह बढ़ोतरी की नई इबारत लिख रहा है। 1982 में भारत में जब मारुति कार अस्तित्व में आई तो जनता ने उसमें बहुत दिलचस्पी दिखाई और वह जन-जन की कार बन गई। नब्बे के दशक में नरसिंह राव के आर्थिक उदारीकरण ने जैसे कि उसमें पंख लगा दिए। उसके बाद कई और विदेशी कंपनियां कार निर्माण के क्षेत्र में आ गईं तो टू व्हीलर के क्षेत्र में भारतीय कंपनी हीरो ने जापानी कंपनी होंडा के साथ मिलकर इस क्षेत्र में भारत को शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया। एक के बाद एक विदेशी कंपनियों ने देश में कदम रखा और वाहन निर्माण का काम बढ़ता चला गया। देश के जीडीपी के विकास में हमारे ओटोमोबाइल उद्योग का बहुत बड़ा योगदान रहा। कोरियाई, जापानी ऑटोमोबाइल कंपनियों को भारत निवेश के लिहाज से माकूल लगा और उन्होंने करोड़ों डॉलर का निवेश किया। लेकिन सिर्फ विदेशी ही नहीं भारत की सबसे बड़ी ऑटोमोबाइल कंपनी टाटा मोटर्स तथा महिंद्रा एंड महिंद्रा भी तेजी से आगे बढने लगी। इसका नतीजा हुआ कि 2024 तक भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल उत्पादक देश बन गया। 22 लाख करोड़ की इस इंडस्ट्री ने 4.5 करोड़ लोगों को रोजगार दे रखा है। यहां बने दोपहिया वाहनों का तो 50 फीसदी निर्यात हो जाता है। यह इंडस्ट्री देश को बड़े पैमाने पर जीएसटी भी देती है। लग्जरी कारों में 28 फीसदी जीएसटी लगता है जिससे सरकार की खूब कमाई होती है। भारत में जिस तेजी से इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास हुआ है, वह उल्लेखनीय है।

पूरे देश में सडक़ों का जाल तैयार हो गया है। 2023-24 में देश के अंदर में हर दिन 33 किलोमीटर से अधिक नेशनल हाइवे का निर्माण हुआ है। केंद्रीय सडक़ परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक 2023-24 में कुल 12349 किलोमीटर नेशनल हाइवे बने हैं। सडक़ परिवहन मंत्रालय की महत्वाकांक्षी योजना है कि वह हर दिन 100 किलोमीटर हाइवे बनाए। इससे भारत अमेरिका को टक्कर देने की स्थिति में पहुंच जाएगा। देश में सडक़ें तेजी से बन रही हैं और इस कारण से वाहनों की बिक्री भी बढ़ रही है। अब कहीं भी सडक़ मार्ग से जाना आसान होता जा रहा है। देश की राजधानी दिल्ली से यहां की वित्तीय राजधानी मुंबई तक पहले कारों से लोग नहीं जाया करते थे। उसमें 24 घंटे तक की थका देने वाली यात्रा करनी होती थी, लेकिन अब यह 1350 किलोमीटर की दूरी महज 12 घंटे में की जा सकती है। इस तरह की कई सडक़ें बन गई हैं जिनसे अपने गंतव्य पर पहुंचने में अब आधा समय लगता है और कम ईंधन फुंकता है। इससे सडक़ परिवहन को बढ़ावा मिला है और वाहनों की बिक्री भी बढ़ी है। देश में इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। विदेशी कंपनियों के अलावा भारतीय कंपनियां टाटा और महिंद्रा के अलावा दो पहिया बनाने वाली कई कंपनियां इलेक्ट्रिक वाहन बनाने लगी हैं। भारत में बनी कारें चीनी कार बावायडी या फिर इलोन मस्क की टेस्ला से काफी सस्ती हैं। इस वजह से इनकी बिक्री भी खूब बढ़ रही है। भारत में काम कर रही अन्य कार निर्माता कंपनियां जैसे मारुति, हुंडई, एमजी वगैरह भी इलेक्ट्रिक कारें बना रही हैं। इससे इसके बाजार में विस्तार हुआ है और लोगों में दिलचस्पी बढ़ी है। फिलहाल परंपरागत कारों के साथ-साथ इन कारों की बिक्री भी बढ़ रही है। सबसे बड़ी बात है कि इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। खेती से दोपहिया वाहनों की भी बिक्री बढ़ी है।

पंछियों की टोली

अक्षर, पांखी, मानव और देवांश आज बहुत खुश थे। ये चारों दोस्त अपने-अपने परीक्षा परिणामों को हाथ में लिए एक दूसरे के साथ आइसक्रीम खाते हुए गपशप कर रहे थे। सभी अच्छे नतीजों से पास हुए थे। वे अब सोच रहे थे कि छुट्टियों का मजा कहां और किस तरह लिया जाए! 'पांखी! तुम कहां जाने वाली हो?' मानव ने पूछा। 'मेरे पापा अभी टूर पर गए हुए हैं, जैसे ही वापस आएंगे हम प्लान बनाएंगे' - पांखी ने बताया।

'मुझे भी अभी नहीं पता', मानव ने कहा। देवांश तुम्हें पता.. मैं कहां जाने वाला हूं!' अक्षर बोल पड़ा। फिर बोला- 'मुझे इस बार अपने गांव में दादा-दादी, चाचा- चाची के पास जाने का मौका मिलेगा। मुझे वहां बहुत अच्छा लगता है। खूब खेलने को मिलता है। दादा-दादी बहुत प्यार करते हैं और चाचा मुझे रोज नई-नई चीजें दिखाते हैं। कोई मुझे रोकता टोकता नहीं! बहुत सारी चीजें मेरे लिए बनती हैं।' अक्षर ने बड़ी खुशी से झूमते हुए बताया। वहां मेरे दोस्त भी बन गए और मेरी चचेरी बहन प्रिया भी मेरे साथ खेलती है।'

'लेकिन मैं छुट्टियों में एक्टिविटी क्लासेस जाऊंगा। मुझे नई-नई चीजें बनाने का शौक है'। देवांश बोला। थोड़ी देर में सभी एक-दूसरे को अलविदा कह कर, अपने-अपने घर चले गए।

'अक्षर, तुम अपना सामान अच्छी तरह से पैक करना। हम कल ही गांव के लिए निकल रहे हैं। कोई चीज भूलना नहीं!- मां ने हिदायत देते हुए कहा।

गांव पहुंचते ही अक्षर झूम उठा। इतनी हरियाली! दादी के घर इतने सारे पंछियों की टोली! अक्षय ने देखा गौरैया, मैना, कबूतर, रंग बिरंगी चिड़िया सब के सब जैसे दादी के घर मेहमान बने हुए थे!' अक्षर! वहां खड़ा टुकुर टुकुर ताक रहा है! यहां भी आएगा कि नहीं!' - दादी ने प्यार से आवाज लगाई। अक्षर ने दादी के पैर छूते हुए आश्चर्य मिश्रित खुशी से पूछा, 'दादी!

इतने सारे पंछी हमारे घर पर!' 'हां बेटा! ये एक राज है।

तुम्हें बताऊंगी।' दादी मुस्कुराई। अगली सुबह पंछियों के कलरव से अक्षर उठा और आंगन में पहुंचा, तो देखा दादी सबको दाना डाल रही है। अक्षर को देखा तो बोली- 'आजा! तू भी दाना डाल दे और कल से पानी सकोरे में रखना।'

'ठीक.. दादी' - अक्षर जम्हाई लेते हुए बोला।

शाम को चाचा के साथ प्रिया और अक्षर घूमने निकल x पड़े। गांव की सुंदर पगडंडियों, हरी-भरी फसलों से गुजरते हुए अक्षर को डूबता सूरज बड़ा सुहावना लगा। रास्ते में चाचा उसे विभिन्न पेड़-पौधों की बुआई कटाई के बारे में समझाते जा रहे थे। प्यास लगी तो प्रिया ने झट से ठंडे पानी की बोतल अक्षर को पकड़ा दी और एक पत्थर की बेंच पर बैठकर सभी ने गन्ने तोड़ कर खाए।

दूसरे दिन सुबह अक्षर को उठने में देर हो गई। चाची ने कहा- 'आओ! अक्षर बेटा.. गरमा-गरम आलू परांठे और अभी बनाई ताजी छाछ का नाश्ता कर लो।' नाश्ता करके अक्षर अपने क्रिकेट का बल्ला

उठाकर बैग में दस्ताने और पानी की बोतल डाल कर अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने मैदान पहुंच गया। घर पर दादी आज थोड़ा निश्चिंत थीं कि अक्षर ने पंछियों को दाना-पानी दे दिया होगा। पर अक्षर को तो आदत नहीं थी, सो भूल गया और खेल में मस्त खेलते-खेलते गर्मी और जोर की प्यास लगी तो अक्षर ने बैग खोला तो देखा कि पानी की बोतल तेजी से बैग फेंकने की वजह से खुल गई थी और सारा पानी फैल चुका था। हैरान-परेशान, प्यासा अक्षर घर पहुंचा और चिल्लाया- 'मुझे जोर से प्यास लगी है मां! ठंडा पानी दो।'

मां सुन नहीं पाई तो दादी ने आकर पानी का गिलास पकड़ाया और पूछा-'आज तो तूने दादी का काम संभाला! पंछियों को दाना-पानी दिया न!' सुनकर अक्षर की नजरें झुक गई बस इतना ही कह पाया 'नहीं दादी' तभी प्रिया ने आकर बताया कि

उसने तश्तरी और पानी का सकोरा खाली देखा तो उसमें दाना-पानी डाल दिया था। दादी ने अक्षर को झिड़कते हुए कहा, 'अक्षर ये पंछी जो तुम्हें इतने अच्छे लगे, यह सभी हमारे घर पर दाना-पानी लेने आते हैं। हम बड़े प्यार से इन्हें दाना पानी देते हैं क्योंकि ये सभी हमारे पर्यावरण के लिए बहुत जरूरी हैं और सब की बड़ी अहमियत है। इतनी गर्मी में इन्हें भी प्यास लगती है। जब इन्हें कहीं पानी मिल जाता है तो ये भी तुम्हारी तरह खुश हो जाते हैं। ये बेजुबान पंछी कुछ नहीं कहते, लेकिन हमारे पर्यावरण मित्र हैं। इनकी देखभाल करना, इनकी संख्या धरती पर कायम रखने में अगर हमारी छोटी सी कोशिश जारी रहेगी तो मानवता और पर्यावरण का बड़ा हित है। तुमने वह कहानी तो पढ़ी होगी न कि एक नन्ही लड़की रोज कौवों को दाना डालती तो वह भी उसे रोज एक तोहफा कभी मोती, सीप, सिक्के, मूल्यवान वस्तुएं दे जाते! ये पंछी हमारे एक गुना प्यार को कई गुना करके लौटाते हैं। इनकी देखभाल और इनसे प्यार करना हमारा भी कर्त्तव्य है'। दादी ने समझाया।

'हां दादी! आज मैंने जाना कि पानी न मिलने पर गर्मी में हमारा क्या हाल होता है! आज से मैं हर सुबह दाना पानी दूंगा। मैं अपनी मां से कहूंगा कि वह मुझे पंछियों का दाना और सकोरे लाकर दे। मैं शहर जाकर पंछी मित्रों को अपने घर बुलाकर देखभाल करूंगा।' दादी ने अक्षर को प्यार से गले लगा दिया।

जब छुट्टियों के बाद चारों दोस्त मिले तो सब ने अपनी-अपनी कहानी सुनाई कि गर्मी की छुट्टियां कैसे बिताई! अक्षर ने भी अपनी दादी की बातें और पंछी मित्रों की कहानी सुनाई। बच्चे खुश होकर बोले- 'हां यह बहुत अच्छी बात है। हम सभी यह काम जरूर शुरू करेंगे। पंछी हमारे घर भी टोलियां बनाकर मेहमान बनने आएंगे। बड़ा मजा आएगा।' सब के चेहरे खिल पड़े।

वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया 13 मई को देवर्षि नारद जयंती पर विशेष

मूल्यपरक आदर्श पत्रकारिता के जनक देवर्षि नारद

सुशील कुमार 'नवीन'

वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया 13 मई को देवर्षि नारद जयंती है। देवर्षि, ब्रह्मनंदन, वीणाधर, सरस्वतीसुत और कलिप्रिय आदि नाम से जाने वाले महर्षि नारद ब्रह्मांड के प्रथम संदेशवाहक और आद्य पत्रकार हैं।

श्रुतचारित्रयोर्जातो यस्याहन्ता न विद्यते।
अगुप्तश्रुतचारित्रं नारदं तं नमाम्यहम्।

जो ज्ञान और चरित्र से उत्पन्न हुए हैं, जिनमें अहंकार नहीं है। जो अपने ज्ञान और चरित्र को नहीं छिपाते, ऐसे हैं नारद मुनि।

सूचना प्रौद्योगिकी के काल में जन्म लेने वाले हम लोगों के लिए आज विश्व के किसी भी कोने में संपर्क करना बड़ा सहज है। प्राचीनकाल में सूचना, संवाद, संचार का प्रमुख साधन मौखिक ही होता था। वो भी या तो सामने हो, या किसी संदेशवाहक के माध्यम से संदेश पहुंचाया जाए। समय परिवर्तन हुआ तो मौखिक के साथ-साथ लिखित संदेशों का आदान-प्रदान शुरू हुआ। तीर्थ, यज्ञादि बड़े कार्यक्रमों में एकत्रीकरण भी संदेशों के लिए प्रयोग होते थे। आज समय बदल चुका है। ऐसी स्थिति में नारद जयंती पर जगह-जगह होने वाले कार्यक्रम राष्ट्रीय दृष्टिकोण से मीडिया के प्रबोधन में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा में विभिन्न ग्रंथों में महर्षि नारद का उल्लेख पढ़ने को मिलता है। शास्त्रों में कहा गया कि वे ब्रह्मा जी के मानस पुत्र है, भगवान विष्णु जी के भक्त और बृहस्पति जी के शिष्य है। इन्हें एक लोक कल्याणकारी संदेशवाहक और लोक-संचारक के रूप में भी विशेष तौर पर जाना जाता है। देवर्षि नारद जी के लिए 'आचार्य पिशुनः' का उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कई बार आया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत के शब्दकोशों में भी 'आचार्य पिशुनः' का अर्थ देवर्षि नारद, सूचना देने वाला, संचारक, सूचना पहुंचाने वाला, सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक देने वाला है। आचार्य का अर्थ, गुरु, शिक्षक, यज्ञ का मुख्य संचालक, विद्वान आदि है। इन दोनों शब्दों का अर्थ हुआ, सूचना देने वाला विद्वान अथवा विज्ञ पुरुष। इस अर्थ का संयुक्त उपयोग संस्कृत साहित्य में जिसके लिए किया गया, वे हैं देवर्षि नारद जी।

देवर्षि नारद जी के पत्रकारिता व्यवहार को स्पष्ट करता एक और प्रसंग है। ब्रहमाजी के पुत्र दक्ष के सौ पुत्र हुए और सभी पुत्रों को सृष्टि बढ़ाने का आदेश मिला। ब्रहमाजी के मानसपुत्र और दक्ष के भाई नारद ने सभी दक्ष पुत्रों को सृष्टि से अलग कर तप में लगा दिया। दक्ष ने पुनः अपने पुत्रों को सृष्टि का आदेश दिया। किंतु, इन दक्ष पुत्रों को भी नारद जी ने सृष्टि के स्थान पर तपस्या में लगाया। इससे क्रोधित होकर उन्होंने नारद जी को श्राप दिया कि सदा विचरण करेंगे, कहीं अधिक समय तक नहीं रुकेंगे एवं एक स्थान की सूचना दूसरे स्थान पर पहुंचाएंगे। देवर्षि नारद ने इन तीनों श्रापों को लोकहित में स्वीकार किया।

अरतिक्रोधचापल्ये भयं नैतानि यस्य च।
अदीर्घसूत्रं धीरं च नारदं तं नमाम्यहम्॥

जिनमें क्रोध, भय और जल्दबाजी नहीं है, जो धैर्यशाली है। जिनके कार्य सुदृढ़ हैं। इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे नारद मुनि सदैव वंदनीय रहेंगे।

आज के संदर्भ में नारद जयंती की प्रासंगिकता की बात करें तो आधुनिक भारत के प्रथम हिंदी साप्ताहिक 'उदन्त मार्तण्ड' 30 मई 1826 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। इस दिन वैशाख कृष्ण द्वितीया, नारद जयंती थी। प्रथम अंक के प्रथम पृष्ठ पर सम्पादक ने लिखा था, "देवऋषि नारद की

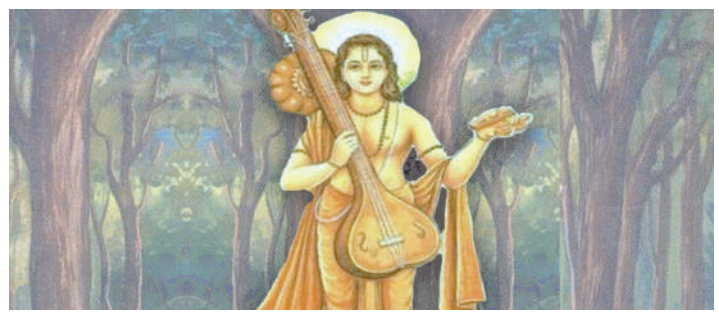

जयंती के शुभ अवसर पर यह पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है क्योंकि नारद जी एक आदर्श संदेशवाहक होने के नाते उनका तीनों लोक (देव, मानव, दानव) में समान सहज संचार था।"

वास्तव में, इतिहास के पन्नों को उलट कर देखें तो सूचना संचार (आधुनिक भाषा में कम्युनिकेशन) के क्षेत्र में उनके प्रयास अभिनव तत्पर और परिणामकारक रहते थे। उनके प्रत्येक परामर्श तथा वक्तव्य में लोकहित प्राथमिक रहता था। इसलिए अतीत से लेकर वर्तमान सहित भविष्य में सभी लोकों के सर्वश्रेष्ठ लोक संचारक अगर कोई है तो वह देवर्षि नारद जी ही है। महर्षि नारद को सबसे बड़ा समाचार दाता माना जाता है। प्राचीन काल से ही समाचार गुप्तचरों द्वारा प्राप्त किए जाते थे। रामायण और महाभारत में समाचार दाताओं के नाम मिलते हैं। रामायण में सुमुख गुप्तचर वेष में समाचारों को राम तक पहुंचता है। महाभारत में संजय की भूमिका भी समाचारदाता के रूप में मिलती है।

आदि पत्रकार नारदजी ने वर्तमान के पत्रकारों के लिए जो मानक रखे हैं, उनका भी विश्लेषण आज की पत्रकारिता के लिए आवश्यक है। माया के ज्ञान के लिए स्त्री का रूप धारण करना अनुभवात्मक पत्रकारिता व्यवहार का श्रेष्ठ उदाहरण है। उन्होंने मृत्यु का भी जीवनवृत्त लिखा है, जो दुनिया में अन्यत्र नहीं है। धर्म की रक्षा एवं सदाचारण के लिए श्री सत्यनारायण कथा की प्रेरणा दी। महाभारत के पश्चात महर्षि वेदव्यास को शांति एवं संतोष के लिए भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र का गुणगान करने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रेरणा के परिणामस्वरूप महर्षि वेदव्यास ने 'श्रीमद्भागवत' का लेखन किया।

आदि पत्रकार नारद जी ने सृष्टि के प्रारम्भ में ही पत्रकारिता के समक्ष जो आदर्श एवं स्वरूप प्रस्तुत किया वे अनुपम हैं। हमें आदि पत्रकार के रूप में महर्षि नारद के योगदान को सदैव याद रखना चाहिए। उन्होंने महान विपत्ति से मानवता की रक्षा का कार्य किया। इसका बड़ा उदाहरण अर्जुन को दिव्यास्त्रों का परीक्षण करने से रोकना है। उनके अनुसार दिव्यास्त्र परीक्षण व प्रयोग की वस्तु नहीं । इसका उपयोग आसुरी शक्तियों से सृष्टि की रक्षा करने के लिए हो।

सोशल मीडिया के दौर में तो नारदीय परंपरा और भी प्रासंगिक है। समय के साथ-साथ कुछ उच्च आदर्श स्थापित हो जाते हैं। कालांतर में उस कार्य में लगे लोग उनका उदाहरण देने लगते हैं। वो आदर्श कितने सही और गलत है। इसकी खोजबीन नहीं की जाती। भेड़ चाल की तरह सभी पीछे हो लेते हैं। ऐसे में पत्रकारों के साथ- साथ आमजन को भी सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट करने से पहले जांच परखना चाहिए। वे समाज के लिए अनुकरणीय होते हैं। इनकी बात पर सामान्य जन से ज्यादा विश्वास किया जाता है। ऐसे में कुछ भी ऐसा कार्य न करें जो भ्रामक वातावरण का निर्माण करे। देवर्षि नारद पत्रकारिता के उच्च आदर्श हैं। समाचार संप्रेषण या संवाद रचना की जो आदर्श परंपरा उन्होंने स्थापित की थी, वह आज की पत्रकारिता के लिए सर्वश्रेष्ठ मानक है। कहा भी गया है -

नारदः सर्वलोकस्य, ज्ञानस्य परमं फलम्।
वीणा वादक देवर्षि, पत्रकार इति विख्यातौ।"

संस्कृत के संवाहक देवर्षि नारद

19वीं शताब्दी के मध्यभाग के पूर्व ही सम्पूर्ण भारत में अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के विकास के समय से ही संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं का विकास हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक पत्र-पत्रिकाएं संस्कृत मिश्रित थी। संस्कृत के अनेक श्लोकों का प्रकाशन उनमें होता था। हिंदी का पहला पत्र 'उदंड मार्तण्ड' है जिसको देखने से यह ज्ञात होता है कि इस पत्र के संपादक जुगल किशोर शुक्ल संस्कृत के विद्वान थे। अनेक स्वरचित श्लोक इसमें प्रकाशित किए जाते थे। पत्र का नाम भी संस्कृत में था। इसी प्रकार और भी अनेक पत्र-पत्रिकाएं थी, परंतु संस्कृत क्षेत्र से शुद्ध संस्कृत मासिक पत्र 1 जून 1866 को बनारस से 'काशीविद्यासुधानिधि' नाम से प्रकाशित हुआ। इसे संस्कृत की पहली पत्रिका माना जाता है।

झारखंड में नक्सलियों ने की आईईडी ब्लास्ट , घायल जवान का हुआ एयरलिफ्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

चाईबासा : झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में नक्सलियों द्वारा बिछाया गया आईईडी पुनः ब्लास्ट हो गया. जिसकी चपेट में आने से झारखंड जगुआर का एक जवान फिर घायल हुआ . जवान को शीघ्र एयरलिफ्ट कर रांची ले जाया गया . यह घटना चाईबासा के मनोहरपुर निकट छोटानागरा थाना क्षेत्र में हुआ है. बताया जाता है कि इनामी माओवादी अनल के दस्ते की तलाश में झारखंड जगुआर और कोबरा बटालियन सर्च अभियान पर निकली थी. इसी दौरान नक्सलियों द्वारा बिछाए गए आईईडी पर झारखंड जगुआर के एक जवान का पैर आ गया. जिससे विस्फोट में जवान घायल हो गया. घायल जवान को बेहतर इलाज के लिए हेलीकॉप्टर से रांची भेज दिया गया . घटना की जानकारी के अनुसार सर्च ऑपरेशन के दौरान जवान सारंडा के जंगलों में सर्च ऑपरेशन चला रहे थे, तभी नक्सलियों द्वारा लगाए गए आईईडी में विस्फोट हो गया. विस्फोट में झारखंड जगुआर का एक जवान घायल हो गया . इस घटना की पुष्टि कोल्हान डीआईजी मनोज रतन चौथे ने की है. इस घटना के बाद सर्च ऑपरेशन में शामिल जवानों द्वारा अभियान तेज कर दिया गया है. घायल जवान की पहचान मनोज कुमार दमाई के रूप में हुई है. वह बम निरोधक यूनिट में तैनात हैं. उनके पैर में गंभीर चोट लगी है.₹

महात्मा बुद्ध के अनमोल विचारों से होती है नकारात्मकता दूर :- अधिवक्ता दीपक सैनी

परिवहन विशेष न्यूज

हांसी। महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन में चार सत्यों पर आधारित उपदेश दिया था। उनके उपदेश जीवन में एकाग्रता रखने के लिए मूल मंत्र हैं, जिसका अनुसरण हर किसी को करना चाहिए।

ऐसी मान्यता है कि वैशाख माह की पूर्णिमा तिथि को महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था, जिस वजह से हर साल इस दिन को बुद्ध जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को कई जगहों पर बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है। महात्मा बुद्ध यानी कि सिद्धार्थ का जन्म भले ही लुंबिनी में एक राज परिवार में हुआ, लेकिन काफी कम उम्र में ही वो अपना राजसी घर छोड़कर सत्य खोजने निकल पड़े। इस दौरान उन्होंने शांति का संदेश दिया। आगे चलकर सिद्धार्थ ही महात्मा गौतम बुद्ध के नाम से विश्व विख्यात हुए। उनकी बताई गई बातें आज भी लोगों को सरल जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

यदि आप भी चाहें तो महात्मा बुद्ध के उपदेशों को जीवन में आत्मसात करके शांति से जिंदगी जी सकते हैं।

जो बुरा समय बीत गया हो उसको याद नहीं करना चाहिए, भविष्य के लिए कभी भी सपने नहीं देखने चाहिए, बल्कि वर्तमान में ही ध्यान केंद्रित होना चाहिए।

किसी के प्रति द्वेषभावना, नफरत तथा ईर्ष्या रखने से जीवन में कभी भी कोई खुशी प्राप्त नहीं की जा सकती है। द्वेषभावना, नफरत तथा ईर्ष्या व्यक्ति के मन की शांति को नष्ट कर देती है।

अज्ञानी व्यक्ति से कभी भी बहस नहीं करनी चाहिए। अज्ञानी व्यक्ति बैल के समान होता है। वह ज्ञान में नहीं, सिर्फ आकार में बड़ा दिखता है।

गुस्सा मानव का सबसे बड़ा शत्रु होता है। हमेशा गुस्से में रहना, गर्म कोयले को किसी दूसरे पर फेंकने के लिए पकड़े रहने के समान होता है। जो हमें नुकसान भी पहुंचाता है ।

जीवन में हजारों लड़ाईयों को जीतने से अच्छा स्वयं पर विजय प्राप्त कर लेना है। फिर जीत हमेशा तुम्हारी होगी, जिसे तुमसे कोई नहीं छिप सकता।

शक सबसे खतरनाक है। शक रिश्तों में दरार डालता है और लोगों को अलग कर देता है। यह दो अच्छे दोस्तों और किसी भी अच्छे रिश्ते को बर्बाद कर सकता है।

स्मार्ट डिवाइसेज़ और मानसिक सुकून: क्या हम वास्तव में खुश हैं?

स्मार्ट डिवाइसेज़ की चमक ने हमारे जीवन को एक नई रोशनी से नहला दिया है। गूगल होम, एलेक्सा और सिरी जैसे यंत्र हमारे घरों में नहीं, बल्कि हमारे दिलों में बस गए हैं। एक आवाज़ के इशारे पर ये हमारे लिए गीत गाते हैं, खाना बनाने की विधियाँ सुझाते हैं, और यहाँ तक कि हमारी दिनचर्या को संवारते हैं। मगर इस तकनीकी जादू की चकाचौंध में एक गहरा सवाल छिपा है, जो हमारे मन के कोनों को झकझोरता है—क्या ये यंत्र, जो हमारी ज़िंदगी को सरल बनाते हैं, हमारे मानसिक स्वास्थ्य को चुपके से प्रभावित कर रहे हैं? यह प्रश्न केवल एक विचार नहीं, बल्कि हमारे युग की सबसे ज़रूरी और अनछुई बहस का आह्वान है।

आज स्मार्ट डिवाइसेज़ हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का ऐसा हिस्सा बन चुके हैं कि उनके बिना समय अधूरा-सा लगता है। ये यंत्र तुरंत जानकारी देते हैं, घरेलू कार्यों को स्वचालित करते हैं, और हमें मनोरंजन के अनगिनत रास्ते खोलते हैं। मगर क्या हमने कभी सोचा कि इनके निरंतर उपयोग का हमारे मन पर क्या असर पड़ रहा है? एक ओर, ये डिवाइसेज़ तनाव से राहत दे सकते हैं। जब हम अकेलेपन में डूबे होते हैं और किसी से बात करने का मन नहीं करता, तो हम अपने स्मार्ट स्पीकर से संवाद करते हैं। ये उपकरण हमें तुरंत जवाब देते हैं, जिससे हमें क्षणिक सुकून मिलता है। कुछ अध्ययनों का दावा है कि ऐसे यंत्रों से बातचीत एकाकीपन को कम कर सकती है, खासकर उन लोगों में जो सामाजिक रूप से कटे हुए हैं।

मगर क्या यह सुकून सच्चा है? इन डिवाइसेज़ के साथ संवाद करते समय हम एक कृत्रिम भावनात्मक रिश्ता जोड़ लेते हैं। हम उन्हें केवल मशीन नहीं, बल्कि एक सहायक या साथी मानने लगते हैं। यह रिश्ता हमें तात्कालिक राहत देता है, मगर लंबे समय में यह हमें वास्तविक मानवीय रिश्तों से दूर ले जाता है। हम दोस्तों या परिवार से बात करने के बजाय अपने स्मार्ट डिवाइस से सवाल पूछना ज़्यादा आसान समझते हैं। यह प्रवृत्ति सामाजिक दूरी को बढ़ाती है और एकाकीपन को और गहरा करती है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि मानवीय संपर्क—चाहे वह आमने-सामने हो या दूरभाष पर—हमारे मानसिक कल्याण की रीढ़ है। स्मार्ट डिवाइसेज़, चाहे कितने भी बुद्धिमान हों, इस संपर्क की गहराई और भावनात्मक तृप्ति नहीं दे सकते।

इसके साथ ही, स्मार्ट डिवाइसेज़ का अत्यधिक उपयोग हमारी रचनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन को कमज़ोर कर सकता है।

जब हर सवाल का जवाब एक आवाज़ के आदेश पर उपलब्ध हो, तो हम खुद सोचने और समस्याएँ हल करने की कला भूलने लगते हैं। यह खासकर बच्चों और युवाओं के लिए खतरनाक है, जिनका मस्तिष्क अभी विकसित हो रहा है। यदि वे हर जानकारी के लिए स्मार्ट डिवाइसेज़ पर निर्भर रहेंगे, तो उनकी संज्ञानात्मक क्षमताएँ सिकुड़ सकती हैं। उदाहरण के लिए, पहले लोग नक्शे पढ़कर रास्ता ढूंढते थे, जिससे उनकी स्थानिक बुद्धि पुष्ट होती थी। आज हम जीपीएस और स्मार्ट डिवाइसेज़ के भरोसे हैं, जिससे यह क्षमता धीरे-धीरे लुप्त हो रही है।

स्मार्ट डिवाइसेज़ हमारी गोपनीयता को भी खतरे में डालते हैं, जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर अप्रत्यक्ष रूप से असर डालता है। ये यंत्र हमारी बातचीत को रिकॉर्ड करते हैं और हमारी रुचियों का विश्लेषण करते हैं। कई लोगों को यह डर सताता है कि उनकी निजी जानकारी गलत हाथों में पड़ सकती है। यह चिंता तनाव और अविश्वास को जन्म देती है, जो हमारे मन की शांति को भंग करती है। हालाँकि कंपनियाँ डेटा सुरक्षा का दावा करती हैं, मगर डेटा उल्लंघन की घटनाएँ इस विश्वास को कमज़ोर करती हैं।

दूसरी ओर, स्मार्ट डिवाइसेज़ कुछ मामलों में मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी भी हो सकते हैं। कई स्मार्ट स्पीकर्स में ध्यान और माइंडफुलनेस के लिए गाइडेड सत्र उपलब्ध हैं, जो तनाव प्रबंधन और नींद में सुधार में सहायक हैं। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े ऐप्स और सेवाएँ, जो इन डिवाइसेज़ के ज़रिए मिलती हैं, उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकती हैं जो पेशेवर मदद लेने से हिचकते हैं। मगर यहाँ संतुलन की ज़रूरत है। इन सुविधाओं को सहायक के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए, न कि मानवीय संपर्क या चिकित्सा का विकल्प बनाना चाहिए।

स्मार्ट डिवाइसेज़ का प्रभाव हमारी जीवनशैली और मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। यदि हम इनका उपयोग जागरूकता और संयम के साथ करें, तो ये हमारे जीवन को समृद्ध बना सकते हैं। मगर अगर हम इन पर अंधाधुंध निर्भर हो जाएँ, तो ये हमारी भावनात्मक और संज्ञानात्मक शक्तियों को कमज़ोर कर सकते हैं। हमें यह समझना होगा कि तकनीक हमारी सेवक है, न कि हमारी स्वामिनी। अपने मानसिक कल्याण को प्राथमिकता देने के लिए, हमें वास्तविक दुनिया से जुड़े रहना होगा—चाहे वह प्रकृति की गोद में समय बिताना हो, अपनों से दिल की बातें साझा करना हो, या स्वतंत्र रूप से चिंतन करना हो।

स्मार्ट डिवाइसेज़ के साथ हमारा रिश्ता एक नाज़ुक डोर पर टिका है—यह हमें सशक्त बना सकता है, मगर लापरवाही बरती तो हमारे मन की शांति को छीन भी सकता है। हमें हर कदम पर खुद से पूछना होगा: क्या ये यंत्र हमारी ज़रूरतों को पूरा कर रहे हैं, या हमें एक कृत्रिम दुनिया में कैद कर रहे हैं? हमारी भावनाएँ और विचार मशीनों के लिए नहीं, बल्कि इंसानों के लिए हैं। तकनीक ने हमें अनगिनत उपहार दिए हैं, मगर हमारा मन हमारी अपनी अमानत है। इस अमानत को संभालने की कला ही हमें सिखाएगी कि स्मार्ट डिवाइसेज़ हमारे जीवन को संवारें, न कि हमारे मन की शांति को बिखेरें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

मुख्यमंत्री ने सुरक्षा एवं आधुनिक सुविधा लैस नये आवास की आधारशिला रखी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची , झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को अपने नये आवास हेतु कांके सपत्नीक आधारशिला हेतु वास्तु जनित पूजार्चना की . कांके रोड स्थित इस जगह बनने वाली इस आवास पूरी तरह से आधुनिक सुविधाओं और सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा है , जिससे सरकार की कार्यप्रणाली और मुख्यमंत्री के कामकाज को और इजाफा कर बेहतर हो सकेगा इस मौके पर पारंपरिक विधि-विधान और पूजा-अर्चना के साथ शिलान्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने विधिवत पूजन कर भवन निर्माण की शुभ शुरुआत की.

बोधि की चुप्पी

शांत है लुंबिनी की पगडंडी,
जहाँ फूलों ने पहले देखा प्रकाश,
राजकुमार की पहली हँसी में,
छुपा था अनंत का एक उलझा प्रकाश।

जन्मा था एक प्रश्न वहाँ,
चक्रवर्ती नहीं, चैतन्य का दीपक,
महलों की आभा से दूर,
सत्य का नन्हा एक दीपक।

बोधिवृक्ष के पत्तों में,
बहती है अनहद की बयार,
तप की चुप्पी, सत्य की पुकार,
जिसने अंधेरों को सीखा दिया,
प्रकाश का अनादि व्यापार।

कपिलवस्तु की गलियों में,
गूँजता है अब भी वो प्रश्न,
जीवन का सत्य क्या है?
दुख की गाँठें क्यों हैं?

महापरिनिर्वाण की शांति,
कुशीनगर की माटी में बसी,
जहाँ देह नहीं, पर जीवन का अर्थ,
साँसों में घुली एक अनंत हँसी।

साक्षी है ये धरती,
हर बोधि की फुसफुसाहट का,
जहाँ मौन से फूटा था अमरत्व,
और जाग उठा था एक विश्व का सत्य।

—डॉ० सत्यवान सौरभ

वक़्त की चाल में छूटते रिश्ते: क्या हम सच में जी रहे हैं?

ज़िंदगी एक अनघट कविता है, जिसमें हर पंक्ति छोटे-छोटे पलों से बनी होती है। ये पल, जो उस वक्त साधारण लगते हैं, वही समय के साथ हमारी आत्मा का सबसे अनमोल खज़ाना बन जाते हैं। बचपन में माँ की उँगलियों का हल्का-सा स्पर्श, जो हमें सड़क पार कराते वक्त सुरक्षा का एहसास देता था। पिता की थकी आँखों में छिपी वह मुस्कान, जो हमारी छोटी-सी उपलब्धि पर चमक उठती थी। दादी की झुर्रियों भरी हथेली, जो हमारे सिर पर फेरते वक्त कहानियों का संसार बुनती थी। उस वक्त ये क्षण रोज़मर्रा के हिस्से थे, पर आज ये स्मृतियों के अनमोल रत्न हैं। ये छोटे पल ही हैं, जो ज़िंदगी को अर्थ देते हैं, जो हमें सिखाते हैं कि सच्ची खुशी बड़ी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि इन नन्हे लम्हों की गर्माहट में बसती है।

आज का दौर रफ्तार का दौर है। हम सब एक ऐसी दौड़ में शामिल हैं, जहाँ मंज़िलें बदलती रहती हैं, लेकिन रास्ते का आनंद कहीं खो जाता है। करियर की ऊँचाइयाँ, सपनों का पीछा, समाज में पहचान — ये सब हमें इस कदर उलझा लेते हैं कि हम वर्तमान को भूल जाते हैं। हम उस चाय की चुस्की को भूल जाते हैं, जिसमें माँ ने हमारे लिए प्यार से अदरक डाला था। उस दोस्त की हँसी को भूल जाते हैं, जिसके साथ रात भर बेपरवाह बातें होती थीं। उस बच्चे की बेतकल्लुफ़ गले लगाने की आदत को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जो बिना शर्त प्यार का इज़हार है। और जब ये पल हमसे दूर चले जाते हैं, तब हमें अहसास होता है कि असल में हमने कितना कुछ खो दिया।

ज़िंदगी का सबसे बड़ा सच यही है कि समय किसी का इंतज़ार नहीं करता। वह एक नदी है, जो लगातार बहती रहती है, और हमारी लापरवाही में उसके किनारे के फूलों को छूने का मौका छूट जाता है। हम सोचते हैं कि कल वक्त निकाल लेंगे। कल उस दोस्त को फ़ोन करेंगे, जिसकी आवाज़ सालों से नहीं सुनी। कल दादाजी के साथ बैठकर उनकी पुरानी बातें सुनेंगे। कल बच्चों के साथ बिना वजह हँसेंगे। लेकिन यह 'कल' एक मृगतृष्णा है। जब वह आता है, तब तक बहुत कुछ बदल चुका होता है। वो लोग, वो पल, वो एहसास — सब किसी और समय के हिस्से बन चुके होते हैं। और हम रह जाते हैं सिर्फ़ एक सवाल के साथ — काश, उस दिन पाँच मिनट और रुक गए होते।

इन छोटे पलों में ही ज़िंदगी का असली जादू छिपा है। जब बारिश की बूँदें अचानक चेहरे पर गिरती हैं और हम बेवजह मुस्कुरा उठते हैं। जब कोई बिना कहे हमारे लिए कॉफी बना देता है, क्योंकि उसे हमारी पसंद याद है। जब बच्चा अपनी छोटी-सी ड्राइंग दिखाने दौड़कर आता है, और उसकी आँखों में चमक देखकर हमारा दिल भर आता है। ये पल साधारण नहीं, ये वो अनमोल मोती हैं, जो हमारी यादों की माला को सजाते हैं। ये वो रंग हैं, जो हमारी ज़िंदगी के कैनवास को जीवंत बनाते हैं। इन्हें अनदेखा करना, ज़िंदगी के सबसे ख़ूबसूरत हिस्से को खो देना है।

डिजिटल युग ने हमें स्क्रीन से बाँध दिया है। हमारी आँखें फ़ोन की चमक में खोई रहती हैं, लेकिन अपनों की आँखों में झाँकना भूल जाती हैं। हम हज़ारों मील दूर बैठे अनजान लोगों से जुड़े रहते हैं, लेकिन पास बैठे अपने लोगों की बातें सुनना भूल जाते हैं। हमें फिर से सीखना होगा कि वास्तविक दुनिया की ख़ुशियाँ स्क्रीन पर नहीं, बल्कि उन चेहरों में हैं, जो हमें बिना शर्त प्यार करते हैं। हमें फिर से महसूस करना होगा कि एक छोटी-सी बातचीत, एक हल्की-सी हँसी, एक साथ बिताया गया पल — ये सब ज़िंदगी के सबसे बड़े उपहार हैं।

छोटे पल छोटे नहीं होते। वे वो बीज हैं, जो रिश्तों के वृक्ष को सींचते हैं। एक साथ खाया गया खाना, जिसमें माँ ने थोड़ा ज़्यादा नमक डाल दिया और हम सब हँस पड़े। एक पुरानी फ़ोटो, जिसे देखकर बचपन की शरारतें याद आ गईं। एक दोस्त का वह मज़ाक, जो सालों बाद भी हँसी छुड़ा देता है। ये सब वो धागे हैं, जो हमारे जीवन की चादर को रंगीन और मज़बूत बनाते हैं। इन पलों को जीना, इन्हें संजोना, यही ज़िंदगी को पूर्णता देता है।

समय की सबसे बड़ी ख़ूबसूरती और क्रूरता यही है कि वह कभी रुकता नहीं। वह हमें मौके देता है, लेकिन उन्हें पकड़ने की ज़िम्मेदारी हमारी है। इसलिए, आज की रफ्तार को थाम लीजिए। अपने आसपास के लोगों को देखिए, उनकी बातों को सुनिए, उनके साथ हँसिए। उस माँ को गले लगाइए, जो बिना कहे आपके लिए हर दिन कुछ न कुछ करती है। उस दोस्त को फ़ोन कीजिए, जिसकी हँसी आपकी ज़िंदगी का हिस्सा थी। उस बच्चे के साथ खेलिए, जो आपकी दुनिया को रंगों से भर देता है। क्योंकि ये छोटे पल ही हैं, जो एक दिन आपकी सबसे बड़ी दौलत बनेंगे।

ज़िंदगी की सैर में मंज़िलें तो बहुत हैं, लेकिन असली मज़ा रास्ते के इन नन्हे पड़ावों में है। हर मुस्कान, हर स्पर्श, हर कहानी — ये सब आपकी यादों का हिस्सा बनने के लिए बेताब हैं। इन्हें अनदेखा न करें। अगली बार जब कोई अपना बिना वजह मुस्कुराए, तो उस मुस्कान को लौटाइए। जब दादी फिर से वही पुरानी कहानी सुनाने लगें, तो उनके साथ उस कहानी में खो जाइए। जब बारिश आपको भीगने का न्योता दे, तो उसे ठुकराइए नहीं। क्योंकि यही पल, यही लोग, यही एहसास — एक दिन आपकी ज़िंदगी की सबसे अनमोल कहानी बनेंगे। ज़िंदगी छोटे पलों की माला है, और हर पल एक मोती। इसे संजोइए, इसे जिए, क्योंकि समय की सैर में यही पल अमर हो जाते हैं।

आज से शुरू होगा ज्येष्ठ मास

हिंदू धर्म में ज्येष्ठ माह का विशेष महत्व होता है। यह महीना वैशाख के बाद आता है और हिंदू पंचांग का तीसरा महीना होता है। ज्येष्ठ माह को आम बोलचाल में जेठ महीना भी कहा जाता है। इसमें गर्मी अपने चरम पर होती है। इसलिए यह महीना तप, संयम और सेवा का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक दृष्टि से इस माह में जल सेवा, व्रत, पूजा और दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है। खासकर किसी प्यासे को शर्बत या ठंडा पानी पिलाना अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। ऐसे में आइए जानते हैं इस साल ज्येष्ठ माह की शुरुआत कब से हो रही है? ज्येष्ठ माह का क्या महत्व है और ज्येष्ठ मास में-

ज्येष्ठ मास कब से कब तक?

==========

इस साल ज्येष्ठ मास की शुरुआत 13 मई 2025, मंगलवार से हो रही है और यह 11 जून 2025, बुधवार को समाप्त होगा। ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि 12 मई की रात 10:25 बजे शुरू होकर 13 मई की रात 12:35 बजे तक रहेगी। इसी आधार पर पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ मास की गणना 13 मई से मानी जाएगी।

ज्येष्ठ माह का धार्मिक महत्व

==========

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, बजरंगबली की भगवान राम से पहली मुलाकात ज्येष्ठ माह में पड़ने वाले मंगलवार को हुई थी। इसलिए इस माह में पड़ने वाले सभी मंगलवार को 'बड़ा मंगल' या 'बुढ़वा मंगल' के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस माह में हनुमान जी और भगवान राम की पूजा-अर्चना करने से विशेष लाभ होता है और जीवन में सुख-शांति आती है। साथ ही, इस दिन दान-पुण्य करने से भी बहुत पुण्य मिलता है। कई स्थानों पर इस दिन हनुमान मंदिरों में भंडारे और जल सेवा भी आयोजित की जाती है।

ये कैसा सीजफायर (युद्ध विराम) है ?

भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हमले की प्रतिक्रिया में पाकिस्तान के खिलाफ शुरू किए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' को विराम देने की पाकिस्तानी अपील के बाद दोनों देशों के बीच युद्ध विराम हुआ और चार घंटे बाद ही टूट भी गया। आखिर ये कैसा सीजफायर है ? वास्तव में, यह पाकिस्तान के नापाक व बुरे इरादों को ही दर्शाता है। सीजफायर के नाम पर पाकिस्तान ने एक बार फिर शैतानियत दिखाते वह सबकुछ किया,जो कि वास्तव में उसे नहीं करना चाहिए था। गौरतलब है कि पाकिस्तान ने 10 मई 2025 की रात(शनिवार की रात) को ही युद्ध विराम(सीजफायर) का उल्लंघन करते हुए भारत के जम्मू से लेकर पूरे सीमाई क्षेत्रों में भीषण बमबारी, ड्रोन हमले और गोलाबारी की। उपलब्ध जानकारी के अनुसार दस मई की रात नौ बजे पाकिस्तान ने संघर्ष विराम का सरे-आम उल्लंघन किया और जम्मू-कश्मीर में एलओसी पर ताबड़तोड़ फायरिंग की। श्रीनगर में देर रात तक धमाके सुने जाते रहे और उधमपुर में पाकिस्तानी ड्रोन नजर आए। इतना ही नहीं, पाकिस्तान ने जम्मू के आरएस पुरा क्षेत्र में भी शनिवार को भारी गोलाबारी की। हालांकि, भारत सरकार ने सेना को पाकिस्तान से सख्ती से निपटने के निर्देश दिए हैं। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि-' संघर्ष विराम लागू करने को लेकर डीजीएमओ(डायरेक्टर जनरल मिलिट्री आपरेशन) स्तर पर बनी सहमति का उल्लंघन किया गया है और भारत इसका मुंहतोड़ जवाब दे रहा है। सरकार ने ठोस और सख्त कदम उठाने के आदेश दे दिए हैं।' यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत-पाकिस्तान के बीच शनिवार(10 मई 2025) को सीजफायर का एलान हो गया था। इस संदर्भ में, दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच बातचीत हुई और बातचीत के बाद सीजफायर का एलान किया गया था। गौरतलब है कि विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने जानकारी दी थी कि 12 मई 2025 को फिर से दोनों देशों के डीजीएमओ की मुलाकात होगी। यहां उल्लेखनीय है कि डीजीएमओ की देखरेख में ही सारे सैन्य अभियान होते हैं। वास्तव में डीजीएमओ भारतीय सेना के एक सीनियर लेफ्टिनेंट जनरल 3-स्टार रैंक का अधिकारी होते हैं और डीजीएमओ की निगरानी में ही किसी भी प्रकार के सैन्य अभियान को अंजाम दिया जाता है। संक्षेप में कहें तो, युद्ध के दौरान सैन्य अभियानों से जुड़े हर एक फैसले डीजीएमओ ही लेते हैं, और युद्ध के दौरान रणनीति बनाना भी डीजीएमओ का ही काम होता है,जो सीधे आर्मी चीफ को रिपोर्ट करता है। इतना ही नहीं, खुफिया एजेंसियों के साथ भी डीजीएमओ समन्वय रखता है और युद्ध शुरू होने से लेकर युद्धविराम तक, डीजीएमओ हर सैन्य कार्रवाई का फैसला लेता है, लेकिन पाकिस्तान ने डीजीएमओ की परवाह न करते हुए सीजफायर का सरेआम उल्लंघन कर डाला। यह दर्शाता है कि पाकिस्तानी सेनाओं पर डीजीएमओ का कोई नियंत्रण नहीं है और पाकिस्तानी सेनाएं सीमाओं पर अपनी मनमानी करतीं हैं। बहरहाल, पाठकों को यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप ने कल ही एक्स पर एक पोस्ट कर यह जानकारी दी थी कि-'संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता में एक लंबी रात की बातचीत के बाद, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि, भारत और पाकिस्तान पूर्ण और तत्काल युद्धविराम पर सहमत हो गए हैं। दोनों देशों को सामान्य बुद्धि और महान बुद्धिमत्ता का उपयोग करने के लिए बधाई। इस मामले पर आपके ध्यान के लिए धन्यवाद !' बहरहाल, पाकिस्तान के सीमा पर सीजफायर उल्लंघन के बीच पाकिस्तानी आर्मी की खिल्ली उड़ाते और भड़कते हुए टीवी एक्टर अली गोनी ने ट्वीट किया है कि, 'उर्दू में लिखकर भेजो इंग्लिश में समझ नहीं आया होगा ये अनपढ़ आर्मी को।' कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान लातों का भूत है,जो बातों से मानने वाला नहीं है। दरअसल, पाकिस्तान द्वारा सीजफायर के उल्लंघन की इस घटना को हाल फिलहाल पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख मुनीर के बीच टकराव के रूप में देखा जा रहा है। गौरतलब है कि अमेरिका की मध्यस्थता में हुए सीजफायर का पाकिस्तान की शहबाज सरकार ने समर्थन किया था, लेकिन अब जिस तरह से पाकिस्तान सेना बगावत पर उतर आई है, उससे पाकिस्तान में तख्ता पलट की आशंका भी बढ़ गयी है। पाकिस्तान द्वारा सीजफायर का सरेआम उल्लंघन करना यह भी दर्शाता है कि पाकिस्तान के सामने ट्रंप कार्ड नहीं चला। इधर, पाकिस्तान द्वारा सीजफायर का उल्लंघन करने पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने भी ट्वीट किया है कि , 'संघर्ष विराम को आखिर क्या हो गया ? श्रीनगर में विस्फोटों की आवाजें सुनी गईं!!!' दरअसल, उन्होंने ड्रोन हमले का एक वीडियो साझा करते हुए कहा, 'यह कोई संघर्ष विराम नहीं है। श्रीनगर के मध्य में वायु रक्षा इकाइयों ने अभी-अभी गोलीबारी शुरू की है।' बहरहाल, यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि भारत और पाकिस्तान के बीच हुए सीजफायर समझौते पर शहीद लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के पिता राजेश नरवाल ने यह बात कही है कि हर राष्ट्र की अपनी कूटनीति और नीतियां होती हैं। उन्होंने कहा कि 'प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने जो निर्णय लिया, वह देश के हित में है, और हम इसका समर्थन करते हैं, लेकिन अगर पाकिस्तान ने दोबारा कोई नापाक हरकत की, तो उसे कड़ा जवाब देना चाहिए।' उन्होंने बलूचिस्तान को आजाद कराने की भी बात कही और यह भी कहा कि पीओके(पाक अधिकृत कश्मीर) पर भारत का पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी बताया कि पाकिस्तान के पड़ोसी देश भी उसकी हरकतों से तंग आ चुके हैं। बहरहाल, गौरतलब है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जारी सैन्य संघर्ष के बीच शनिवार(10 मई 2025) को विदेश मंत्रालय ने घोषणा की थी कि-' दोनों पक्षों में आज शाम पांच बजे से जमीन, हवा और समुद्र में सभी तरह की गोलीबारी और सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति बनी थी।' अंत में यही कहूंगा कि पाकिस्तान विश्व का एक ऐसा देश बन चुका है जो आतंकवाद और आतंकियों को प्रश्रय देता है और अपने आवाम में कट्टरपंथी जेहादी सोच को बढ़ावा देता है। सच तो यह है कि पाकिस्तान की 'कथनी' और 'करनी' में रात-दिन का अंतर है। वह कहता कुछ है और करता कुछ और है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान जवाबदेह और गंभीर नहीं है और उसकी हरकतें क्षेत्रीय शांति के लिए एक खतरा है। पाकिस्तान को यह नहीं भूलना चाहिए कि युगों-युगों से भारत, शांति का पक्षधर रहा है, लेकिन भारत कभी भी अपनी संप्रभुता और सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं करेगा। पाकिस्तान की फितरत मुकर जाने की रही है और वह किसी भी बात की परवाह तक नहीं करता है। हाल फिलहाल,इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड (आईएमएफ) ने पाकिस्तान के लिए दो आर्थिक कार्यक्रमों के तहत 2.4 अरब डॉलर की वित्तीय सहायता को मंजूरी दी है। वास्तव में पाकिस्तान को यह सहायता आर्थिक सुधारों और जलवायु लचीलापन बढ़ाने की योजनाओं को समर्थन देने के लिए दी गई है, लेकिन भारत इसका विरोध कर चुका है, क्योंकि पहलगाम में हुए आतंकी हमले और भारत की ओर से ऑपरेशन सिंदूर के चलते दोनों देशों के बीच युद्ध जैसे हालात हैं। दरअसल भारत नहीं चाहता था कि पाकिस्तान को कोई भी फंड मिले और वह इसका इस्तेमाल भारत में आतंकवाद फैलाने पर करे। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत ने इस तरह के राहत पैकेज की प्रभावशीलता पर चिंता जताई थी और 'राज्य प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद के लिए धन के दुरुपयोग की संभावना' को चिह्नित किया था। संक्षेप में यही कहूंगा कि पाकिस्तान की किसी भी बात पर कभी भी भरोसा या विश्वास नहीं किया जा सकता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि-'उसकी फितरत है मुकर जाने की, उसके वादे पे यकीं कैसे करूं ?'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

संस्कारशाला – परिवार संग एक घंटा, सुबह और शाम का संकल्प

- डॉ. अंकुर शरण

आज की तेज़ रफ्तार और डिजिटल युग में हम सबसे बड़ा जो खजाना खोते जा रहे हैं, वह है — परिवार संग समय बिताना। हम दिनभर में कई ज़रूरी काम करते हैं, पर अगर दिन की शुरुआत और अंत हम अपने परिवार के साथ करें, तो वह पूरा दिन सुखद और सकारात्मक बन जाता है।

सुबह का आधा घंटा – सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत

हर सुबह, घर के आँगन या बालकनी में परिवार संग योग करना, सिर्फ शरीर को ही नहीं, मन और आत्मा को भी सशक्त करता है। यह एक छोटा-सा प्रयास हमें एक-दूसरे से जोड़ता है और दिनभर के लिए ऊर्जा देता है।

सुबह-सुबह मिलकर योग और प्राणायाम करना — शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए अनमोल आदत है।

अपने हाथों से पौधों को पानी देना, उन्हें निहारना — प्रकृति से जुड़ाव और संवेदनशीलता सिखाता है।

पंछियों को दाना-पानी देना — हमें निस्वार्थ सेवा और करुणा का पाठ पढ़ाता है।

इन छोटे-छोटे कार्यों से न केवल दिन की शुभ शुरुआत होती है, बल्कि बच्चे भी प्रकृति और पारिवारिक मूल्यों को समझने लगते हैं।

शाम का एक घंटा – आत्मिक सुकून का समय

शाम का समय, जब पूरा परिवार दिनभर की भागदौड़ के बाद घर लौटता है, वह सबसे उपयुक्त समय है अपने रिश्तों को मज़बूत करने का।

मोबाइल और टीवी से दूर होकर एक घंटे के लिए एक साथ बैठना।

किताब पढ़ना या कहानी सुनाना — ज्ञान और कल्पनाशक्ति को बढ़ाता है।

परिवार के साथ भजन या मंत्रों का जाप करना — मन को शांत करता है और सकारात्मक ऊर्जा से घर को भर देता है।

कभी-कभी लाइव म्यूज़िक या साथ मिलकर गाना गाना — एक भावनात्मक जुड़ाव की अनुभूति कराता है।

इस एक घंटे का असर दीर्घकालिक होता है

यह नयी पीढ़ी को संस्कार और परिवारिक मूल्यों से जोड़ता है।

परिवार के बीच संचार और समझ को बढ़ाता है।

जीवन में एक संतुलन और आंतरिक सुख का अनुभव कराता है।

अंत में यही कहूँगा कि "बचपन याद आता है जब पूरा परिवार एक साथ बैठता था।"

अब वक्त है उस भावना को फिर से जीने का, बच्चों को वो माहौल देने का, जहाँ वे सादगी, आत्मीयता और मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकें।

संस्कारशाला सिर्फ एक आदत नहीं, एक संस्कार है। आइए, सुबह और शाम का एक-एक घंटा, परिवार को समर्पित करें।

तो क्या मोबाइल दुकान फाइनेंस के नाम पर लोगों से ठगी करते हैं... फाइनेंस के नाम पर मोबाइल की दुकान पर ₹ 40000 की ठगी

सावधान रहे सचेत रहें और किसी भी अंजान दुकान से फाइनेंस ना करवाये नहीं आप भी हो सकते हैं ठगी का शिकार

परिवहन विशेष न्यूज

वाराणसी के सिगरा थाना अंतर्गत आईपी मॉल के सामने किसी भी मानक को न तय करते हुए दर्जनों मोबाइल की शॉप है जो बिना किसी रोक टोक धड़ल्ले से संचालित हो रही है आपको बता दें कि कई तरीके का गलत धंधा दुकान संचालकों द्वारा किया जाता रहा है !

गोपाल चौरसिया पुत्र बबलू चौरसिया कोनद्वार लल्लापुरा निवासी ने बजाज फाइनेंस के माध्यम से शुभम इंटरप्राइजेज दुकान से एक मोबाइल ली जिसकी कीमत 15499/ है प्राथी ने लिया !जिसकी सारी किस्तें भुगतान करने के बाद NOC ले लिया !लेकिन बैंक से किस्त कटना बंद नहीं हुआ फिर गोपाल ने इस बाबत जानकारी की तो पता चला कि सिगरा स्थित फिलिंग्स मोबाइल की दुकान पर बजाज फाइनेंस का कर्मचारी आशीष मल्होत्रा द्वारा 40000 रुपए का मोबाइल गोपाल की आईडी का दुरुपयोग कर फाइनेंस कर लिया गया है और जब इस संबंध बात करने गया तो जिम्मेदार मलिक ने कहा कई लोगों का वह फ्रॉड किया है !

तो क्या फाइनेंस के नाम पर फ्रॉड लड़कों को दुकान पर रखकर आम जनता को ठगी करवा रहा है दुकानदार यह बहुत बड़ा सवाल है ऐसे कैसे किसी के साथ आई डी का दुरुपयोग कर ठगी किया जा सकता है ! सवाल ढेर सारे हैं इसके पूर्व में भी फिलिंग्स मोबाइल वाले के ऊपर कई संगीन आरोप लगा चुके हैं यह जांच का विषय है तत्काल प्रभाव से यदि स्थानीय पुलिस चाहे तो इस मामले का निस्तारण हो सकता है !अब देखना होगा शिकायत और खबर वायरल होने के बाद पुलिस इसका निस्तारण करती है या खानापूर्ति कर जांच को ठंडा बस्ते में डाल देती है क्योंकि पुलिस चाहे तो 10 मिनट के अंदर इस मामले का निस्तारण हो सकता है दुकान पर यदि कोई व्यक्ति फाइनेंस कंपनी का कार्य कर रहा है तो बिना किसी प्रूफ और आईडी किसी भी दुकानदार के पास वह कार्य नहीं कर सकता और ऐसा अपराध बिना दुकानदार की मर्जी से या संलिप्तता से नहीं किया जा सकता तो निश्चित तौर पर आम लोगों को ठगी से बचाने के लिए पुलिस को ठोस कदम उठाते हुए सख्त कार्रवाई करनी चाहिए !!

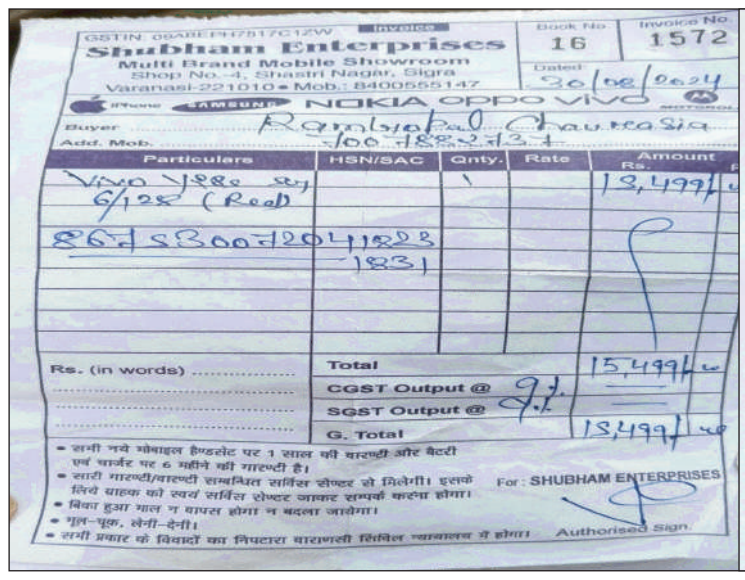

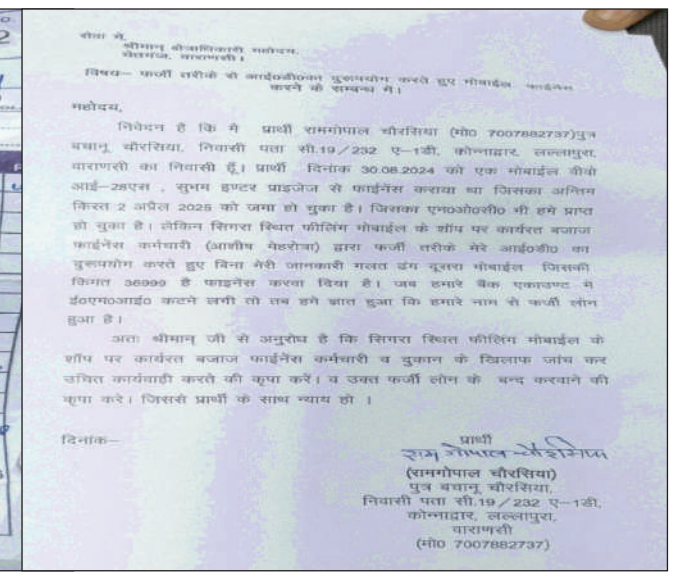

हमला नहीं, जवाबी कार्रवाई की हैं...!

भारत ने हमला नहीं, जवाबी कार्रवाई की हैं,
पाक के आतंकवादियों की कमर तोड़ दी हैं।
नौ जगहों को साध किया सफल ऑपरेशन,
माता-बहनों के सिंदूर का पूरा हुआ मिशन।
चीन से खरीदे चौकसी वाले तंत्र पर सवाल,
फुस्स हो गए थे हथियार मच गया है बवाल।
भारत ने हमला नहीं, जवाबी कार्रवाई की हैं,
पाक के आतंकवादियों की कमर तोड़ दी हैं।
बेगुनाहों के खूनों का करारा जवाब दिया हैं,
भारतीय सेना ने उसे नेस्तनाबूद कर दिया है।
भारत ने सावधानी से इन स्थलों को चुना था,
मिसाइल व ड्रोन के जरिए यह जाल बुना था।
भारत ने हमला नहीं, जवाबी कार्रवाई की हैं,
पाक के आतंकवादियों की कमर तोड़ दी हैं।
ये घुटनों पर आ गया है मांग रहा सीज़ फायर
अब भी चला रहा है गोली न मान रहा कायर।
सेनाओं की झूठी कामयाबियों से भरी पड़ी हैं,
अपने ब्रह्मोस व राफेल की कामयाबी बड़ी हैं।

संजय एम तराणेकर

भुवनेश्वर के नए स्टेशन से 3 एक्सप्रेस ट्रेनें चलनी शुरू

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : सोमवार 12 मई से भुवनेश्वर के नए रेलवे स्टेशन से तीन एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन शुरू होगा। ये ट्रेनें हैं भुवनेश्वर-सीएसएमटी मुंबई-भुवनेश्वर कोणार्क एक्सप्रेस (11020/11019), भुवनेश्वर - सिकंदराबाद-भुवनेश्वर विशाखा एक्सप्रेस (17015/17016) और भुवनेश्वर-विशाखापत्तनम-भुवनेश्वर इंटरसिटी एक्सप्रेस (22819/22820)।भुवनेश्वर के नए स्टेशन से अपनी यात्रा शुरू करने वाली ये ट्रेनें भुवनेश्वर उत्तर और आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को काफी लाभ प्रदान करेंगी। ये ट्रेनें हर दो मिनट में मंचेश्वर रेलवे स्टेशन पर भी रुकेंगी।

परिणामस्वरूप, नया भुवनेश्वर स्टेशन उत्तरी भुवनेश्वर क्षेत्र में स्थित कई इंजीनियरिंग, मेडिकल और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों के लिए एक सुविधाजनक केंद्र के रूप में काम करेगा। चिकित्सा संबंधी यात्रा की आवश्यकता वाले यात्रियों को इससे बहुत लाभ होगा, क्योंकि भुवनेश्वर शहर के इस हिस्से में कई अस्पताल स्थित हैं। इन ट्रेनों के भुवनेश्वर के नए स्टेशन से अपनी यात्रा शुरू करने से स्थानीय निवासियों को भुवनेश्वर मुख्य स्टेशन तक आने-जाने की परेशानी से छुटकारा मिलेगा और वहां भीड़भाड़ भी कम होगी।

अमृत स्टेशन योजना के तहत नए भुवनेश्वर स्टेशन का पुनर्विकास भी प्रस्तावित है, जिसका प्राथमिक ध्यान यात्री सुविधाओं को बढ़ाने पर होगा। नए भुवनेश्वर स्टेशन पर नियोजित प्रमुख कार्यों में परिचालित क्षेत्र का विस्तार और सुधार, अतिरिक्त फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का प्रावधान, बेहतर यात्री सेवा और प्रतीक्षा के लिए आधुनिक प्रतीक्षालय और शौचालय शामिल हैं। इसमें पुराने प्लेटफार्मों और उनकी प्रकाश व्यवस्था को उन्नत करना, कोचों में पानी भरने की सुविधा स्थापित करना, सभी प्लेटफार्मों पर लिफ्टों का प्रावधान करना और मौजूदा स्टेशन भवन को उन्नत करना शामिल है।

अंनगुल जिले कनिहा थाना क्षेत्र में महिला से दुष्कर्म कर हत्या, एसपी कार्यालय का घेराव

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कनिहा थाना क्षेत्र की एक युवती 26 तारीख को तालचेर रेलवे स्टेशन से लापता हो गई और बाद में उसका आधा जला हुआ शव बानरपाल थाना के केंदुपाली इलाके में मिला। शुरुआती दौर में पुलिस की लापरवाही के कारण अपराधियों की अभी तक गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। जिसने जिले के जागरूक नागरिकों, बुद्धिजीवियों और सबसे बढ़कर सभी वर्गों के लोगों को बहुत परेशान कर दिया है।इस घटना से जनता में तीव्र असंतोष पैदा हो गया है। सोमवार की सुबह महिला हिंसा विरोधी अंगुल लोक समिति की देखरेख में सैकड़ों महिला, पुरुष, जिले के विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ता, बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता आदि ने जुलूस निकाला और विभिन्न नारे लगाते हुए बाजार का भ्रमण किया। उन्होंने कार्यालय को घेर लिया है।

समिति की संयोजक सरोजिनी नायक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में महिला सांस्कृतिक संगठन की सर्वभारतिया समिति के संपादक ऋषि मोहंती भी उपस्थित थे, जिन्होंने हत्या में शामिल अपराधियों को कड़ी सजा देने की मांग की तथा पुलिस की लापरवाही की कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा कि आम लोगों, विशेषकर शिशुओं, युवतियों और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कदम नहीं उठाए जाने के कारण आपराधिक गतिविधियां दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार सुभद्रा के नाम पर महिलाओं को वित्तीय प्रोत्साहन दे रही है, लेकिन डाबर इंजन सरकार राज्य की सुभद्राओं की सुरक्षा करने में असमर्थ है। युवती के परिवार के सदस्यों के साथ-साथ महिला संगठनकर्ता मिनती सामल, युवा संगठनकर्ता मानस पाल, कैलाश साहू, छात्र संगठनकर्ता परमानंद साहू, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) कनिहा क्षेत्रीय कमेटी के संपादक प्रहलाद चंद्र साहू ने मुख्य भाषण दिया। श्रीमती मोहंती के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने अतिरिक्त सुरक्षा अधिकारी से मुलाकात की और मांगों पर चर्चा की। घेराव कार्यक्रम इस दृढ़ आश्वासन के बाद वापस ले लिया गया कि दोषियों को तुरंत गिरफ्तार करने और कड़ी सजा देने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

विकास गतिविधियों को गांव- गांव तक पहुंचाया जाएगा: देवेंद्र

परिवहन विशेष न्यूज

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ग्राम विकास गतिविधि के द्वारा दो दिवसीय पंचतत्व चिकित्सा शिविर का सफल आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ ग्राम विकास गतिविधि के प्रदेश प्रमुख देवेंद्र के प्रेरणादायी उद्बोधन से हुआ। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि ग्राम विकास गतिविधि का उद्देश्य गांव एवं नगर के समग्र विकास में योगदान देना है, जिसमें विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, स्वच्छता एवं पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण आयामों पर सतत कार्य किया जाता है।

स्वास्थ्य आयाम के अंतर्गत आयोजित इस दो दिवसीय पंचतत्व चिकित्सा शिविर में प्रथम दिवस 190 एवं द्वितीय दिवस 273 नागरिकों ने उपचार प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ लिया। शिविर में प्रगति स्वास्थ्य सहायता समूह द्वारा निर्मित प्राकृतिक औषधियों एवं उत्पादों का वितरण भी किया गया, जिससे लोगों को वैकल्पिक चिकित्सा की ओर प्रोत्साहन मिला।

शिविर के सफल आयोजन को देखते हुए भविष्य में इसे गांव एवं नगर के प्रत्येक वार्ड में आयोजित करने की योजना है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। यह शिविर प्राकृतिक चिकित्सा को जनसामान्य तक पहुंचाने और जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है। तिलक नगर चाटापारा स्थित श्री राम मंदिर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ग्राम विकास गतिविधि के आयाम आरोग्य संसाथानम एवं कामता गौशाला पंचगव्य अनुसंधान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय पंचतत्व चिकित्सा शिविर भारतीय परंपरा पर आधारित प्राकृतिक चिकित्सा के पंचतत्व – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश – के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने हेतु आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. धीरेन्द्र एवं देवेंद्र (प्रांत प्रमुख, ग्राम विकास) उपस्थित रहे। साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से गणेश (विभाग प्रचारक), प्रमोद काले अध्यक्ष श्री राम मंदिर समिति,बबलू वेव सचिव श्री राम मंदिर समिति नगर संघ चालक प्रदीप शर्मा भाजपा पश्चिम मंडल के निर्वतमान अध्यक्ष अजित सिंह भोगल तथा ग्राम विकास से हिमांचल, नगर प्रमुख अमित चतुर्वेदी, अंजू राजपूत, अंकित ,अजय साहू , यश मनहर, राजेश तिवारी, अजय सूर्यवंशी एवं सुनील विशेष रूप से उपस्थित रहे। श्री राम मंदिर समिति की ओर से अध्यक्ष प्रमोद काले, सचिव बबलू बाटवे शिविर की व्यवस्था में विशेष भूमिका निभाई। चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा रोगियों को प्राकृतिक तरीकों से जीवनशैली में सुधार एवं स्वास्थ्य रक्षा के उपायों से भी अवगत कराया गया। यह जानकारी रोहित भांगे ग्राम विकास विभाग संयोजक ने दी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**